राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

अप्रैल - 2026

मूल्य ₹ 50/-

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

www.swarnimumbai.com

नीता अंबानी KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड से सम्मानित

HDFC Bank संकट

'सन्नाटे में बदलती मशीनें...

Wholesale Furniture Market

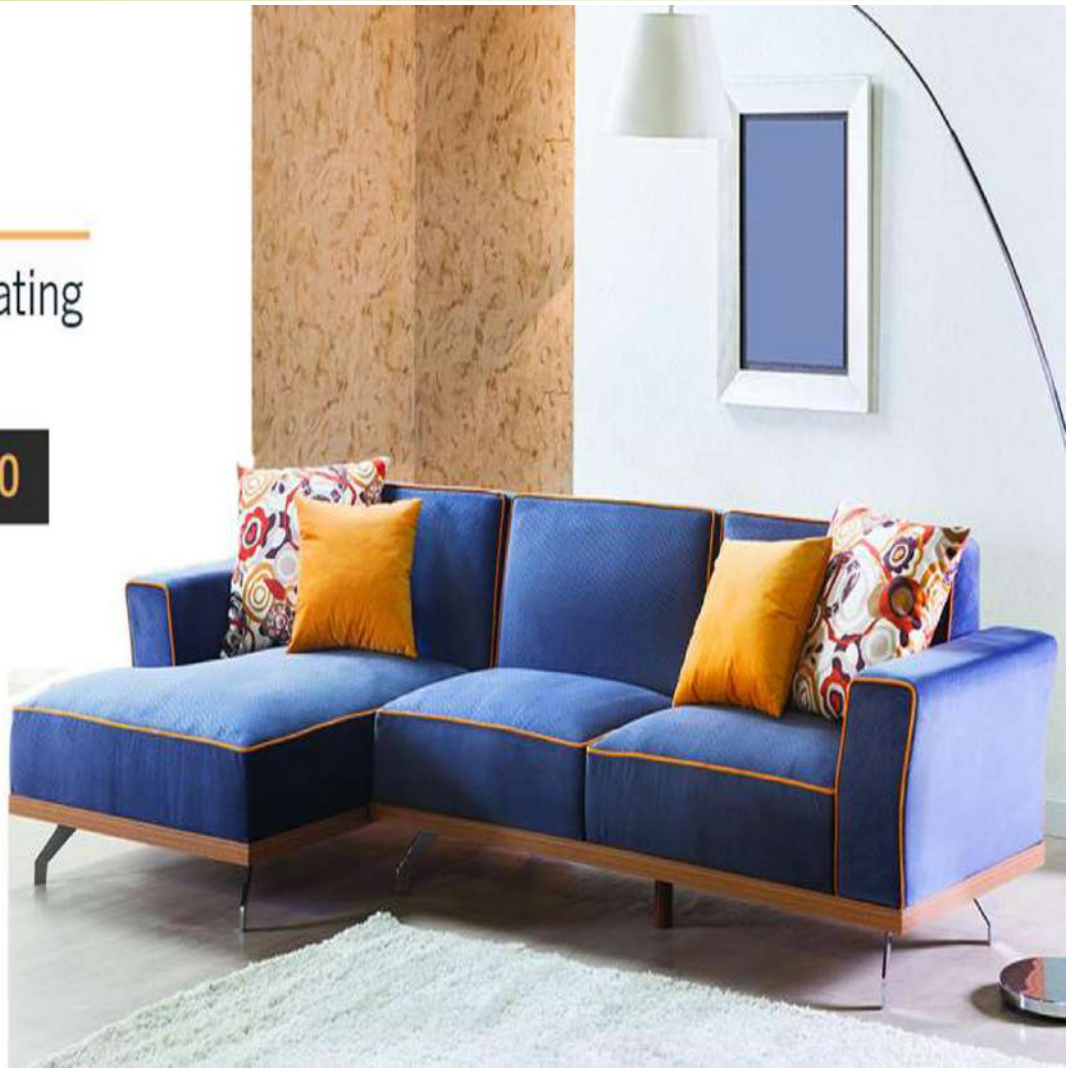

Ulhasnagar,Mumbai

सस्ते फर्नीचर के 5 थोक बाजार

फर्नीचर खरीदिए आधे दामों पर

एक से बढ़कर एक एंटीक आइटम

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO.: MAHHIN-2014/55532

•वर्ष : 11 •अंक: 01 •मुंबई •अप्रैल 2026

मुद्रक-प्रकाशक,संपादक
नटराजन बालसुब्रमणियम

कार्यकारी संपादक
मंगला नटराजन अय्यर

उप संपादक
भाग्यश्री कानडे,
संतोषी मिश्रा, एन.निधी

ब्यूरो चीफ
ओडिशाः अशोक पाण्डेय
उत्तर प्रदेशः विजय दूबे
पटनाः राय यशेन्द्र प्रसाद

टंकन व पृष्ठ सज्जा
ज्योति पुजारी, सोमेश

मार्केटिंग मैनेजमेंट
राजेश अय्यर, शैफाली

संपादकीय कार्यालय

Add: Tirupati Ashish CHS., A-102, A-1 Wing , Near Shahad Station , Kalyan (W), Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in
Website: www.swarnimumbai.com

मालिक, मुद्रक, प्रकाशक व संपादक : बी. नटराजन द्वारा तिरुपति को.ऑप, हॉसिंग सोसायटी, ए-१ विंग १०२, नियर शहाड स्टेशन, कल्याण (वेस्ट)-४२११०३, जिलाः ठाणे, महाराष्ट्र से प्रकाशित व *महेश प्रिन्टर्स, बिरला कॉलेज, कल्याण से मुद्रित।*
RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

सभी विवादों का निपटारा मुंबई न्यायालय होगा।

इस अंक में...

मुंबई को मिली नई बीएमसी कमिश्नर	05
'सन्नाटे में बदलती मशीनें	06
'स्क्रीन का जाल':	14
करियर की अंतरिक्ष में उड़ान स्पेस साइंस	16
पकवान	18
HDFC Bank संकट की ओर बढ़ रहा है?	20
राशिफल	24
पहाड़ों की पुकारः Shimla mes Kullu-Manali का सफर	26
सिनेमा	29
बुद्धपुरुष प्रोफेसर अच्युत सामंत की आध्यात्मिक दिनचर्या है .	32
नीता एम. अंबानी KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड २०२५ से सम्मानित	34
मानवाधिकारों की पूरी व्यवस्था की मूल भावना	36
डॉ. अच्युत सामंत ने आज 'आर्ट ऑफ गिविंग २०२६' की थीम	37
गर्मियों के दिन	38
अधूरी कहानी	42
साहित्य	50
अक्षय तृतीयाः भारत की असली परंपराओं का पर्व	52
सपनों के कुछ रोचक तथ्य	54
बथुआ की खेती	56

सुविचार :

**जो रातों को कोशिशों में गंवा देते हैं,
वहीं सपनों की चिंगारी को और हवा देते हैं।**

'दोहरा धर्म संकट'

मध्य पूर्व में चल रहा संघर्ष अब केवल सैन्य टकराव नहीं रह गया है; यह वैश्विक शक्ति संतुलन, नेतृत्व की विश्वसनीयता और कूटनीतिक परिपक्वता की परीक्षा बन चुका है। एक ओर Donald Trump की अप्रत्याशित और जल्दबाज़ी भरी घोषणाएं हैं, तो दूसरी ओर Iran का आक्रामक आत्मविश्वास– और इनके बीच फंसा है पूरा विश्व, जिसमें भारत के हित भी सीधे प्रभावित हो रहे हैं। ट्रम्प द्वारा आधी रात को सोशल मीडिया के माध्यम से पांच दिन के युद्धविराम की घोषणा करना किसी सुविचारित कूटनीति का परिणाम नहीं लगता, बल्कि यह एकतरफा और जल्दबाज़ी में लिया गया फैसला प्रतीत होता है। युद्धविराम जैसी संवेदनशील प्रक्रिया में दोनों पक्षों की सहमति, स्पष्ट शर्तें और औपचारिक संवाद आवश्यक होते हैं। यहां इनमें से कोई भी तत्व स्पष्ट नहीं था। विश्व राजनीति में यह असंतुलन खतरनाक होता है, क्योंकि इसके परिणाम केवल एक देश तक सीमित नहीं रहते। अमेरिका लंबे समय से खुद को वैश्विक व्यवस्था का नियंत्रक मानता आया है। लेकिन इस संघर्ष में वह न तो निर्णायक जीत हासिल कर पाया और न ही प्रभावी शांति स्थापित कर सका। Benjamin Netanyahu के साथ मिलकर ईरान पर दबाव बनाने की रणनीति उलटी पड़ती दिख रही है।

ईरान का न झुकना और अमेरिकी पहल का सार्वजनिक रूप से खंडन करना इस बात का संकेत है कि अब 'महाशक्ति' की छवि पहले जैसी अटूट नहीं रही। यह केवल सैन्य असफलता नहीं, बल्कि कूटनीतिक कमजोरी का भी प्रमाण है। ईरान ने इस संघर्ष में अपनी क्षमता का प्रदर्शन किया है। उसने यह स्पष्ट कर दिया कि उसे दबाना आसान नहीं है। इजरायल पर हमले और उसकी सुरक्षा प्रणाली को चुनौती देना एक बड़ा संदेश है। ईरान यदि इस सफलता को स्थायी रणनीति मानकर आगे बढ़ता है– विशेषकर खाड़ी के अमेरिकी सहयोगी देशों पर लगातार हमले करके–तो वह खुद को एक बड़े क्षेत्रीय संघर्ष में फंसा सकता है।

सवाल सीधा है क्या वह एक साथ कई देशों के विरोध को झेल पाएगा? क्या उसकी अर्थव्यवस्था और आंतरिक स्थिति इतना दबाव सहन कर सकती है? युद्ध केवल जीतने का नहीं, सही समय पर रुकने का भी खेल है। और अभी वही मोड़ है जहां ईरान को निर्णय लेना होगा। इस पूरे घटनाक्रम का सीधा असर वैश्विक अर्थव्यवस्था पर पड़ा है। जैसे ही युद्धविराम की घोषणा हुई, बाजारों में तेजी आई और कच्चे तेल की कीमतों में गिरावट देखने को मिली। लेकिन ईरान के इनकार के बाद यह उत्साह तुरंत खत्म हो गया।

भारत जैसे देश, जो तेल आयात पर निर्भर हैं, उनके लिए यह अस्थिरता खतरनाक है। तेल महंगा होगा तो महंगाई बढ़ेगी, महंगाई बढ़ेगी तो विकास दर प्रभावित होगी और इसका असर आम नागरिक की जेब पर सीधे पड़ेगा।यानी यह युद्ध भले दूर हो, लेकिन उसका असर भारत के घर-घर तक पहुंचता है।

इस पूरे घटनाक्रम का सबसे असहज पहलू है Pakistan की अचानक सक्रियता। प्रारंभिक संकेत यह बताते हैं कि पाकिस्तान के सैन्य नेतृत्व–विशेषकर फील्ड मार्शल असीम मुनीर ने अमेरिका और ईरान के बीच मध्यस्थता की भूमिका निभाने की कोशिश की है। इसमें Jared Kushner जैसे नामों का जुड़ना इस समीकरण को और जटिल बनाता है। यह केवल कूटनीतिक पहल नहीं है–यह प्रभाव क्षेत्र की लड़ाई है। पाकिस्तान लंबे समय से अमेरिका के साथ अपने संबंधों को मजबूत करने की कोशिश करता रहा है। अगर वह इस संकट में मध्यस्थ बनकर उभरता है, तो यह भारत के लिए रणनीतिक झटका होगा।

सीधी बात–जो देश भारत के खिलाफ मोर्चा खोलता रहा है, वही अगर वैश्विक मंच पर 'शांति दूत' बनकर उभरता है, तो यह भारत की कूटनीतिक स्थिति पर सवाल खड़े करता है। यहीं भारत के सामने असली दुविधा खड़ी होती है। लेकिन अमेरिका की नीतियां खुद अस्थिर और स्वार्थ आधारित दिख रही हैं। तो क्या भारत ईरान के करीब जाए? लेकिन ईरान की आक्रामक रणनीति और क्षेत्रीय तनाव इसे जोखिम भरा बनाते हैं। या फिर संतुलन बनाए रखे? यह सबसे व्यावहारिक विकल्प है, लेकिन इसके लिए बेहद सटीक और सक्रिय कूटनीति की जरूरत होगी। यह पूरा घटनाक्रम एक कड़वा सच सामने लाता है– दुनिया अब एकध्रुवीय नहीं रही। अमेरिका की शक्ति सीमित हो रही है, क्षेत्रीय ताकतें उभर रही हैं, और अवसरवादी देश (जैसे पाकिस्तान) इस बदलाव का फायदा उठा रहे हैं। भारत के लिए यह समय केवल प्रतिक्रिया देने का नहीं, बल्कि पहल करने का है। ऊर्जा सुरक्षा को मजबूत करना। कूटनीतिक संबंधों को संतुलित करना और वैश्विक मंच पर अपनी स्थिति को स्पष्ट रूप से स्थापित करना। वरना 'दोहरा धर्म संकट' केवल एक विश्लेषणात्मक शब्द नहीं रहेगा–यह भारत की वास्तविक चुनौती बन जाएगा। ■ -मंगला नटराजन

मुंबई को मिली नई बीएमसी कमिश्नरः Ashwini Bhide के हाथों में शहर की कमान

मुंबई के प्रशासनिक इतिहास में एक बड़ा बदलाव देखने को मिला है। १९९५ बैच की अनुभवी IAS अधिकारी 'मेट्रो वुमन' के नाम से प्रसिद्ध अश्विनी भिड़े जी अपनी दूरदर्शिता, सख्त प्रशासनिक शैली और प्रभावी कार्यशैली के लिए जानी जाती हैं। उनके नेतृत्व में मुंबई के इंफ्रास्ट्रक्चर, स्वच्छता, स्वास्थ्य और शहरी विकास को नई रफ्तार मिलने की उम्मीद है। मुंबई को एक मजबूत, ईमानदार और दूरदर्शी नेतृत्व मिलने जा रहा है।

मुंबई महानगरपालिका को आखिरकार नया नेतृत्व मिल गया है। वरिष्ठ आईएएस अधिकारी Ashwini Bhide को बीएमसी का नया कमिश्नर नियुक्त किया गया है। उनके इस पदभार ग्रहण के साथ ही मुंबई को अपने इतिहास की पहली महिला आयुक्त भी मिल गई है, जो प्रशासनिक दृष्टि से एक बड़ा बदलाव माना जा रहा है। वर्तमान आयुक्त भूषण गगरानी के सेवानिवृत्त होने के बाद यह जिम्मेदारी भिड़े को सौंपी गई है। लंबे प्रशासनिक अनुभव और बड़े इंफ्रास्ट्रक्चर प्रोजेक्ट्स को सफलतापूर्वक संभालने की क्षमता के कारण उन्हें इस पद के लिए सबसे मजबूत दावेदार माना जा रहा था।

Ashwini Bhide को 'मेट्रो वुमन' के नाम से भी जाना जाता है। उन्होंने मुंबई मेट्रो परियोजना, कोस्टल रोड और कई बड़े शहरी विकास कार्यों में अहम भूमिका निभाई है। प्रशासनिक सख्ती और निर्णय लेने की क्षमता उनकी पहचान रही है, जो अब सीधे मुंबई के नागरिक प्रशासन में देखने को मिलेगी।

भिड़े फिलहाल मुख्यमंत्री कार्यालय में अतिरिक्त मुख्य सचिव के पद पर कार्यरत थीं और राज्य सरकार के शीर्ष नेतृत्व का उन पर भरोसा साफ तौर पर दिखता है। उनके चयन को लेकर मुख्यमंत्री Devendra Fadnavis और उपमुख्यमंत्री Eknath Shinde के बीच सहमति बनने के बाद नियुक्ति का रास्ता साफ हुआ। हालांकि, यह नियुक्ति सिर्फ उपलब्धि नहीं बल्कि बड़ी जिम्मेदारी भी लेकर आई है। पिछले कुछ समय से बीएमसी पर भ्रष्टाचार, अव्यवस्था और परियोजनाओं में देरी जैसे आरोप लगते रहे हैं। ऐसे में Ashwini Bhide के सामने सबसे बड़ी चुनौती प्रशासन की छवि सुधारने और शहर के बुनियादी ढांचे को मजबूत करने की होगी।

मुंबई जैसे महानगर में, जहां हर दिन लाखों लोग स्थानीय सेवाओं पर निर्भर रहते हैं, वहां बीएमसी कमिश्नर की भूमिका बेहद अहम होती है। आने वाले समय में यह देखना महत्वपूर्ण होगा कि नई कमिश्नर शहर की ट्रैफिक, सफाई, जलनिकासी और इंफ्रास्ट्रक्चर से जुड़ी पुरानी समस्याओं को किस तरह संभालती हैं।

'सन्नाटे में बदलती मशीनें

गैस संकट और उद्योगों की डगमगाती नींव

सुबह के वक्त Dombivli के MIDC क्षेत्र में आमतौर पर मशीनों की लगातार आवाज़, ट्रकों की आवाजाही और मजदूरों की भागदौड़ दिखाई देती है। लेकिन आज हालात अलग हैं। कई फैक्ट्रियों के गेट पर सन्नाटा पसरा है। कुछ यूनिट्स में मशीनें चालू तो हैं, लेकिन आधी क्षमता पर। अंदर काम कर रहे कर्मचारी भी जानते हैं–यह काम 'चल रहा है', लेकिन 'टिकेगा' या नहीं, इसकी कोई गारंटी नहीं। यह सिर्फ एक औद्योगिक व्यवधान नहीं, बल्कि एक धीरे-धीरे पनपता संकट है, जिसने पूरे इलाके की आर्थिक धड़कन को कमजोर कर दिया है।

डोंबिवलीः छोटे उद्योगों का बड़ा नेटवर्क

Dombivli और इसके आसपास का MIDC क्षेत्र महाराष्ट्र के महत्वपूर्ण औद्योगिक क्लस्टर्स में गिना जाता है। यहाँ मुख्य रूप से काम करते हैंः

केमिकल और डाई यूनिट्स

टेक्सटाइल प्रोसेसिंग उद्योग

छोटे मैन्युफैक्चरिंग प्लांट

पैकेजिंग और सप्लाई यूनिट्स

अनुमान है कि हजारों छोटे और मध्यम उद्योग (MSME) यहाँ सक्रिय हैं, जो सीधे और अप्रत्यक्ष रूप से लाखों लोगों की आजीविका से जुड़े हैं। इन उद्योगों की रीढ़ है Piped Natural Gas (PNG)—एक अपेक्षाकृत सस्ता और स्वच्छ ईंधन। लेकिन हाल के समय मेंः

गैस सप्लाई में कटौती

प्रेशर में गिरावट

अनियमित उपलब्धता ने पूरे सिस्टम को हिला दिया है।

उद्योग संगठनों के अनुसार उत्पादन में ३०-५०% तक गिरावट, कई यूनिट्स में आंशिक बंदी और ऑर्डर समय पर पूरे नहीं हो पा रहे। असली समस्या सिर्फ 'कमी' नहीं है, बल्कि अनिश्चितता है–क्योंकि उद्योग योजना नहीं बना पा रहे।

'हर दिन जोखिम'ः फैक्ट्री मालिकों की दुविधा

एक मध्यम स्तर के उद्योगपति बताते हैं 'हम रोज़ यह सोचकर मशीन चालू करते हैं कि पता नहीं गैस कब तक मिलेगी। अगर बीच में सप्लाई बंद हुई तो पूरा बैच खराब हो सकता है।'

दूसरे मालिक का कहना है 'क्लाइंट को डेडलाइन चाहिए, बहाना नहीं। अगर हम फेल हुए, तो वो दूसरी जगह शिफ्ट हो जाएंगे–और फिर वापस नहीं आएंगे।' यह स्थिति लघु उद्योगों के अस्तित्व पर सीधा हमला है। जहाँ मालिक नुकसान गिन रहा है, वहीं मजदूर अपनी रोज़ी बचाने की लड़ाई लड़ रहा है।

काम के घंटे घटाए गए
ओवरटाइम बंद
दैनिक मजदूरी में गिरावट
कुछ जगहों पर अस्थायी छंटनी

एक श्रमिक कहता है 'पहले १०-१२ घंटे काम मिलता था, अब ६-७ घंटे में ही छुट्टी कर देते हैं। घर का खर्च चलाना मुश्किल हो रहा है।' यह संकट 'इंडस्ट्री' से निकलकर सीधे घरों की रसोई तक पहुँच चुका है। सरकार और गैस कंपनियों की ओर से सुझाव दिया जा रहा है कि उद्योग वैकल्पिक ईंधन अपनाएं।

लेकिन वास्तविकता में मशीनें PNG के लिए बनी हैं LPG/डीज़ल पर शिफ्ट करने में भारी लागत होती है। उत्पादन लागत में २०-४०% तक वृद्धि है। छोटे उद्योगों के लिए यह विकल्प नहीं, बल्कि नया संकट है। पिछले कुछ वर्षों में उद्योगों को स्वच्छ ईंधन (PNG) अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया गया था। अब अगर वे डीज़ल या कोयले की ओर जाते हैं तो

प्रदूषण बढ़ेगा
पर्यावरण नियमों का उल्लंघन होगा
जुर्माना और कानूनी जोखिम बढ़ेगा

यानी नीति एक दिशा में धकेल रही थी, लेकिन संकट दूसरी दिशा में मजबूर कर रहा है।

विशेषज्ञों के अनुसार, इसके पीछे कई स्तरों के कारण हैं:

१. अंतरराष्ट्रीय दबाव
वैश्विक गैस बाजार में अस्थिरता
आयात लागत में वृद्धि
२. घरेलू प्राथमिकताएं
घरेलू उपभोक्ताओं को प्राथमिकता
उद्योगों के हिस्से में कटौती
३. वितरण की सीमाएं

पाइपलाइन नेटवर्क और प्रेशर मैनेजमेंट की समस्याएं। यह एक multi-layer crisis है–सिर्फ एक कारण नहीं। जब एक फैक्ट्री धीमी होती है, तो असर सिर्फ उसी तक सीमित नहीं रहता।

प्रभावित क्षेत्र:
ट्रांसपोर्ट कंपनियां

१. भारत में अब लगभग ३२ करोड़ से ज्यादा LPG कनेक्शन हैं।

२. घरेलू उपयोग (रसोई) लगभग ८५-९०% है।

३. बाकी होटल, रेस्टोरेंट, इंडस्ट्री में जाता है।

४. अंतरराष्ट्रीय राजनीति का असर

५. किन देशों से आती है गैस

६. आत्मनिर्भरता की राह

Dombivli के MIDC इलाके में काम करने वाले ३२ वर्षीय रमेश पिछले ८ साल से एक केमिकल फैक्ट्री में ऑपरेटर हैं। पहले जहां उन्हें रोज़ १०-१२ घंटे काम मिलता था, अब गैस संकट के चलते काम घटकर ६-७ घंटे रह गया है। ओवरटाइम बंद हो चुका है, जिससे उनकी मासिक आय में करीब ३०% की कमी आई है। रमेश बताते हैं, 'घर में बूढ़े माता-पिता और दो बच्चे हैं। खर्च वही है, लेकिन कमाई घट गई है। अगर फैक्ट्री बंद हुई, तो नई नौकरी मिलना आसान नहीं होगा।' उनकी चिंता सिर्फ आज की नहीं, आने वाले कल की भी है।

कच्चा माल सप्लायर
छोटे दुकानदार
खान-पान सेवाएं

डोंबिवली का यह संकट एक बड़े सवाल की ओर इशारा करता है, क्या भारत के MSME सेक्टर की ऊर्जा निर्भरता बहुत कमजोर है? अगर एक ईंधन की कमी से पूरा क्लस्टर हिल जाता है, तो यह सिस्टम की नाजुकता दिखाता है।

क्या होना चाहिए?

तात्कालिक कदमः
PNG सप्लाई की स्थिरता सुनिश्चित करना
इंडस्ट्री के लिए अस्थायी राहत पैकेज
मध्यम अवधिः
वैकल्पिक ईंधन के लिए सब्सिडी
तकनीकी सहायता
दीर्घकालिक समाधानः
ऊर्जा स्रोतों का diversification
स्थानीय उत्पादन बढ़ाना
MSME सेक्टर के लिए मजबूत नीति ढांचा

Dombivli का मौजूदा संकट सिर्फ एक शहर की समस्या नहीं है–यह भारत के औद्योगिक ढांचे की कमजोरियों का आईना है। अगर समय रहते कदम नहीं उठाए गए, तो हजारों छोटे उद्योग बंद हो सकते हैं। लाखों लोगों की आजीविका खतरे में पड़ सकती है। और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गहरा झटका लग सकता है। यह सिर्फ गैस की कमी नहीं–यह एक चेतावनी है कि विकास की रफ्तार कितनी नाजुक नींव पर टिकी है।

Piped Natural Gas (PNG) क्या है?

PNG (Piped Natural Gas) एक ऐसी प्राकृतिक गैस है जो सीधे पाइपलाइन के जरिए घरों, दुकानों और फैक्ट्रियों तक पहुँचाई जाती है। इसमें मुख्य गैस होती हैः मीथेन (Methane) यह LPG (सिलेंडर गैस) की तरह ही इस्तेमाल होती है, लेकिन सिलेंडर की जरूरत नहीं होती

PNG कैसे काम करता है?

गैस जमीन के अंदर (oil & gas fields) से निकाली जाती है या विदेशों से आयात की जाती है। गैस को साफ करके बड़े पाइपलाइन नेटवर्क में भेजा जाता है–इसे City Gas Distribution (CGD) सिस्टम कहते हैं। शहर के अंदर छोटी पाइपलाइनों का जाल होता है, जो घरों, होटलों और फैक्ट्रियों तक गैस पहुँचाता है।

हर कनेक्शन पर एक मीटर होता है (usage मापने के लिए)। एक रेगुलेटर होता है (प्रेशर कंट्रोल करने के लिए)। यूज़र सीधे चूल्हे, बॉयलर या मशीन में गैस इस्तेमाल करता है–सिलेंडर बदलने की झंझट नहीं। PNG system continuous flow पर चलता है। मतलब गैस बंद तो मशीन बंद। प्रेशर कम तो उत्पादन कम। इसलिए Dombivli जैसे industrial areas में PNG की थोड़ी सी समस्या भी पूरे उद्योग को हिला देती है।

भारत की LPG पर निर्भरता

भारत अपनी कुल LPG खपत का लगभग ५५%-६०% आयात करता है। यानी आधे से ज्यादा गैस विदेशों से आती है और बाकी देश में बनती है। घरेलू उत्पादन करीब ४०%-४५% ही है।

भारत सबसे ज्यादा LPG इन देशों से खरीदता हैः

Saudi Arabia
United Arab Emirates
Qatar
Kuwait
United States

इनमें से ज्यादातर सप्लाई मिडिल ईस्ट से आती है। इसलिए जब वहां युद्ध या तनाव होता है, तो भारत में गैस की कीमत और सप्लाई दोनों प्रभावित हो जाते हैं। भारत दुनिया के सबसे बड़े LPG उपभोक्ताओं में से एक है। सालाना खपत लगभग २९-३० मिलियन टन के आसपास है।

घरेलू उपयोग (रसोई) लगभग ८५-९०% है।

बाकी होटल, रेस्टोरेंट, इंडस्ट्री में जाता है।

सरकारी योजना Pradhan Mantri Ujjwala Yojana के बाद देश में LPG कनेक्शन बहुत तेजी से बढ़े। भारत में अब लगभग ३२ करोड़ से ज्यादा LPG कनेक्शन हैं। इससे खपत तेजी से बढ़ी और आयात पर निर्भरता भी बढ़ गई। कागज पर समस्या छोटी लगती है, लेकिन असल में यह रणनीतिक जोखिम हैः

भारत की आधी LPG विदेशों पर निर्भर

सप्लाई का बड़ा हिस्सा मिडिल ईस्ट से

वहां युद्ध या समुद्री रास्ता बंद हुआ तो तुरंत संकट सबसे बड़ा जोखिम Strait of Hormuz है। दुनिया की बड़ी मात्रा में तेल-गैस इसी रास्ते से गुजरती है। अगर यह रास्ता बंद हुआ तो LPG की कीमतें तेजी से बढ़ सकती हैं।

भारत अपनी अधिकांश एलपीजी खाड़ी देशों से खरीदता है। प्रमुख आपूर्तिकर्ताओं में ऍल्di Arabia, Qatar, United Arab Emirates और Kuwait शामिल हैं। इसके अलावा हाल के वर्षों में United States से भी एलपीजी आयात बढ़ा है। इन देशों से गैस समुद्री जहाजों के जरिए भारत के बंदरगाहों तक पहुंचाई जाती है। इसके बाद इसे बॉटलिंग प्लांटों में भरकर गैस एजेंसियों के माध्यम से उपभोक्ताओं तक पहुंचाया जाता है। एलपीजी की आयात निर्भरता का सबसे बड़ा खतरा यह है कि अंतरराष्ट्रीय राजनीति और युद्ध जैसी परिस्थितियों का असर सीधे भारत पर पड़ता है। जब भी मध्य-पूर्व में तनाव बढ़ता है या तेल की कीमतों में उछाल आता है, तो भारत में गैस की कीमतों और आपूर्ति दोनों पर दबाव पड़ने लगता है। विशेष रूप से खाड़ी क्षेत्र से आने वाली गैस का एक बड़ा हिस्सा Strait of Hormuz नामक समुद्री मार्ग से होकर गुजरता है। यह दुनिया के सबसे महत्वपूर्ण ऊर्जा मार्गों में से एक है। यदि किसी कारण से यह रास्ता बाधित होता है, तो वैश्विक तेल और गैस आपूर्ति पर बड़ा असर पड़ सकता है।

यही कारण है कि जब भी पश्चिम एशिया में तनाव बढ़ता है, तो भारत जैसे आयातक देशों में

तुरंत चिंता बढ़ जाती है। कीमतों में वृद्धि, सप्लाई में देरी और कभी-कभी बाजार में कृत्रिम कमी जैसी समस्याएं सामने आने लगती हैं।

एलपीजी की मांग आने वाले वर्षों में और बढ़ने की संभावना है। जनसंख्या वृद्धि, शहरीकरण और जीवन स्तर में सुधार के कारण लोग अधिक से अधिक स्वच्छ ईंधन का उपयोग करना चाहते हैं। इससे आयात पर निर्भरता और बढ़ सकती है। सरकार इस चुनौती से निपटने के लिए कई कदम उठा रही है। देश में नई रिफाइनरियां स्थापित की जा रही हैं, गैस भंडारण क्षमता बढ़ाई जा रही है और आयात के स्रोतों को विविध बनाने की कोशिश की जा रही है। इसके अलावा बायोगैस और अन्य वैकल्पिक ईंधनों को भी प्रोत्साहन दिया जा रहा है।

ऊर्जा के क्षेत्र में आत्मनिर्भर बनना किसी भी देश के लिए रणनीतिक रूप से बेहद महत्वपूर्ण होता है। भारत के लिए भी यह एक बड़ी चुनौती है। एलपीजी के मामले में पूरी आत्मनिर्भरता हासिल करना आसान नहीं है, लेकिन उत्पादन बढ़ाकर और वैकल्पिक ऊर्जा स्रोतों को विकसित करके आयात निर्भरता को कम किया जा सकता है। आखिरकार यह समझना जरूरी है कि भारत की रसोई केवल घरेलू अर्थव्यवस्था से ही नहीं, बल्कि वैश्विक ऊर्जा राजनीति से भी जुड़ी हुई है। जब तक देश अपनी ऊर्जा जरूरतों के लिए बड़े पैमाने पर आयात पर निर्भर रहेगा, तब तक अंतरराष्ट्रीय परिस्थितियों का असर भारतीय रसोई तक पहुंचता रहेगा।

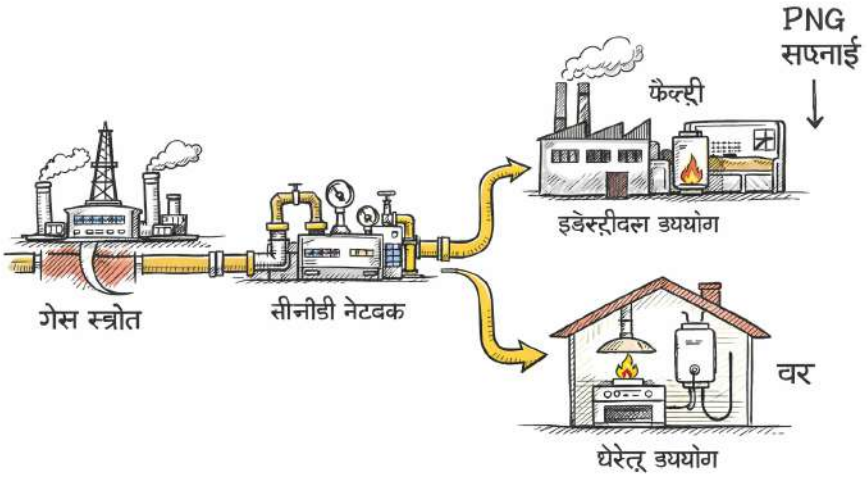

डोंबिवली इंडस्ट्रियल बेल्ट पर युद्ध का असरः PNG सप्लाई संकट से फैक्ट्रियों में हड़कंप

Dombivli का मौजूदा संकट सिर्फ एक शहर की समस्या नहीं है– यह भारत के औद्योगिक ढांचे की कमजोरियों का आईना है। अगर समय रहते कदम नहीं उठाए गए, तो हजारों छोटे उद्योग बंद हो सकते हैं। लाखों लोगों की आजीविका खतरे में पड़ सकती है। और स्थानीय अर्थव्यवस्था को गहरा झटका लग सकता है। यह सिर्फ गैस की कमी नहीं–यह एक चेतावनी है कि विकास की रफ्तार कितनी नाजुक नींव पर टिकी है।

मध्य-पूर्व में बढ़ते तनाव और वैश्विक ऊर्जा आपूर्ति पर पड़े असर का प्रभाव अब स्थानीय स्तर पर भी साफ दिखाई देने लगा है। डोंबिवली के औद्योगिक क्षेत्र में काम कर रही कई फैक्ट्रियां PNG (पाइप्ड नेचुरल गैस) की संभावित कमी को लेकर चिंता में हैं।

इंडस्ट्री को PNG सप्लाई करने वाली कंपनियों ने चेतावनी दी है कि स्टॉक सीमित है और आपूर्ति बाधित हो सकती है। ऐसे में इंडस्ट्रियल यूनिट्स को वैकल्पिक ईंधन–जैसे LPG, डीज़ल या फर्नेस ऑयल–पर विचार करने के लिए कहा गया है। इस निर्देश ने स्थानीय मैन्युफैक्चरर्स के बीच अनिश्चितता और तनाव का माहौल बना दिया है। औद्योगिक क्षेत्र से जुड़े लोगों का कहना है कि अचानक फ्यूल बदलना न तो आसान है और न ही सस्ता। मशीनों की सेटिंग, उत्पादन प्रक्रिया और लागत सब कुछ प्रभावित होता है। वर्कर ऑर्गनाइजेशन के पूर्व अध्यक्ष डॉ. देवेन सोनी ने बताया कि 'इंडस्ट्रियलिस्ट को दूसरे फ्यूल पर जाने के निर्देश से पूरे सेक्टर में असमंजस की स्थिति है। अगर समय रहते स्थिर सप्लाई नहीं हुई, तो उत्पादन ठप हो सकता है और मजदूरों की नौकरियां भी खतरे में पड़ सकती हैं।'

कल्याण-डोंबिवली क्षेत्र में हजारों छोटे और मध्यम उद्योग (MSME) PNG पर निर्भर हैं। यह गैस न सिर्फ किफायती है बल्कि पर्यावरण के लिहाज से भी बेहतर मानी जाती है। ऐसे में इसके विकल्प अपनाने से उत्पादन लागत बढ़ने के साथ-साथ प्रदूषण में भी इजाफा हो सकता है। विशेषज्ञों का मानना है कि अगर अंतरराष्ट्रीय हालात जल्द सामान्य नहीं हुए, तो इसका असर सिर्फ बड़े उद्योगों तक सीमित नहीं रहेगा, बल्कि छोटे उद्योग और आम उपभोक्ता भी इसकी मार झेलेंगे।

ऊर्जा आपूर्ति पर निर्भर उद्योगों के लिए यह स्थिति एक चेतावनी है। अगर स्थानीय स्तर पर वैकल्पिक व्यवस्था और सरकारी हस्तक्षेप जल्द नहीं हुआ, तो डोंबिवली का औद्योगिक ढांचा गंभीर संकट में आ सकता है।

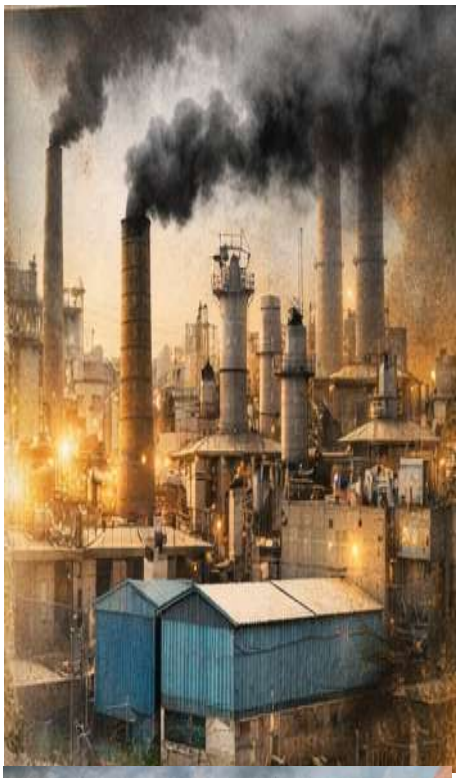

PNG vs LPG (छोटा comparison)

पहलू	PNG	LPG
सप्लाई	पाइपलाइन से continuous	सिलेंडर से बार-बार refill
सुरक्षा	ज्यादा (हल्की गैस, ऊपर उड़ जाती है)	heavy (लीक होने पर नीचे जमा)
लागत	आमतौर पर सस्ती	महंगी पड़ सकती है

भारत की रसोई विदेशी गैस पर कितनी निर्भर?

भारत में रसोई गैस यानी एलपीजी आज हर घर की जरूरत बन चुकी है। शहरों से लेकर गांवों तक अधिकांश परिवार खाना बनाने के लिए इसी ईंधन पर निर्भर हैं। पिछले एक दशक में सरकार की योजनाओं और जीवन-शैली में बदलाव के कारण एलपीजी का उपयोग तेजी से बढ़ा है। लेकिन इस बढ़ती खपत के साथ एक बड़ा सवाल भी खड़ा हो गया है–क्या भारत अपनी जरूरत की गैस खुद पैदा कर पाता है, या इसके लिए विदेशों पर निर्भर है? सच्चाई यह है कि भारत आज भी एलपीजी के मामले में पूरी तरह आत्मनिर्भर नहीं है। देश की कुल खपत का एक बड़ा हिस्सा विदेशों से आयात करना पड़ता है। यही कारण है कि अंतरराष्ट्रीय बाजार में होने वाली हलचल का असर सीधे भारत की रसोई तक पहुंच जाता है। कुछ दशक पहले तक भारत के ग्रामीण इलाकों में लकड़ी, कोयला और गोबर के उपले ही खाना पकाने के मुख्य साधन थे। लेकिन धीरे-धीरे परिस्थितियां बदलीं। साफ ईंधन के उपयोग को बढ़ावा देने और महिलाओं को धुएं से होने वाली बीमारियों से बचाने के लिए सरकार ने कई योजनाएं शुरू कीं। इनमें सबसे महत्वपूर्ण योजना रही Pradhan Mantri Ujjwala Yojana, जिसके तहत गरीब परिवारों को मुफ्त गैस कनेक्शन दिए गए। इस योजना के बाद देश में एलपीजी कनेक्शनों की संख्या तेजी से बढ़ी और आज भारत में ३० करोड़ से अधिक घरेलू गैस कनेक्शन हो चुके हैं। इसका सीधा असर खपत पर पड़ा। भारत अब दुनिया के सबसे बड़े एलपीजी उपभोक्ता देशों में शामिल हो गया है। भारत LPG के मामले में अभी भी आधा-निर्भर आयात अर्थव्यवस्था है। इसलिए अंतरराष्ट्रीय राजनीति का सीधा असर भारतीय रसोई तक पहुँच जाता है। हालांकि खपत तेजी से बढ़ी, लेकिन उत्पादन उसी अनुपात में नहीं बढ़ पाया। देश में एलपीजी मुख्य रूप से कच्चे तेल की रिफाइनिंग और प्राकृतिक गैस के प्रसंस्करण से प्राप्त होती है। लेकिन भारत के पास तेल और गैस के सीमित भंडार हैं।

यही वजह है कि भारत को अपनी कुल एलपीजी जरूरत का लगभग ५५ से ६० प्रतिशत हिस्सा विदेशों से आयात करना पड़ता है। यानी देश की आधी से ज्यादा रसोई विदेशी गैस पर चल रही है। घरेलू उत्पादन कुल मांग का केवल लगभग ४० से ४५ प्रतिशत ही पूरा कर पाता है।

JOB VACANCY

ADVERTISING & SALES EXECUTIVE

PRINT & DIGITAL MAGAZINE

- **Location:** Mumbal (Field + Office)
- **Employment Type:** Full-time / Part-time

ROLE & RESPONSIBILITIES

- Identify and approach potential advertisers across sectors (corpotates, SMEs, Government, Institutions)
- Present advertising options and packages for the magazine (print & digital)
- Maintain strongrelationships with existing and new clients to ensure repeat business

SALARY & BENEFITS

- Base salary- high commission structure
- Potential earnings ₹40,000–50.000/mont for achieving targets
- Performance-based incentives and bonuses

HOW TO APPLY:

Send a **swarnim mmbai@yahoo.in**
To: **9082391833**

SWARNIM
MUMBAI

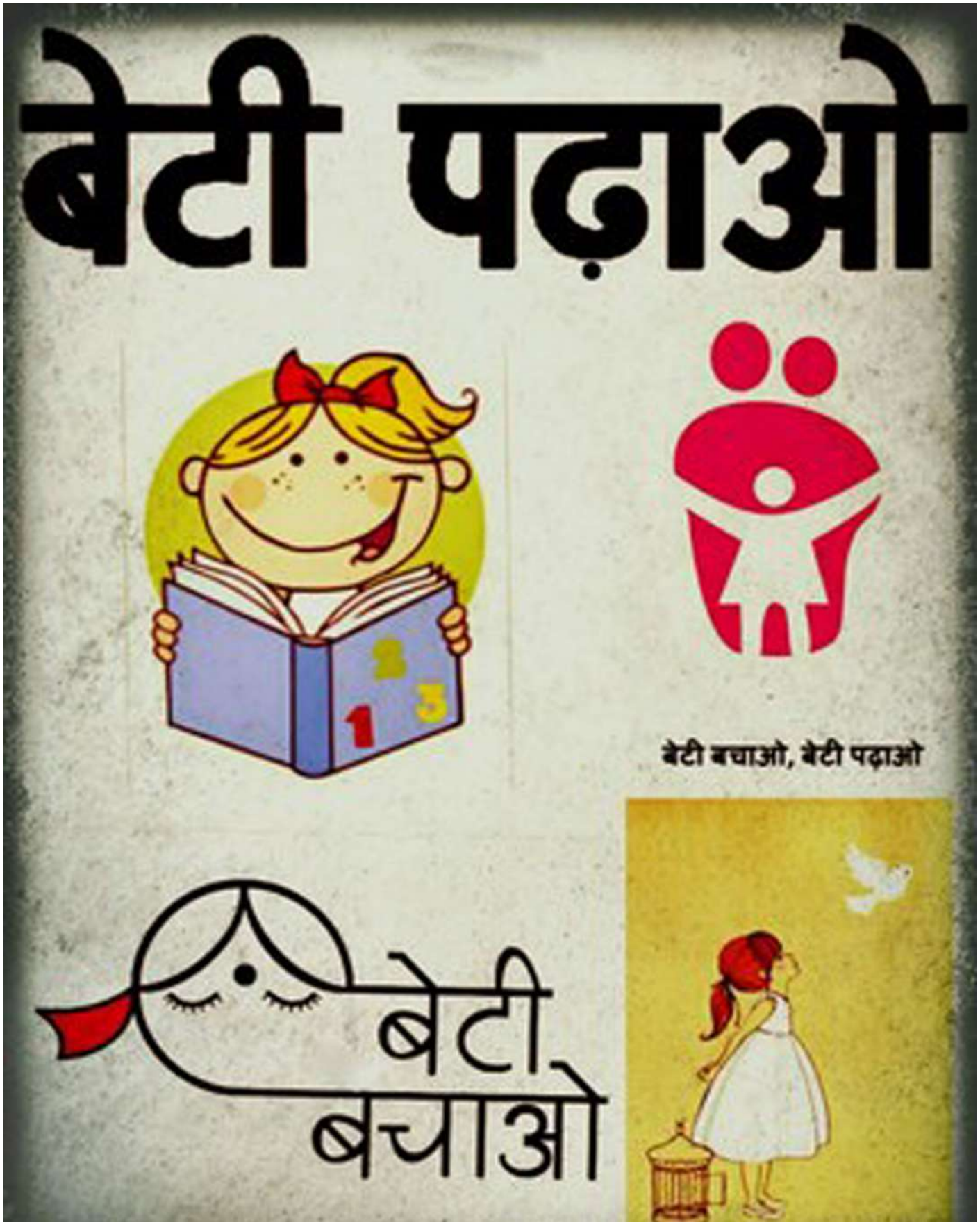
बेटी पढ़ाओ
बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ
बेटी
बचाओ

'स्क्रीन का जाल':

टीनएज, सोशल मीडिया और नियंत्रण की नई लड़ाई

आज का टीनएज एक ऐसे दौर में जी रहा है, जहां उसकी दुनिया दो हिस्सों में बंटी हुई है–एक असली और एक डिजिटल। फर्क सिर्फ इतना है कि अब असली दुनिया छोटी होती जा रही है और डिजिटल दुनिया उसका स्थान ले रही है। ऐसे में कर्नाटक सरकार की हालिया ड्राफ्ट पॉलिसी–जिसमें बच्चों के लिए स्क्रीन टाइम सीमित करने और शाम ७ बजे के बाद इंटरनेट बंद करने की सिफारिश की गई है–एक बड़े सामाजिक संकट की ओर इशारा करती है।

लेकिन सवाल यह है कि क्या यह समस्या सिर्फ नियम बनाकर हल हो जाएगी? या इसकी जड़ें कहीं ज्यादा गहरी हैं?

सरकारी आंकड़ों के मुताबिक, लगभग २५% किशोर इंटरनेट की लत से जूझ रहे हैं। यह सिर्फ एक आंकड़ा नहीं, बल्कि हर चौथे घर की हकीकत है।

इसके असर अब साफ दिखने लगे हैं–

नींद की कमी
चिंता और तनाव
पढ़ाई में गिरावट
सामाजिक दूरी

यानी यह सिर्फ 'मोबाइल ज्यादा चलाना' नहीं, बल्कि मानसिक और सामाजिक संतुलन का बिगड़ना है।

अगर आप सोचते हैं कि यह सिर्फ बच्चों की गलती है, तो आप आधी सच्चाई देख रहे हैं। असल में यह तीन ताकतों का खेल है–दिमाग, समाज और टेक्नोलॉजी।

१. दिमाग की केमिस्ट्रीः तुरंत सुख की चाह

टीनएज का दिमाग ऐसा बना होता है कि वह तुरंत मिलने वाले आनंद (instant reward) की ओर तेजी से आकर्षित होता है।

सोशल मीडिया हर swipe पर वही देता है–एक नया वीडियो, एक नया मज़ाक, एक नई प्रतिक्रिया।

यानी प्लेटफॉर्म सीधे दिमाग की उस कमजोरी को पकड़ते हैं, जहां कंट्रोल कम और लालच ज्यादा होता है।

२. पहचान की तलाश

इस उम्र में सबसे बड़ा सवाल होता है–'मैं कौन हूं?'

और इसका जवाब अब किताबों या परिवार से नहीं, बल्कि लाइक्स और फॉलोअर्स से मिलने लगा है।

☐ कितने लोग देख रहे हैं
☐ कौन प्रतिक्रिया दे रहा है

धीरे-धीरे आत्मसम्मान (self-worth) भी

१. डिजिटल लतः एक बढ़ता हुआ संकट
२. क्यों खिंचता है टीनएज सोशल मीडिया की ओर?
३. कर्नाटक की पॉलिसीः समाधान या शुरुआत?

उसी पर टिक जाता है।

३. FOMO और सामाजिक दबाव

अगर आप ऑनलाइन नहीं हैं, तो आप 'पीछे छूट' रहे हैं–यह डर टीनएज को लगातार स्क्रीन से जोड़े रखता है।

दोस्तों की दुनिया, ट्रेंड्स और बातचीत अब डिजिटल हो चुकी है।

यानी सोशल मीडिया अब मनोरंजन नहीं, सामाजिक अस्तित्व बन चुका है।

४. टेक्नोलॉजी की चाल

Instagram, YouTube और TikTok जैसे प्लेटफॉर्म ऐसे ही नहीं चल रहे।

इनके एल्गोरिदम इस तरह बनाए गए हैं किः

आप ज्यादा से ज्यादा समय बिताएं
आपको वही दिखे जो आपको बांधे रखे
स्क्रॉल कभी खत्म न हो

यह एक सोची-समझी रणनीति है, जो उपयोगकर्ता को आदत से लत तक ले जाती है।

कर्नाटक सरकार की सिफारिशें साफ हैं–

मनोरंजन के लिए १ घंटा स्क्रीन टाइम

शाम ७ बजे के बाद इंटरनेट बंद

सोने से पहले स्क्रीन से दूरी

कागज़ पर यह आदर्श लगता है, लेकिन जमीनी सच्चाई अलग है।

☐ भारत में पढ़ाई का समय अक्सर शाम को होता है

☐ ऑनलाइन क्लास और असाइनमेंट इंटरनेट पर निर्भर हैं

ऐसे में पूरी तरह इंटरनेट बंद करना व्यवहारिक नहीं दिखता।

असल समस्या टेक्नोलॉजी नहीं, संतुलन की कमी यहां एक कड़वी सच्चाई है–

समस्या सिर्फ मोबाइल नहीं है, बल्कि उसका अनियंत्रित इस्तेमाल है।

अगर बच्चे की असली दुनिया–खेल, बातचीत, गतिविधियां–कमजोर होगी,

तो वह डिजिटल दुनिया की ओर भागेगा ही।

समाधानः पाबंदी से ज्यादा समझ जरूरी

सिर्फ नियम बनाने से यह समस्या हल नहीं होगी। इसके लिए तीन स्तर पर काम करना होगा–

१. परिवार की भूमिका

घर में 'नो-फोन टाइम' तय हो

माता-पिता खुद उदाहरण बनें

२. स्कूल की जिम्मेदारी

डिजिटल हेल्थ को पढ़ाई का हिस्सा बनाया जाए

बच्चों को समझाया जाए कि सोशल मीडिया कैसे काम करता है

३. टेक्नोलॉजी पर नियंत्रण

addictive फीचर्स पर सख्ती

बच्चों के लिए सुरक्षित डिजिटल वातावरण

लड़ाई घर के अंदर है।

कर्नाटक की यह पॉलिसी एक चेतावनी है कि डिजिटल लत अब व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक समस्या बन चुकी है।

लेकिन सच्चाई यह है– यह लड़ाई सरकार नहीं, घर और समाज जीतेंगे या हारेंगे। अगर हम सिर्फ मोबाइल छीनने को समाधान मानेंगे,

तो समस्या और गहरी होगी। और अगर हम संतुलन सिखाएंगे, तो यही टेक्नोलॉजी भविष्य की ताकत बन सकती है।

करियर की अंतरिक्ष में उड़ान स्पेस साइंस

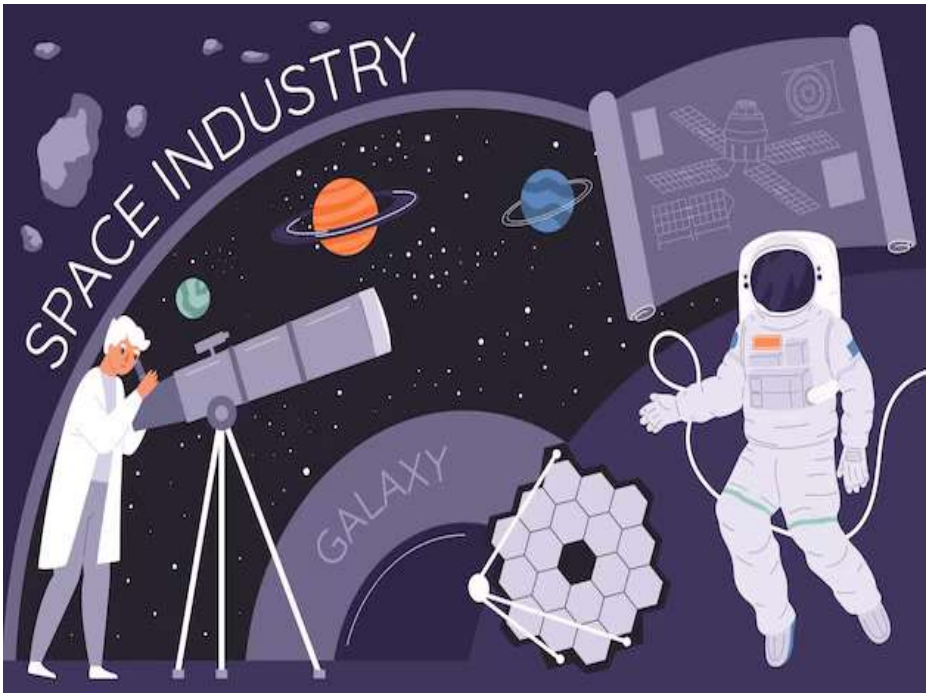

स्पेस इंडस्ट्री में प्रोफेशनल्स को काफी आकर्षक सेलरी मिलती है, बशर्ते उन्हें काम की अच्छी समझ हो। आमतौर पर शुरूआती दौर में एक स्पेस साइंटिस्ट को २५-३० हजार रुपए प्रतिमाह मिलते हैं, जबकि दो-तीन साल के अनुभव के बाद यही राशि ४०-४५ हजार रुपए तक पहुंच जाती है। रिसर्च के क्षेत्र में आज कई ऐसे साइंटिस्ट हैं, जो सालाना लाखों के पैकेज पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। विदेशों में भी प्रोफेशनल्स को आकर्षक पैकेज दिया जाता है।

स्पेस साइंस एक चुनौतीपूर्ण क्षेत्र है। इसकी पढ़ाई रोजगार के बेहतरीन मौके उपलब्ध कराती है। क्या है स्पेस साइंस और क्या है इसमें करियर की संभावनाएं, सेटेलाइट व नई तकनीक के जरिए मौसम अथवा ग्रह-उपग्रह के बारे में सटीक सूचना दे पाना अब पहले से ज्यादा आसान हो गया है। वायुमंडल अथवा पृथ्वी की हलचलों का पता लगाना भी ज्यादा आसान हो गया है। यह सब संभव हो पाया है स्पेस साइंस से। साल दर साल इसमें नई चीजें शामिल होती जा रही हैं। इसमें एडवांस कम्प्यूटर एवं सुपर कम्प्यूटर से डाटा एकत्र करने का कार्य किया जाता है। डाटा न मिलने की स्थिति में आकलन के जरिए किसी निष्कर्ष तक पहुंचने की कोशिश की जाती है। इस काम से जुड़े प्रोफेशनल स्पेस साइंटिस्ट कहलाते हैं। समय के साथ यह एक सशक्त करियर का रूप धारण कर चुका है। इस क्षेत्र में युवाओं की दिलचस्पी तेजी से बढ़ रही है। इंडस्ट्री के जानकारों का भी मानना है कि आने वाले पांच सालों में इसमें नौकरियों की संख्या बढ़ेगी।

क्या है स्पेस साइंस

यह साइंस की एक ऐसी शाखा है, जिसके अंतर्गत हम ब्र'ांड का अध्ययन करते हैं। इसमें ग्रह, तारों आदि के बारे में जानकारी होती है। छात्रों को कोर्स के दौरान यह भी जानकारी दी जाती है कि किस तरह से पृथ्वी और सौर मंडल की उत्पत्ति हुई तथा उसके विस्तार की प्रक्रिया किस तरह की है। इसमें प्रयुक्त होने वाले उपकरणों के बारे में भी छात्रों को थ्योरी और प्रैक्टिकल के रूप में जानकारी दी जाती है।

बारहवीं के बाद प्रवेश

इसमें जो भी कोर्स हैं, वे बैचलर से लेकर पीएचडी लेवल तक हैं। बैचलर कोर्स में प्रवेश तभी मिल पाएगा, जब छात्र ने बारहवीं की परीक्षा साइंस विषय के साथ (फिजिक्स, केमिस्ट्री व मैथमेटिक्स) पास की हो। इसमें ऑल इंडिया लेवल पर एक प्रवेश परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इसमें सफल होने के बाद ही बैचलर प्रोग्राम में दाखिला मिलता है, जबकि मास्टर प्रोग्राम में बीटेक व बीएससी के बाद दाखिला मिलता है। यदि छात्र किसी क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल करना चाहते हैं तो उन्हें पीएचडी की डिग्री लेनी अनिवार्य है।

स्पेस साइंस की शाखाएं

एस्ट्रोनॉमी- यह स्पेस साइंस की एक ऐसी महत्वपूर्ण शाखा है, जिसके अंतर्गत सूर्य, चंद्रमा, तारे, ग्रह आदि का अध्ययन किया जाता है। आमतौर पर इसमें एस्ट्रोनॉमी आकलन पर फोकस होता है। एस्ट्रोफिजिक्स- यह एक ऐसी शाखा है, जिसके अंतर्गत तारों के जन्म-मृत्यु व

जीवन, ग्रह, आकाश गंगा एवं सौर मंडल के अन्य तत्वों का अध्ययन भौतिकी व रसायन शास्त्र के नियमों के आधार पर किया जाता है।

कॉस्मॉलजी- कॉस्मॉलजी के अंतर्गत ब्र'ांड का बड़े पैमाने पर अध्ययन किया जाता है। इसमें ब्र'ांड की उत्पत्ति से लेकर उसके विस्तार तक की पूरी प्रक्रिया को शामिल किया जाता है। प्लैनेटरी साइंस- यह शाखा ग्रह, सेटेलाइट और सौर मंडल के अन्य ग्रहों को समझने की क्षमता में विस्तार करती है। इसमें छात्र वायुमंडल, ग्रहों की सतह से आंतरिक भाग तक का अध्ययन करते हैं। स्टेलर साइंस- सौर मंडल में सभी तारे एक विशेष पैरामीटर के तहत व्यवस्थित होते हैं। ये बहुत कुछ सूर्य की स्थिति पर निर्भर रहते हैं। स्टेलर साइंस में इसका अध्ययन किया जाता है।

रोजगार के भरपूर अवसर

सफलतापूर्वक कोर्स करने के बाद इस क्षेत्र में रोजगार के लिए भटकना नहीं पड़ता। प्रोफेशनल्स को नेशनल एयरोनॉटिक्स एंड स्पेस एडमिनिस्ट्रेशन (नासा), इंडियन स्पेस रिसर्च आगेर्नाइजेशन (इसरो), डिफेंस रिसर्च एंड डेवलपमेंट आगेर्नाइजेशन (डीआडीओ), हिन्दुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड (एचएएल), नेशनल एयरोनॉटिकल लेबोरेटरी (एनएएल) आदि में प्रमुख पदों पर काम मिलता है। इसके अलावा स्पेसक्राफ्ट सॉफ्टवेयर डेवलपिंग फर्म, रिसर्च एंड डेवलपमेंट सेंटर, स्पेसक्राफ्ट मैन्युफैक्चरिंग फर्म, स्पेस टूरिज्म में भी रोजगार की प्रचुरता है। प्रमुख विश्वविद्यालय अथवा कॉलेज, स्पेस साइंटिस्ट को अपने यहां रख रहे हैं। स्पेस रिसर्च एजेंसी, साइंस म्यूजियम एवं प्लैनेटेरियम में भी हर साल बड़े पैमाने पर

नियुक्तियां होती हैं। इसरो व नासा बड़े रोजगार प्रदाता के रूप में जाने जाते हैं।

इन पदों पर मिलता है काम
स्पेस साइंटिस्ट
एस्ट्रोनॉमर
एस्ट्रोफिजिसिस्ट
मैटीरियोलॉजिस्ट
क्वालिटी एश्योरेंस स्पेशलिस्ट
रडार टेक्निशियन
रोबोटिक टेक्निशियन
सेटेलाइट टेक्निशियन
जियोलॉजिस्ट
आकर्षक सेलरी पैकेज

स्पेस इंडस्ट्री में प्रोफेशनल्स को काफी आकर्षक सेलरी मिलती है, बशर्ते उन्हें काम की अच्छी समझ हो। आमतौर पर शुरूआती दौर में एक स्पेस साइंटिस्ट को २५-३० हजार रुपए प्रतिमाह मिलते हैं, जबकि दो-तीन साल के अनुभव के बाद यही राशि ४०-४५ हजार रुपए तक पहुंच जाती है। रिसर्च के क्षेत्र में आज कई ऐसे साइंटिस्ट हैं, जो सालाना लाखों के पैकेज पर अपनी सेवाएं दे रहे हैं। विदेशों में भी प्रोफेशनल्स को आकर्षक पैकेज दिया जाता है।

फायदे एवं नुकसान

उच्च पदों पर मिलती है जॉब
प्रोजेक्ट कंप्लीट होने पर सुकून
काम के घंटे अधिक
कई बार काम का नतीजा नहीं

एजुकेशन लोन

छात्रों को प्रमुख राष्ट्रीयकृत, प्राइवेट अथवा विदेशी बैंकों द्वारा एजुकेशन लोन प्रदान किया जाता है। छात्र को जिस संस्थान में एडमिशन कराना होता है, वहां से जारी एडमिशन लेटर, हॉस्टल खर्च, ट्यूशन फीस एवं अन्य खर्ची को ब्योरा बैंक को देना होता है। अंतिम निणय बैंक को करना होता है।

कुछ प्रमुख कोर्स

बीटेक इन स्पेस साइंस (चार वर्षीय)
बीएससी इन स्पेस साइंस (तीन वर्षीय)
एमटेक इन स्पेस साइंस (दो वर्षीय)
एमएससी इन स्पेस साइंस (दो वर्षीय)
एमई इन स्पेस साइंस (दो वर्षीय)
पीएचडी इन स्पेस साइंस (तीन वर्षीय)
साइंस पर कमांड जरूरी

एक अच्छा प्रोफेशनल बनने के लिए साइंस विषयों खासकर फिजिक्स का बेहतर ज्ञान होना जरूरी है। कम्प्यूटर की अच्छी जानकारी व इंजीनियरिंग के बेसिक्स पर मजबूत पकड़ उन्हें काफी आगे तक ले जाती है। कम्युनिकेशन व राइटिंग स्किल्स, प्रेजेंटेशन तैयार करने का कौशल हर मोड़ पर सम्यक सहायता दिलाता है। इसके अलावा प्रोफेशनल्स को परिश्रमी, धर्यवान व जिज्ञासु प्रवृत्ति का बनना होगा, क्योंकि इससे संबंधित अधिकांश कार्य रिसर्च अथवा आकलन पर आधारित होते हैं।

आम पन्ना

सामग्रीः
३-४ कच्चे आम
८-१० पुदीना पत्ते
४-५ चम्मच चीनी या गुड़
१ छोटा चम्मच काला नमक
१ छोटा चम्मच भुना जीरा पाउडर
३-४ गिलास पानी

विधिः कच्चे आम को उबालकर या भूनकर ठंडा कर लें। छिलका हटाकर गूदा निकालें। गूदे को पुदीना और चीनी/गुड़ के साथ पीस लें। इसमें काला नमक और जीरा पाउडर मिलाएं। अब पानी डालकर घोल तैयार करें और ठंडा करके परोसें।

ठंडाई

सामग्रीः
१०-१२ बादाम
५-६ काजू
१ बड़ा चम्मच सौंफ
४-५ काली मिर्च
२ चम्मच गुलाब की पंखुड़ी
२ गिलास दूध
चीनी स्वादानुसार

विधिः बादाम, काजू, सौंफ और काली मिर्च को २-३ घंटे भिगो दें। फिर इन्हें गुलाब की पंखुड़ी के साथ पीस लें। इस पेस्ट को ठंडे दूध में मिलाएं, चीनी डालकर अच्छे से घोलें और ठंडा करके परोसें।

तरबूज मिंट जूस

सामग्रीः
२ कप तरबूज के टुकड़े
८-१० पुदीना पत्ते
१ चम्मच नींबू रस
चुटकीभर काला नमक

विधिः तरबूज, पुदीना और नींबू रस को मिक्सर में पीस लें। काला नमक मिलाकर छान लें (यदि चाहें)। ठंडा करके तुरंत परोसें।

छाछ (Buttermilk)

सामग्रीः
१ कप दही
२ कप पानी
१ छोटा चम्मच काला नमक
½ छोटा चम्मच भुना जीरा
थोड़े से करी पत्ते

विधिः दही और पानी को अच्छी तरह फेंट लें। इसमें काला नमक और जीरा मिलाएं। ऊपर से बारीक कटे करी पत्ते डालें और ठंडा करके परोसें।

फालूदा

सामग्रीः
१ लीटर दूध
४-५ चम्मच चीनी
½ छोटा चम्मच इलायची पाउडर
कटे हुए मेवे
विधिः दूध को धीमी आंच पर गाढ़ा होने तक उबालें। इसमें चीनी और इलायची डालें। ठंडा होने पर मेवे मिलाएं और मोल्ड में डालकर ६-८ घंटे के लिए फ्रीजर में जमाएं।

कुल्फी

सामग्री :
पके हुए आम- ०३ (गूदा निकाल कर मसल लें),
दूध - ०१ लीटर (फुल क्रीम),
शक्कर - ५० ग्राम,
पिस्ता - २५ ग्राम (कुटा हुआ),
इलाचयी पाउडर - १/२ छोटा चम्मच,
केसर - ०१ चुटकी।
विधिः सबसे पहले पैन में दूध निकालें और उसे तब तक उबालें। जब दूध १/३ रह जाए, उसमें शक्कर और पिस्ता मिला दें और चलाते हुए पकायें। जब ये दोनों चीजें दूध में घुल जायें, तब दूध में आम का गूदा, इचायची पाउडर और केसर डाल कर अच्छी तरह से मिला दें। इसके बाद आंच को बंद कर दें और दूध को ठंडा होने दें। दूध ठंडा होने पर उसे आइसक्रीम के साचों में भर कर फ्रीजर में ६-७ घंटे के लिये जमा दें। ६-७ घंटे के बाद मैंगो कुल्फी निकालें और उसका आनंद लें।

मैंगो कुल्फी

सामग्रीः
२ कप ठंडा दूध
२ चम्मच रूह अफ़ज़ा
½ कप उबली सेवइयां
१ चम्मच सब्जा (भीगे हुए)
१ स्कूप आइसक्रीम
विधिः गिलास में सबसे पहले सेवइयां डालें। फिर सब्जा और ठंडा दूध डालें। ऊपर से रूह अफ़ज़ा डालें और आइसक्रीम रखकर तुरंत परोसें।

HDFC Bank संकट की ओर बढ़ रहा है? - सच, संकेत और सच्चाई...

१. संकट की शुरुआतः एक इस्तीफा, कई सवाल
२. अंदरूनी खींचतानः पावर गेम या गंभीर समस्या?
३. बाजार की प्रतिक्रियाः भरोसे में दरार
४. नियामक संस्थाओं की भूमिकाः सबसे बड़ा भरोसा
५. क्या सिर्फ यही कहानी है? छिपे हुए संकेत
६. हालात बिगड़ते हैं तो क्या संकेत दिखेंगे?
७. ग्राहकों के लिए सच्चाईः डर और लापरवाही, दोनों गलत

भारत के सबसे बड़े निजी बैंकों में से एक HDFC Bank पिछले कुछ समय से अचानक सुर्खियों में है। वजह कोई छोटी नहीं है–बैंक के शीर्ष स्तर पर उठे विवाद, चेयरमैन का अचानक इस्तीफा, शेयर बाज़ार में गिरावट और नियामक संस्थाओं की बढ़ती नजर। इन सबने आम ग्राहकों के मन में एक बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है–क्या बैंक सुरक्षित है या किसी बड़े संकट की ओर बढ़ रहा है? सच यह है कि स्थिति उतनी सरल नहीं है जितनी अफवाहों में दिखाई जा रही है, लेकिन उतनी खतरनाक भी नहीं है कि बैंक के बंद होने की बात सच मानी जाए। पूरे घटनाक्रम की शुरुआत तब हुई जब बैंक के चेयरमैन ने अचानक पद छोड़ दिया। इस्तीफे के पीछे 'मूल्यों और कार्यशैली में मतभेद' जैसी बात सामने आई। आम भाषा में समझें तो यह केवल पद छोड़ना नहीं, बल्कि बैंक के अंदर चल रही किसी गहरी असहमति का संकेत था। जब किसी बड़े बैंक का शीर्ष नेतृत्व इस तरह अलग होता है, तो यह केवल एक व्यक्ति का जाना नहीं होता–यह उस संस्था की आंतरिक स्थिरता पर सवाल खड़ा करता है।

रिपोर्ट्स बताती हैं कि बैंक के शीर्ष अधिकारियों के बीच मतभेद बढ़ चुके थे। इसे 'पावर स्ट्रगल' कहा जा रहा है। ऐसे हालात में निर्णय लेने की प्रक्रिया प्रभावित होती है और संस्था की दिशा अस्थिर हो जाती है। हालांकि, यह भी समझना जरूरी है कि हर पावर स्ट्रगल बैंक को डुबोता नहीं। लेकिन यह एक चेतावनी जरूर होता है कि सब कुछ सामान्य नहीं है। जैसे ही ये खबरें सामने आईं, शेयर बाजार ने तुरंत प्रतिक्रिया दी। कुछ ही दिनों में बैंक के शेयरों में तेज गिरावट देखी गई। निवेशकों ने जोखिम भांपते हुए अपने पैसे निकालने शुरू कर दिए। बाजार का यह व्यवहार अक्सर आने वाले जोखिम का शुरुआती संकेत होता है। लेकिन केवल शेयर गिरने से बैंक डूबता नहीं–यह सिर्फ भरोसे में आई दरार को दिखाता है। इस पूरे मामले में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका Reserve Bank of India की है। रिज़र्व बैंक ने स्पष्ट किया है कि बैंक की वित्तीय स्थिति मजबूत है और ग्राहकों के पैसे सुरक्षित हैं। यह बयान इसलिए अहम है क्योंकि भारत में किसी भी बैंक की स्थिरता का अंतिम आकलन RBI ही करता है। यदि कोई वास्तविक खतरा होता, तो सबसे पहले वही कार्रवाई करता।

हालांकि स्थिति नियंत्रण में दिखाई देती है,

लेकिन कुछ संकेत ऐसे हैं जिन्हें नजरअंदाज करना समझदारी नहीं होगी।

पहला, लगातार शीर्ष अधिकारियों का इस्तीफा या बदलाव यह बताता है कि नेतृत्व में स्थिरता नहीं है।

दूसरा, नियामक संस्थाओं द्वारा मामले की जांच यह दर्शाती है कि कुछ पहलुओं की गहराई से समीक्षा की जा रही है।

तीसरा, पिछले कुछ वर्षों में तकनीकी और अनुपालन से जुड़ी समस्याएं भी सामने आ चुकी हैं, जो एक पैटर्न की ओर इशारा करती हैं।

ये सभी बातें मिलकर यह बताती हैं कि बैंक पूरी तरह संकट में तो नहीं है, लेकिन पूरी तरह निश्चिंत भी नहीं कहा जा सकता। बैंकिंग संकट अचानक नहीं आता, वह धीरे-धीरे बनता है। अगर स्थिति वास्तव में खराब होने लगे, तो कुछ स्पष्ट संकेत सामने आने लगते हैं। सबसे पहले नकदी से जुड़ी दिक्कतें दिखाई देती हैं– ATM में पैसा न मिलना या निकासी पर सीमाएं लगना। इसके बाद बैंक अधिक ब्याज दर देकर जमा आकर्षित करने की कोशिश करता है, जो उसकी वित्तीय जरूरत को दर्शाता है। इसके साथ ही, अगर लगातार बड़े अधिकारी इस्तीफा देने लगें या नियामक संस्थाएं सख्त कदम उठाएं, तो यह स्थिति गंभीर होने का संकेत होता है। आम ग्राहकों के लिए सबसे बड़ी चुनौती यही है कि वे अफवाह और वास्तविकता में फर्क कर सकें। घबराकर तुरंत पैसा निकाल लेना उतनी ही बड़ी गलती है, जितनी यह मान लेना कि 'इतना बड़ा बैंक है, कुछ नहीं होगा।' सही रास्ता इन दोनों के बीच है–सावधानी।

सबसे समझदारी भरा कदम यह है कि अपनी पूरी बचत एक ही बैंक में न रखें। अलग-अलग बैंकों में पैसा बांटना एक सरल लेकिन प्रभावी सुरक्षा उपाय है। साथ ही, बैंक से जुड़ी खबरों और RBI के निर्देशों पर नजर बनाए रखना जरूरी है। यह जानकारी ही आपको सही समय पर सही निर्णय लेने में मदद करेगी। यह कहना सही होगा कि HDFC Bank किसी तत्काल संकट में नहीं है। बैंक मजबूत है, और ग्राहकों का पैसा सुरक्षित है। लेकिन जो घटनाएं सामने आई हैं, वे यह जरूर दिखाती हैं कि बैंक अब 'पूरी तरह बेफिक्र रहने वाली स्थिति' में नहीं है। यह संकट नहीं, बल्कि एक चेतावनी है–और समझदार वही है जो चेतावनी को समय रहते समझ ले।

Yes Bank: एक चमकते सितारे से संकट तक की कहानी

एक समय था जब Yes Bank को भारत के सबसे तेज़ी से बढ़ते निजी बैंकों में गिना जाता था। आक्रामक विस्तार, बड़े कॉरपोरेट ग्राहकों से जुड़ाव और ऊँची ग्रोथ ने इसे निवेशकों का पसंदीदा बना दिया था। लेकिन यही तेज़ रफ्तार आगे चलकर उसकी सबसे बड़ी कमजोरी बन गई। बैंक की स्थापना Rana Kapoor ने की थी। उनकी रणनीति साफ थी–दूसरे बैंकों से ज्यादा तेजी से लोन देना और बड़े कॉरपोरेट्स को फाइनेंस करना। कुछ समय तक यह मॉडल काम करता रहा तेजी से लोन बुक बढ़ी, मुनाफा बढ़ता दिखा, शेयर कीमत आसमान छूने लगी। बाहर से सब कुछ 'सुपर सक्सेस' लग रहा था। बैंक ने ऐसे कॉरपोरेट्स को भारी लोन दिए जो पहले से ही वित्तीय दबाव में थे

IL&FS

DHFL

Jet Airways ये कंपनियाँ बाद में खुद संकट में आ गईं। जो पैसा बैंक ने दिया था, वो वापस आना बंद हो गया।यहीं से असली गिरावट शुरू हुई। NPA छुपाने का खेल। सबसे बड़ा घोटाला यहीं हुआ। बैंक ने अपने bad loans (NPA) सही तरीके से नहीं दिखाए। वास्तविक स्थिति छुपाई गई। लेकिन Reserve Bank of India ने जब जांच की, तो असली आंकड़े सामने आए। बैंक जितना मजबूत दिख रहा था, उतना था नहीं। मार्च २०२० में स्थिति पूरी तरह बिगड़ गई। लोग पैसा निकालने लगे। liquidity खत्म होने लगी।

₹५०,००० withdrawal limit लगा दी

बैंक का control अपने हाथ में लिया। यह सबसे बड़ा red signal होता है – जब RBI खुद control ले ले। बैंक को पूरी तरह डूबने से बचाने के लिए State Bank of India ने निवेश किया। दूसरे बैंकों ने भी support दिया। बैंक बच गया, लेकिन reputation खत्म हो गया। बैंक कभी अचानक नहीं गिरता। वह धीरे-धीरे अंदर से कमजोर होता है।

देश के सबसे बड़े निजी बैंकों में शामिल HDFC Bank इन दिनों एक अप्रत्याशित घटनाक्रम के कारण चर्चा में है। बैंक के गैर-कार्यकारी चेयरमैन Atanu Chakraborty ने अचानक अपने पद से इस्तीफा दे दिया, जिसने न सिर्फ बैंक प्रबंधन बल्कि पूरे वित्तीय क्षेत्र को चौंका दिया। खास बात यह है कि उन्होंने अपने इस्तीफे की वजह 'मूल्यों और नैतिकता' से जुड़े मतभेदों को बताया, लेकिन इन मतभेदों का कोई ठोस या स्पष्ट विवरण सामने नहीं आया, जिससे मामला और ज्यादा संदेह पैदा करता है।

बैंक के भीतर इस फैसले को लेकर साफ तौर पर असहजता देखी जा रही है। प्रबंधन का कहना है कि कई बार पूछने के बावजूद चक्रवर्ती ने अपनी चिंताओं को विस्तार से नहीं बताया। इसका मतलब सीधा है–या तो मामला बहुत संवेदनशील है या फिर जानबूझकर जानकारी रोकी गई है। दोनों ही स्थिति सामान्य नहीं मानी जा सकती। इस बीच बैंक ने तेजी दिखाते हुए अनुभवी उद्योग विशेषज्ञ Keki Mistry को अंतरिम चेयरमैन नियुक्त कर दिया है, जिन्हें तीन महीने के लिए जिम्मेदारी दी गई है। मिस्त्री ने हल्के शब्दों में इसे 'रिश्तों में समस्या' बताया, लेकिन यह बयान असल सवालों से बचने जैसा ही लगता है। इस पूरे घटनाक्रम के बीच Reserve Bank of India ने स्थिति को लेकर साफ कहा है कि बैंक की वित्तीय हालत मजबूत है और संचालन में कोई दिक्कत नहीं है। आरबीआई का यह बयान बाजार को शांत करने के लिए जरूरी था, क्योंकि ऐसे मामलों में घबराहट तेजी से फैलती है। बैंक को 'प्रणालीगत रूप से महत्वपूर्ण' संस्था बताते हुए नियामक ने भरोसा जताया कि उसकी पूंजी और प्रबंधन दोनों स्थिर हैं। लेकिन यहां एक बात साफ समझनी होगी–आरबीआई का बयान वित्तीय स्थिरता पर है, नैतिक या आंतरिक गवर्नेंस विवाद पर नहीं।

शेयर बाजार ने इस खबर को तुरंत नकारात्मक संकेत के रूप में लिया और बैंक के शेयरों में गिरावट दर्ज की गई। हालांकि, यह गिरावट ज्यादा समय तक टिकेगी या नहीं, यह इस बात पर निर्भर करेगा कि आगे कोई नई जानकारी सामने आती है या नहीं। फिलहाल निवेशकों की चिंता 'क्या छिपाया जा रहा है?' इस सवाल पर ज्यादा केंद्रित है, न कि बैंक की बैलेंस शीट पर।

बैंक के सीईओ Sashidhar Jagdishan ने इस पूरे मामले पर सफाई देते हुए कहा कि बोर्ड के सदस्यों ने चक्रवर्ती को मनाने की कोशिश की, लेकिन वे नहीं माने। यह बयान एक और बात साफ करता है–फैसला भावनात्मक या व्यक्तिगत स्तर पर अचानक लिया गया नहीं था, बल्कि सोच-समझकर लिया गया कदम था। यानी अंदर का टकराव पहले से चल रहा था।

इस पूरे घटनाक्रम को साल २०२३ में हुए HDFC Ltd के बैंक में विलय के बाद के संदर्भ में भी देखा जा रहा है। इतने बड़े विलय के बाद संस्थान का आकार, दबाव और आंतरिक जटिलताएं बढ़ना स्वाभाविक है। प्रबंधन भले इसे

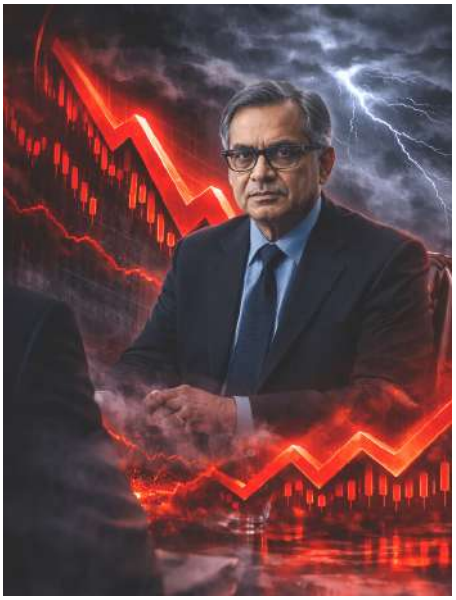

सफलता बता रहा हो, लेकिन ऐसे बड़े बदलावों के बाद अंदरूनी मतभेद उभरना कोई नई बात नहीं है।

सीधी बात यह है कि फिलहाल कोई वित्तीय संकट नहीं है–बैंक मजबूत है, सिस्टम ठीक चल रहा है। लेकिन 'नैतिक मतभेद' जैसा अस्पष्ट कारण देकर शीर्ष पद से इस्तीफा देना साधारण घटना नहीं होती। यह साफ संकेत देता है कि मामला सिर्फ व्यक्तिगत नहीं हो सकता, बल्कि गवर्नेंस या निर्णय प्रक्रिया से जुड़ा गहरा मुद्दा भी हो सकता है। अभी सच सामने नहीं आया है, लेकिन यह मान लेना कि सब कुछ पूरी तरह सामान्य है, यह भी उतना ही गलत होगा।

U-Tropicana-Beach-Resort-in-Alibaug

One of the most beautiful resorts near Mumbai for family is the U Tropicana at Alibaug

मेष (Aries)

अप्रैल आपके लिए तेज़ी, अवसर और जोखिम–तीनों का मिश्रण लेकर आएगा। महीने की शुरुआत में काम के नए मौके मिलेंगे, लेकिन यहां गलती यही होगी कि आप बिना तैयारी के कूद पड़ेंगे। करियर में अचानक बदलाव या नई जिम्मेदारी मिल सकती है, जो आपको आगे भी ले जा सकती है और दबाव में भी डाल सकती है। आर्थिक मामलों में जल्दबाज़ी से बचना जरूरी है, खासकर निवेश और उधारी से जुड़े फैसलों में। रिश्तों में आपका गुस्सा और टकराव पैदा कर सकता है, इसलिए संवाद में संयम रखना होगा। सेहत सामान्य रहेगी, लेकिन मानसिक थकान और नींद की कमी परेशान कर सकती है। महीने के अंत तक स्थिति stabilize होगी और आपको अपने फैसलों का सही-गलत स्पष्ट दिखने लगेगा।

फोकसः धैर्य और रणनीति

वृषभ (Taurus)

यह महीना धीमी लेकिन मजबूत प्रगति का है। आप जितना स्थिर रहेंगे, उतना फायदा मिलेगा। काम में consistency आपके लिए सबसे बड़ा हथियार होगा, लेकिन आपको यह समझना होगा कि shortcut यहां काम नहीं करेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, लेकिन अनावश्यक खर्चों पर कंट्रोल जरूरी है। परिवार और रिश्तों में संतुलन बना रहेगा, हालांकि आपको थोड़ा अधिक समय देना होगा। सेहत के मामले में पाचन और आलस्य से जुड़ी समस्याएं हो सकती हैं। पुराने अधूरे काम या रिश्ते फिर से सामने आ सकते हैं, जिन्हें सुलझाने का मौका मिलेगा। महीने के अंत में कोई अच्छा financial या professional अवसर मिल सकता है। फोकसः धैर्य और निरंतरता

मिथुन (Gemini)

अप्रैल आपके लिए networking और communication का महीना है। नए लोगों से संपर्क, नए ideas और नए अवसर–सब मिलेंगे, लेकिन आपकी सबसे बड़ी कमजोरी है focus की कमी। एक साथ कई काम उठाने की आदत आपको थका सकती है और परिणाम कमजोर कर सकती है। करियर में बदलाव के संकेत हैं, लेकिन clarity जरूरी है। आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, लेकिन saving कम होगी। प्रेम जीवन में गलतफहमियां आ सकती हैं, खासकर communication gap के कारण। सेहत ठीक रहेगी, लेकिन तनाव बढ़ सकता है। महीने के मध्य में लिया गया फैसला आपके अगले कुछ महीनों को प्रभावित करेगा।

फोकसः एक समय में एक काम

कर्क (Cancer)

यह महीना भावनात्मक उतार-चढ़ाव से भरा रहेगा। आप हर छोटी बात को दिल से लगाने की गलती कर सकते हैं, जिससे मानसिक तनाव बढ़ेगा। करियर में स्थिति स्थिर रहेगी, लेकिन growth धीमी होगी, जिससे frustration हो सकता है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा, लेकिन खर्चों पर नजर रखना जरूरी है। परिवार में जिम्मेदारियां बढ़ सकती हैं, और आपको अपने comfort zone से बाहर निकलना पड़ेगा। रिश्तों में clarity लाना जरूरी है, नहीं तो गलतफहमियां बढ़ेंगी। सेहत में नींद और anxiety का ध्यान रखें। महीने के अंत में स्थिति थोड़ी बेहतर होगी।

फोकसः भावनाओं पर नियंत्रण

सिंह (Leo)

अप्रैल आपके लिए नेतृत्व और पहचान का महीना है। आप जहां भी होंगे, attention आपकी तरफ आएगा–लेकिन इसके साथ जिम्मेदारी भी बढ़ेगी। करियर में promotion या नई भूमिका मिल सकती है, लेकिन ego clashes से बचना होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत रहेगी, लेकिन दिखावे में खर्च बढ़ सकता है। रिश्तों में dominance कम करना जरूरी है, नहीं तो दूरी बढ़ सकती है। सेहत में energy अच्छी रहेगी, लेकिन overwork से बचें। महीने के अंत में कोई बड़ा निर्णय लेना पड़ सकता है।

फोकसः संतुलित नेतृत्व

कन्या (Virgo)

अप्रैल आपके लिए आत्म-सुधार और सिस्टम ठीक करने का महीना है। आप अपनी गलतियों को पहचानेंगे और उन्हें सुधारने की कोशिश करेंगे, लेकिन यहां खतरा है–आप perfection के चक्कर में फंस सकते हैं। करियर में काम का दबाव रहेगा, लेकिन अगर आपने सही planning की तो यह दबाव ही आपको आगे ले जाएगा। सहकर्मियों के साथ तालमेल बनाए रखना जरूरी होगा, वरना छोटे मुद्दे बड़े बन सकते हैं। आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, लेकिन बचत पर ध्यान देना होगा क्योंकि अचानक खर्च आ सकते हैं। रिश्तों में आपका ज्यादा

analysis करना समस्या पैदा कर सकता है–हर चीज़ को dissect करना जरूरी नहीं होता। सेहत में पाचन और तनाव से जुड़ी दिक्कतें आ सकती हैं, इसलिए routine ठीक रखना जरूरी है। महीने के अंत में आपको अपने प्रयासों का असर दिखने लगेगा, खासकर करियर में।

फोकसः perfection छोड़ो, practical बनो

तुला (Libra)

यह महीना आपके लिए balance की असली परीक्षा है। आप हर चीज़ को संतुलित करने की कोशिश करेंगे, लेकिन इसी चक्कर में निर्णय लेने में देरी कर सकते हैं। करियर में नए अवसर मिलेंगे, लेकिन confusion के कारण आप उन्हें पकड़ नहीं पाएंगे–यह आपकी सबसे बड़ी कमजोरी है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, लेकिन impulsive spending पर कंट्रोल जरूरी है, खासकर luxury या दिखावे की चीज़ों में। रिश्तों में harmony बनाए रखने के लिए आप खुद को दबा सकते हैं, जो बाद में frustration देगा। सेहत में मानसिक तनाव और अनिद्रा की समस्या हो सकती है। महीने के मध्य में कोई ऐसा फैसला लेना पड़ेगा, जिसे टालना अब संभव नहीं होगा। अंत तक स्थिति साफ हो जाएगी, लेकिन तब तक समय निकल चुका होगा–इसलिए जल्दी clear decision लेना सीखो।

फोकसः निर्णय लो, delay मत करो

वृश्चिक (Scorpio)

अप्रैल आपके लिए गहराई और transformation का महीना है। आप अपने लक्ष्यों को लेकर बेहद focused रहेंगे और किसी भी हालत में पीछे हटने के मूड में नहीं होंगे। करियर में बड़ी प्रगति के संकेत हैं, लेकिन इसके लिए आपको अपनी comfort zone से बाहर निकलना पड़ेगा। आर्थिक रूप से यह महीना मजबूत रह सकता है, खासकर अगर आपने पहले से planning की है। रिश्तों में intensity बढ़ेगी–या तो बहुत गहराई आएगी या टकराव होगा। आपकी possessiveness और control की आदत परेशानी पैदा कर सकती है। सेहत में energy अच्छी रहेगी, लेकिन stress को ignore करना नुकसान करेगा। महीने के अंत में कोई बड़ा बदलाव या breakthrough संभव है, जो आपकी दिशा बदल सकता है।

फोकसः control नहीं, clarity

धनु (Sagittarius)

यह महीना आपके लिए विस्तार और सीखने का है। आपको नए अवसर, नई जगहें और नए अनुभव मिल सकते हैं, लेकिन आपकी सबसे बड़ी समस्या discipline की कमी है। करियर में ideas तो बहुत होंगे, लेकिन उन्हें जमीन पर उतारने में दिक्कत आएगी। अगर आपने consistency रखी तो यह महीना बड़ा breakthrough दे सकता है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, लेकिन impulsive फैसलों से बचना होगा। रिश्तों में दजहहो और प्दहूोब जरूरी है, वरना misunderstandings बढ़ सकती हैं। सेहत में routine बिगड़ सकता है, खासकर खान-पान और नींद में। महीने के अंत में आपको अपने रास्ते को लेकर clarity मिलेगी, लेकिन यह clarity तभी काम आएगी जब आप action लोगे।

फोकसः discipline ही फर्क लाएगा

मकर (Capricorn)

अप्रैल आपके लिए मेहनत और परिणाम का सीधा समीकरण लेकर आता है। यहां कोई shortcut नहीं चलेगा–जितनी मेहनत, उतना परिणाम। करियर में stability के साथ-साथ growth के मौके मिलेंगे, लेकिन आपको लगातार focused रहना होगा। आर्थिक स्थिति मजबूत होगी, खासकर अगर आपने long-term planning की है। रिश्तों में आपकी practical nature कभी-कभी ठंडापन दिखा सकती है, जिससे दूरी बढ़ सकती है–थोड़ा emotional connect जरूरी है। सेहत में workload का असर दिख सकता है, खासकर पीठ और थकान से जुड़ी समस्याएं। महीने के अंत में आपको अपने प्रयासों का ठोस परिणाम मिलेगा। फोकसः consistency और patience

कुंभ (Aquarius)

यह महीना आपके लिए बदलाव और नए प्रयोगों का है। आप नए ग्रि के साथ आगे बढ़ेंगे और कुछ अलग करने की कोशिश करेंगे, लेकिन यहां समस्या है–आप practical ground खो सकते हैं। करियर में बदलाव के संकेत हैं, लेकिन हर opportunity सही नहीं होती, यह समझना जरूरी है। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी, लेकिन risk लेने से पहले सोच-विचार जरूरी है। रिश्तों में दूरी आ सकती है, खासकर अगर आपने communication पर ध्यान नहीं दिया। सेहत में मानसिक थकान और overthinking की समस्या हो सकती है। महीने के अंत में स्थिति clear होगी और आपको अपने फैसलों का असर दिखेगा।

फोकसः imagination नहीं, execution

मीन (Pisces)

अप्रैल आपके लिए भावनाओं और रचनात्मकता का महीना है। आप अपने creative side को explore करेंगे, लेकिन overthinking आपकी सबसे बड़ी बाधा बन सकती है। करियर में stability रहेगी, लेकिन growth धीमी हो सकती है, जिससे frustration हो सकता है। आर्थिक स्थिति संतुलित रहेगी, लेकिन financial planniु जरूरी है। रिश्तों में गहराई आएगी, लेकिन आपको अपने emotions को control में रखना होगा–हर चीज़ को दिल से लेना नुकसान करेगा। सेहत में मानसिक शांति बनाए रखना जरूरी है, वरना anxiety बढ़ सकती है। महीने के अंत में कोई positive बदलाव या नई शुरुआत हो सकती है। फोकसः emotions पर control, action पर ध्यान ■

पहाड़ों की पुकारः Shimla से Kullu-Manali का सफर

गर्मियों में जब शहरों की गर्मी परेशान करने लगती है, तब पहाड़ सबसे आसान और भरोसेमंद विकल्प बन जाते हैं। Shimla और Kullu-Manali आज भी ऐसे ही दो नाम हैं, जहां पहुंचते ही मौसम और माहौल दोनों बदल जाते हैं। लेकिन बिना प्लान के गए, तो मज़ा आधा रह जाएगा। शिमला इस सफर की अच्छी शुरुआत है। यहां का मॉल रोड, रिज और आसपास की पहाड़ियां पहली झलक में ही आकर्षित करती हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि शिमला अब काफी भीड़भाड़ वाला हो चुका है। इसलिए यहां १-२ दिन बिताकर आगे बढ़ जाना ही बेहतर फैसला होता है। असली सुकून आपको Kullu Valley और Manali में मिलता है। ब्यास नदी के किनारे का शांत माहौल, देवदार के जंगल और ठंडी हवा–ये सब मिलकर सफर को खास बना देते हैं। मनाली में सोलंग वैली और Rohtang Pass जैसी जगहें रोमांच और खूबसूरती दोनों का अनुभव कराती हैं।

गर्मियों की शुरुआत होते ही देश के मैदानी इलाकों में तापमान जैसे लोगों की सहनशक्ति की परीक्षा लेने लगता है। ऐसे में एक नाम बार-बार दिमाग में आता है–पहाड़। और पहाड़ों की बात हो, तो Shimla और Kullu-Manali आज भी सबसे लोकप्रिय विकल्पों में शामिल हैं। लेकिन यह कहानी सिर्फ ठंडी हवा और खूबसूरत नजारों की नहीं है, बल्कि बदलती जीवनशैली, पर्यटन के दबाव और स्थानीय अर्थव्यवस्था की भी है। असल अनुभव तब शुरू होता है जब रास्ता Kullu Valley की ओर बढ़ता है। यहां पहुंचते ही नज़ारा बदल जाता है–ब्यास नदी का शांत बहाव, देवदार के घने जंगल और पहाड़ों की गोद में बसी छोटी-छोटी बस्तियां एक अलग ही दुनिया का अहसास कराती हैं। यही वो जगह है जहां शहर की भागदौड़ पीछे छूट जाती है और प्रकृति अपनी असली खूबसूरती के साथ सामने आती है।

आगे बढ़ते हुए Manali अपने बर्फीले दृश्यों और रोमांचक गतिविधियों के लिए जाना जाता है। सोलंग वैली में बर्फ और एडवेंचर का मज़ा हो या Rohtang Pass की ऊंचाइयों से दिखता अद्भुत दृश्य–यहां हर मोड़ पर कुछ नया देखने को मिलता है। लेकिन यह भी उतना ही सच है कि मनाली अब पहले जितना शांत नहीं रहा। बढ़ते होटल, कैफे और पर्यटकों की भीड़ ने इसकी प्राकृतिक शांति को काफी हद तक प्रभावित किया है।

ऐसे में अगर यात्रा को सच में यादगार बनाना है, तो थोड़ा हटकर सोचने की जरूरत है। मनाली के आसपास के छोटे गांव–जैसे नग्गर या कसोल–आज भी उस सुकून को संभाले हुए

हैं, जो बड़े टूरिस्ट स्पॉट्स में खोता जा रहा है। इन जगहों पर रुककर पहाड़ों को महसूस करना, ब्यास नदी के किनारे समय बिताना और स्थानीय जीवन को करीब से देखना इस यात्रा को सिर्फ 'घूमना' नहीं, बल्कि एक अनुभव बना देता है।

खर्च की बात करें तो यह यात्रा आपकी योजना पर निर्भर करती है, लेकिन औसतन एक व्यक्ति के लिए ५ से ६ दिन का यह सफर १० से २५ हजार रुपये के बीच आराम से पूरा हो सकता है। हालांकि, सस्ते में सब कुछ हो जाएगा, यह सोचकर निकलना अक्सर परेशानी का कारण बनता है।

शिमलाः विरासत, भीड़ और

सुबह की ठंडी हवा जब चेहरे को छूती है, तो ऐसा लगता है जैसे शहर की सारी थकान एक झटके में उतर गई हो। पहाड़ों की यही खासियत है–वो सिर्फ जगह नहीं, एहसास होते हैं। Shimla... कभी अंग्रेजों की गर्मियों की राजधानी रहा ये शहर आज भी अपनी पुरानी विरासत को संजोए खड़ा है। मॉल रोड पर टहलते हुए आपको लगेगा जैसे वक्त यहीं ठहर गया है। पुराने चर्च, लकड़ी की इमारतें और दूर तक फैली पहाड़ों की कतारें–सब कुछ एक फिल्मी सीन जैसा लगता है। लेकिन सच यह भी है कि शिमला अब पहले जैसा शांत नहीं रहा। भीड़, ट्रैफिक और बढ़ता कंक्रीट–ये वो सच्चाई है जिसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता।

बदलती पहचान

Shimla कभी अंग्रेजों की ग्रीष्मकालीन राजधानी हुआ करता था। इसकी सड़कों, इमारतों और माहौल में आज भी औपनिवेशिक इतिहास की झलक साफ दिखाई देती है। मॉ ल रोड पर शाम की चहल-पहल, रिज मैदान से दिखता खुला आसमान और चर्च की घंटियों की आवाज–ये सब मिलकर शिमला को खास बनाते हैं।

लेकिन यह तस्वीर पूरी नहीं है। सच्चाई यह है कि शिमला अब 'ओवरलोडेड टूरिस्ट सिटी' बन चुका है। छुट्टियों के दौरान यहां ट्रैफिक जाम आम बात है, पार्किंग मिलना मुश्किल हो जाता है और होटल्स की कीमतें अचानक बढ़ जाती हैं।

यहां का लोकल प्रशासन भी इस दबाव से जूझ रहा है–पानी की कमी, कचरे का बढ़ता ढेर और पर्यावरण पर असर अब साफ दिखने लगा है।

कुल्लू-मनालीः प्रकृति, रोमांच और व्यापार का संतुलन

शिमला के बाद जैसे ही रास्ता Kullu Valley की ओर मुड़ता है, माहौल बदल जाता है। यहां की सबसे बड़ी पहचान है–ब्यास नदी, जो पूरे क्षेत्र को जीवन देती है। नदी के किनारे बसे गांव, सेब के बाग और देवदार के घने जंगल इस क्षेत्र को एक अलग ही पहचान देते हैं।

Manali पहुंचते ही आपको एक साथ दो चेहरे दिखते हैं–एक प्राकृतिक खूबसूरती का और दूसरा तेजी से बढ़ते पर्यटन उद्योग का। सोलंग वैली में एडवेंचर स्पोर्ट्स, Rohtang Pass की बर्फीली चोटियां और हिडिंबा मंदिर की

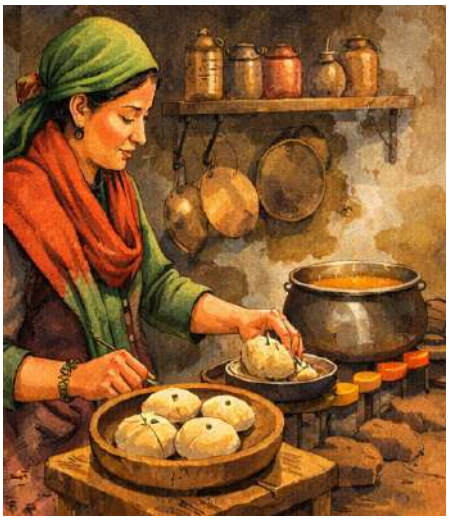

शांति–ये सब मनाली को खास बनाते हैं।

लेकिन यहां भी वही समस्या है–अत्यधिक पर्यटन। होटल्स, कैफे और होमस्टे तेजी से बढ़ रहे हैं, जिससे प्राकृतिक संतुलन पर दबाव बढ़ रहा है।

पहाड़ी स्वादः स्थानीय खान-पान की खासियत

अगर तुम सिर्फ मैगी और पिज्जा खाकर लौट आए, तो समझो आधा अनुभव खो दिया। इस क्षेत्र का असली स्वाद उसके पारंपरिक खाने में है।

सिद्दू - गेहूं के आटे से बना भाप में पकाया व्यंजन

धाम - खास मौकों पर परोसी जाने वाली थाली

ट्राउट फिश - ब्यास नदी की ताज़ा मछली

मद्रा - दही और मसालों में बना चना या राजमा

यह खाना सिर्फ स्वाद नहीं, बल्कि यहां की संस्कृति का हिस्सा है।

स्थानीय अर्थव्यवस्थाः पर्यटन का वरदान या दबाव?

Shimla और Kullu-Manali की अर्थव्यवस्था का बड़ा हिस्सा पर्यटन पर निर्भर है। होटल, टैक्सी, गाइड, रेस्टोरेंट–सब कुछ टूरिज्म से चलता है।

लेकिन यह निर्भरता जोखिम भी लाती है।

ऑफ-सीजन में रोजगार घट जाता है

प्राकृतिक आपदाओं या राजनीतिक हालात का सीधा असर पड़ता है। लोकल संसाधनों पर दबाव बढ़ता है। कुल मिलाकर, पर्यटन यहां 'आर्थिक जीवनरेखा' भी है और 'चुनौती' भी।

ओवरटूरिज्म और पर्यावरण की चुनौती

यहां एक कड़वा सच है–जिस खूबसूरती को देखने लोग आते हैं, वही धीरे-धीरे खतरे में है।

प्लास्टिक कचरा बढ़ रहा है

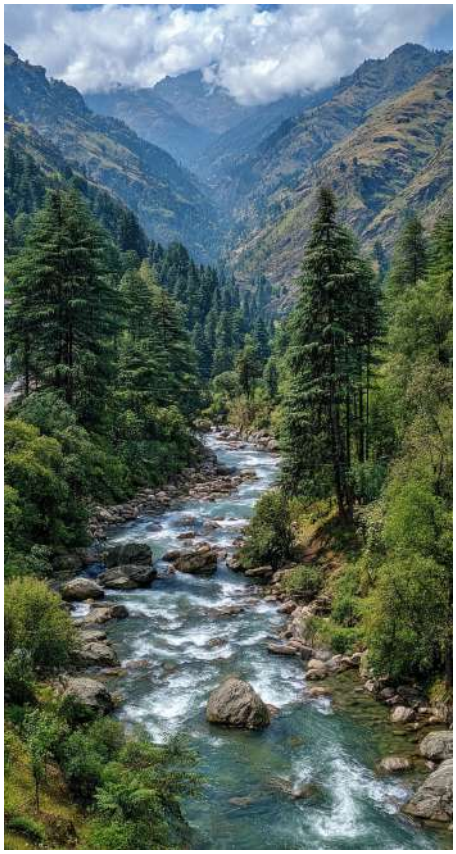

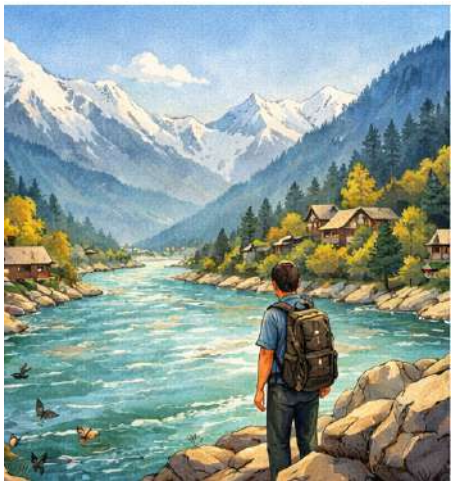

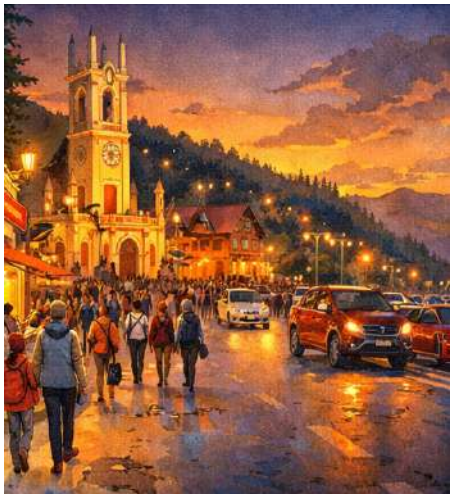

ट्रैफिक से प्रदूषण बढ़ रहा है

पानी और बिजली पर दबाव है

अगर यही रफ्तार रही, तो आने वाले वर्षों में इन जगहों की प्राकृतिक पहचान खतरे में पड़ सकती है।

यात्रियों के लिए जरूरी सलाह

यहां गलती मत करना–पहाड़ों को 'सस्ता और आसान ट्रिप' समझना सबसे बड़ी भूल है।

पहले से होटल बुक करें

भीड़ से बचने के लिए ऑफ-सीजन चुनें

स्थानीय नियमों का पालन करें

पर्यावरण का ध्यान रखें

Shimla और Kullu-Manali की यात्रा सिर्फ घूमने का मौका नहीं, बल्कि यह समझने का भी अवसर है कि प्रकृति और विकास के बीच संतुलन कितना जरूरी है। अगर हम 'जिम्मेदार यात्री' बनकर जाएंगे, तो हम इन पहाड़ों की खूबसूरती को आने वाली पीढ़ियों के लिए भी बचा पाएंगे।

रिश्ते पर नहीं लगी मुहरः हाई कोर्ट ने अनीता आडवाणी का दावा ठुकराया, राजेश खन्ना की संपत्ति पर हक से इनकार'

मुंबई में चर्चित संपत्ति विवाद से जुड़े मामले में बड़ा फैसला सुनाते हुए Bombay High Court ने अनीता आडवाणी की अपील खारिज कर दी है। अदालत ने स्पष्ट कहा कि दिवंगत सुपरस्टार Rajesh Khanna के साथ उनका संबंध विवाह के रूप में कानूनी मान्यता नहीं रखता। इस फैसले के साथ ही उनकी उस मांग को भी ठुकरा दिया गया, जिसमें उन्होंने खुद को राजेश खन्ना की जीवनसंगिनी मानते हुए संपत्ति पर अधिकार जताया था। मामले की सुनवाई के दौरान कोर्ट ने कहा कि किसी भी रिश्ते को शादी का दर्जा देने के लिए वैधानिक प्रमाण और कानूनी शर्तों का पूरा होना जरूरी है, जो इस मामले में साबित नहीं हो सका। अनीता आडवाणी का दावा था कि वह लंबे समय तक राजेश खन्ना के साथ 'लिव-इन रिलेशनशिप' में रहीं और इस आधार पर उन्हें अधिकार मिलना चाहिए, लेकिन अदालत ने इसे पर्याप्त नहीं माना।

इस फैसले के बाद Dimple Kapadia और उनकी बेटी Twinkle Khanna को बड़ी राहत मिली है, क्योंकि वे कानूनी रूप से राजेश खन्ना के वैध उत्तराधिकारी माने जाते हैं। साथ ही, Akshay Kumar, जो ट्विंकल खन्ना के पति हैं, उनके परिवार की स्थिति भी इस फैसले से और मजबूत हुई है। यह मामला लंबे समय से चर्चा में था और फिल्म इंडस्ट्री के साथ-साथ कानूनी हलकों में भी इसकी नजर बनी हुई थी। हाई कोर्ट के इस फैसले ने यह साफ कर दिया है कि केवल साथ रहने से किसी रिश्ते को शादी का दर्जा नहीं मिल सकता, जब तक कि उसे कानूनी रूप से साबित न किया जाए।

'रामायण' से रणबीर कपूर का पहला लुक जारी, दिवाली २०२६ पर रिलीज

बहुप्रतीक्षित फिल्म Ramayana को लेकर दर्शकों का उत्साह लगातार बढ़ता जा रहा है। फिल्म के प्रोड्यूसर नामित मल्होत्रा ने फिल्म में भगवान राम की भूमिका निभा रहे Ranbir Kapoor का पहला लुक Hanuman Jayanti के शुभ अवसर पर जारी किया। इससे पहले Ram Navami के मौके पर मेकर्स ने फिल्म से जुड़ा एक अहम अपडेट साझा किया था, जिसमें इस भव्य प्रोजेक्ट की झलक और इसके वर्ल्ड रिवील की जानकारी दी गई। प्रोड्यूसर ने अपने बयान में कहा कि 'रामायण' केवल एक फिल्म नहीं, बल्कि एक ऐसी कहानी है जो हर भारतीय की भावनाओं से जुड़ी है। उन्होंने यह भी स्पष्ट किया कि फिल्म को पूरी जिम्मेदारी, आस्था और ईमानदारी के साथ बड़े स्तर पर प्रस्तुत करने की कोशिश की जा रही है।

फिल्म की स्टारकास्ट भी इसकी सबसे बड़ी खासियत मानी जा रही है। Sai Pallavi सीता के रूप में नजर आएंगी, जबकि Yash रावण की भूमिका निभाएंगे। Sunny Deol हनुमान के किरदार में दिखाई देंगे और Ravi Dubey लक्ष्मण का रोल निभा रहे हैं। इसके अलावा Arun Govil, Lara Dutta और Vivek Oberoi जैसे कलाकार भी फिल्म में महत्वपूर्ण भूमिकाओं में नजर आएंगे। मेकर्स ने इस फिल्म को दो भागों में बनाने की योजना बनाई है। पहला भाग दिवाली २०२६ के मौके पर सिनेमाघरों में रिलीज किया जाएगा, जबकि दूसरे भाग को बाद में रिलीज किया जाएगा। रिपोर्ट्स के अनुसार, फिल्म का बजट करीब ४००० करोड़ रुपये बताया जा रहा है, जो इसे भारतीय सिनेमा की अब तक की सबसे महंगी फिल्मों में शामिल करता है। माना जा रहा है कि यह झलक फिल्म के प्रति दर्शकों की उम्मीदों को और ऊंचाई दे सकती है।

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

Faces Canada Magneteyes Kajal Duo Pack

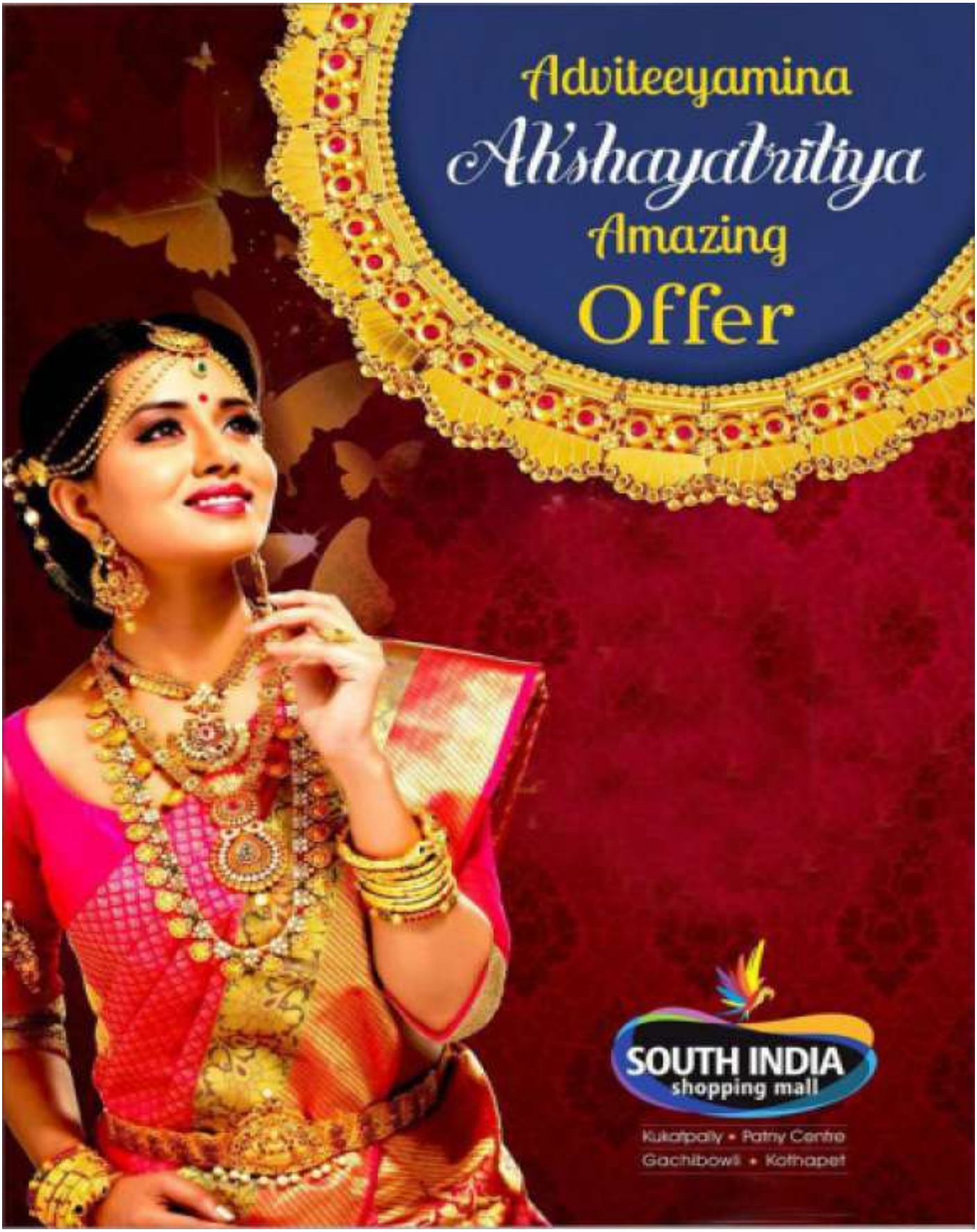
Adviteeyamina
Akshayatritiya
Amazing
Offer
SOUTH INDIA
shopping mall
Kukatpally • Patny Centre
Gachibowli • Kothapet

बुद्धपुरुष प्रोफेसर अच्युत सामंत की आध्यात्मिक दिनचर्या है वंदनीय और अनुकरणीय

स जातो येन जातेन देशो याति सम्मुनतिम्

अर्थात् उसी का जन्म लेना सार्थक है जो अपने देश और अपने राष्ट्र को उन्नति और प्रगति के लिए समर्पित हो। बुद्धपुरुषः प्रोफेसर अच्युत सामंत के आध्यात्मिक दिनचर्या की समीक्षा करने पर यह पता चला कि उनका जीवन उनके द्वारा प्रतिपल सर्वोत्तम करने में व्यतीत होता है। उनका का सांसारिक शरीर प्रतिदिन जल से मलमलकर स्नान करने से जहां पवित्र होता है वहीं उनका निश्छल मन प्रतिदिन सत्य से पवित्र होता है। एक तरफ उनकी बुद्धि प्रतिदिन सद्ज्ञान से पवित्र होती है तो वहीं उनकी आत्मा प्रतिदिन धर्म-कर्म से पवित्र होती है।

भारत के ओड़िशा राज्य की राजधानी

भुवनेश्वर स्थित विश्वविख्यात कीट-कीस-कीम्स के प्राणप्रतिष्ठाता हैं महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंतजी। एक अनौपचारिक साक्षात्कार में प्रोफेसर सामंत ने बताया कि उनकी असाधारण कामयाबी के पीछे उनकी स्वर्गीया माताजी नीलिमारानी सामंत के साथ-

साथ उनकी आध्यात्मिक दिनचर्या तथा वर्तमान में उनके दूरदर्शी निर्णयों का ही रहा है। ऐसे में, अच्युत सामंत के आध्यात्मिक दिनचर्या की अगर निष्पक्ष भाव से समीक्षा की जाय तो यह निर्विवाद रुप से कहा जा सकता है कि उनकी आध्यात्मिक

दिनचर्या नित्य प्रातः वंदनीय और अनुकरणीय दिनचर्या है। वे पूरी तरह से विदेह जीवनयापन करते हैं और अपने जीवन की अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में समभाव से सहज रुप में मुस्कराते हुए नजर आते हैं।

वे प्रतिदिन सुबह में उठकर अपने दैनिक कार्यों से निवृत्त होकर सबसे पहले अपनी गौमाता के दर्शन करते हैं। अपने निवासस्थल के सभी देवी-देवताओं की विधिवत पूजा करते हैं। साथ ही साथ वे पूरे विधि-विधान से अपने जीवन की पहली गुरु अपनी स्वर्गीया माताजी नीलिमारानी सामंत की पूजा करते हैं। अपने स्वर्गीय पिताजी अनादिचरण सामंता की पूजा करते हैं। साथ ही साथ सत्य, अहिंसा और त्याग के पुजारी राष्ट्रपिता महात्मागांधी की पूजा करते हैं।

अपनी आध्यात्मिक दिनचर्या के तहत वे वाणीक्षेत्र अपने जगन्नाथ मंदिर प्रांगण में जाकर भगवान जगन्नाथ समेत कुल २५ अन्य देवी-

देवताओं की पूजा समस्त पूजकों के मंत्रोच्चारण के साथ करते हैं। कीट-कीस-कीम्स के कल्याण और सतत विकास के लिए कार्य करनेवाले अच्युत सामंत जी कीस प्रांगण में एक कदंब के पेड़ के नीचे अपना दफ्तर बनाकर १०-१० घण्टे कार्य करते हैं। साथ ही साथ वे प्रतिदिन ४-४ घण्टे जनहित, लोकहित, समाजहित, प्रदेश हित तथा राष्ट्रहित से संबंधित कार्य भी निःस्वार्थभाव से करते हैं।

महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत की अति विशेष आध्यात्मिक दिनचर्या की बात करें तो वे प्रति महीने की पहली तारीख को भोर में जगन्नाथपुरी धाम जाकर भगवान जगन्नाथ के

दर्शन है। वे प्रति महीने के अंतिम शनिवार के दिन पुरी धाम जाने के रास्ते में सिरुली जाकर सिरुली हनुमानजी के दर्शन करते हैं। साथ ही साथ प्रति महीने अपने पैतृक गांव कलराबंक जाकर अपने द्वारा निर्मित श्रीरामदरबार मंदिर में विधिवत पूजा करते हैं। समय-समय पर वे वहां पर यज्ञ अनुष्ठित करते हैं। सर्वधर्म समन्वय संगोष्ठी आयोजित करते हैं। अपने भुवनेश्वर के निवास पर प्रतिमाह की संक्रांति के दिन संगीतमय अखण्ड सुंदरकाण्ड पाठ आयोजित करते हैं। भुवनेश्वर यूनिट-१ स्थित १०८ हनुमान मंदिर में अपने गुरु बाबा रामनारायण दास द्वारा सुंदरकाण्ड पाठ आयोजित करते हैं। साथ ही साथ प्रतिमाह भुवनेश्वर के अनेक हनुमान मंदिरों में भजन-संकीर्तन के साथ-साथ सामूहिक प्रसादसेवन भी कराते हैं। पुरी धाम के समीप भी ब्रह्मगिरि में वे नियमित पूजा-पाठ कराते हैं।

प्रोफेसर अच्युत सामंत के आध्यात्मिक दिनचर्या की सबसे अनोखी बात यह है कि वे अपने स्वर्गीय पिताजी अनादिचरण सामंत तथा अपनी माताजी स्वर्गीया नीलिमारानी सामंत की जयंती और श्राद्ध अकेले मनाते हैं। उस दिन वे अपने स्व.पिताजी और अपनी स्व.माताजी की पसंद के भोजन अपने हाथों से पकाकर अपने निवास के उत्तर दिशा में विधिवत कौवों को खिलाते हैं। साथ ही साथ ब्राह्मणों को सादर आमंत्रितकर उनको अपने हाथों से भोजन कराते हैं तथा दान-दक्षिणा देते हैं।

यहीं नहीं, समय-समय पर पुरी गोवर्द्धन मठ के १४५वें पीठाधीश्वर जगतगुरु शंकराचार्य स्वामी निश्चलानंद सरस्वती महाभाग को कीट-कीस में सादर आमंत्रितकर उनका दिव्य प्रवचन कीट-कीस के कुल अस्सी हजार बच्चों और युवाओं को सुनाते हैं। पुरी धाम के गजपति महाराजा श्री श्री दिव्य सिंहदेवजी, भगवान जगन्नाथ के प्रथमसेवक को वाणीक्षेत्र अपने जगन्नाथ मंदिर में सादर आमंत्रितकर उकी अध्यक्षता में सर्वधर्म समन्वय संगोष्ठ ी भी आयोजित करते हैं। यही नहीं, अपनी संस्थाओं कीट-कीस-कीम्स में समय-समय पर विश्वविख्यात धर्माचार्यों को सादर आमंत्रित कर उनके आध्यात्मिक व जीवनोपयोगी प्रवचनों का भी आयोजन प्रोफेसर अच्युत सामंत करते हैं। समय-समय पर अच्युत सामंतजी का अयोध्या, बनारस, तिरुपति और भारत के अनेकानेक तीर्थस्थलों में जाना और वहां पर पूजा-पाठ करना महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत की आध्यात्मिक चेतना को स्पष्ट करता है। इसप्रकार बुद्धपुरुषः प्रोफेसर अच्युत सामंत की आध्यात्मिक दिनचर्याः वंदनीय और अनुकरणीय है।

-अशोक पाण्डेय

कीट में होगा ६१वां फेमिना मिस इंडिया का ग्रैंड फिनाले

भुवनेश्वर, ११ मार्चः ६१वें फेमिना मिस इंडिया ग्रैंड फिनाले इस वर्ष अप्रैल में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय में आयोजित किया जाएगा। इस संबंध में मुंबई में कीट डीम्ड विश्वविद्यालय और फेमिना मिस इंडिया के बीच एक समझौता ज्ञापन (MoU) पर हस्ताक्षर किए गए। इसके साथ ही कीट भारत का पहला विश्वविद्यालय बन गया है जो इस भव्य आयोजन की मेजबानी करेगा। साथ ही, यह पहली बार होगा जब इस स्तर का कार्यक्रम पूर्वी भारत में आयोजित किया जाएगा।

ज्ञापन पर हस्ताक्षर अच्युत सामंत की उपस्थिति में हुआ जो कीट -कीस -कीम्स के प्राण-प्रतिष्ठा हैं। हस्ताक्षरकर्ताओं में कीट के कुलपति सरनजीत सिंह, कीट स्कूल ऑफ आर्किटेक्चर के महानिदेशक एस एस रे तथा टाईम्स ग्रुप की ओर से मुख्य कार्यकारी अधिकारी रोहित गोपाकुमार शामिल थे।

यह कार्यक्रम मुंबई स्थित दी टाईम्स आफ इंडिया कार्यालय में आयोजित हुआ जहां कई विशिष्ट अतिथिगण, जिनमें फेमिना मिस इंडिया २०२५ से जुड़े अधिकारी भी उपस्थित थे। हस्ताक्षर समारोह का सीधा प्रसारण भी किया गया। चार महीने पहले फेमिना मिस इंडिया के प्रतिनिधियों ने कीट और कीस का दौरा कर यहां के बुनियादी ढांचे का निरीक्षण किया था। कीट की उत्कृष्ट सुविधाओं से प्रभावित होकर फेमिना मिस इंडिया प्रबंधन ने इस प्रतिष्ठित कार्यक्रम के आयोजन के लिए कीट विश्वविद्यालय का चयन किया।

इस अवसर पर डॉ. सामंत ने कहा कि यह एक प्रतिष्ठित कार्यक्रम है और इसकी मेजबानी करना कीट-कीस और ओडिशा के लिए गर्व और सम्मान की बात है। उन्होंने विनीत जैन, सीईओ रोहित गोपाकुमार और फेमिना मिस इंडिया टीम का धन्यवाद करते हुए कीट को ग्रैंड फिनाले का स्थल चुनने के लिए आभार व्यक्त किया।

रिलायंस फाउंडेशन की संस्थापक एवं चेयरपर्सन नीता एम. अंबानी प्रतिष्ठित KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड २०२५ से सम्मानित

भुवनेश्वर, १६ मार्चः Nita M. Ambani, संस्थापक एवं चेयरपर्सन Reliance Foundation, को सोमवार को यहां Kalinga Institute of Social Sciences (KISS) परिसर में प्रतिष्ठित KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड २०२५ से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार श्रीलंका के नोबेल पुरस्कार विजेता Mohan Munasinghe ने Achyuta Samanta (संस्थापक, Kalinga Institute of Industrial Technology, KISS और Kalinga Institute of Medical Sciences) की उपस्थिति में प्रदान किया। इस अवसर पर संस्थानों के वरिष्ठ अधिकारी, गणमान्य अतिथि और बड़ी संख्या में

उन्होंने छात्रों को हमेशा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की सलाह देते हुए कहा, 'मुझे KISS में भारत का भविष्य दिखाई देता है। यहां के बच्चों को देखकर मुझे विश्वास है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है।' KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड, जिसकी शुरुआत २००८ में डॉ. समंता ने की थी, KISS का सर्वोच्च सम्मान है। यह पुरस्कार दुनिया भर में मानवीय सेवा की भावना को साकार करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को प्रदान किया जाता है। इसमें एक प्रशस्ति-पत्र और स्वर्ण-प्लेटेड ट्रॉफी शामिल होती है।

छात्र उपस्थित थे।

यह सम्मान श्रीमती अंबानी के उत्कृष्ट मानवीय कार्यों और शिक्षा, स्वास्थ्य, ग्रामीण विकास, महिला सशक्तिकरण तथा खेल प्रोत्साहन के क्षेत्रों में Reliance Foundation के माध्यम से दिए गए उनके महत्वपूर्ण योगदान के लिए प्रदान किया गया। पुरस्कार स्वीकार करते हुए श्रीमती अंबानी ने कहा कि डॉ. समंता ने KIIT और KISS के रूप में शिक्षा के दो आधुनिक मंदिर स्थापित किए हैं, जो देश के लिए गर्व की बात हैं। उन्होंने कहा कि इस प्रतिष्ठित सम्मान को प्राप्त करना उनके लिए गर्व की बात है और यह सम्मान केवल उनका नहीं, बल्कि रिलायंस फाउंडेशन की पूरी टीम का है।

KISS के लगभग ४०,००० छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, 'मैं यहां आप सभी से मिले प्यार और स्नेह को कभी नहीं भूलूंगी।'

उन्होंने आगे कहा कि KIIT और KISS जैसे दो अद्भुत संस्थानों का दौरा करना उनके लिए एक विशेष सौभाग्य है। उन्होंने भगवान जगन्नाथ की पवित्र भूमि पर आने को अपने लिए अत्यंत भावुक क्षण बताया और कहा कि ओडिशा की संस्कृति, परंपराएं और मूल्य अत्यंत समृद्ध हैं, तथा यहां के लोगों का प्रकृति से गहरा संबंध है।

छात्रों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि लड़कों और लड़कियों में कोई अंतर नहीं है और जो काम लड़के कर सकते हैं, वही लड़कियां भी कर सकती हैं। उन्होंने छात्रों को सलाह दी,

'यह केवल शुरुआत है, आपका अंतिम लक्ष्य नहीं। आपको बड़े सपने देखने चाहिए और उन्हें पूरा करने के लिए कड़ी मेहनत और समर्पण से काम करना चाहिए।' उन्होंने छात्रों को हमेशा सत्य और धर्म के मार्ग पर चलने की सलाह देते हुए कहा, 'मुझे KISS में भारत का भविष्य दिखाई देता है। यहां के बच्चों को देखकर मुझे विश्वास है कि भारत का भविष्य उज्ज्वल है।'

KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड, जिसकी शुरुआत २००८ में डॉ. समंता ने की थी, KISS का सर्वोच्च सम्मान है। यह पुरस्कार दुनिया भर में मानवीय सेवा की भावना को साकार करने वाले व्यक्तियों और संस्थाओं को प्रदान किया जाता है। इसमें एक प्रशस्ति-पत्र और स्वर्ण-प्लेटेड ट्रॉफी शामिल होती है। इस ट्रॉफी का प्रतीक एक स्वर्णिम हृदय है, जो पवित्रता, करुणा, समृद्धि और आशा के मूल्यों का प्रतिनिधित्व करता है।

'मैं यहां आप सभी से मिले प्यार और स्नेह को कभी नहीं भूलूंगी।' उन्होंने आगे कहा कि KIIT और KISS जैसे दो अद्भुत संस्थानों का दौरा करना उनके लिए एक विशेष सौभाग्य है। उन्होंने भगवान जगन्नाथ की पवित्र भूमि पर आने को अपने लिए अत्यंत भावुक क्षण बताया और कहा कि ओडिशा की संस्कृति, परंपराएं और मूल्य अत्यंत समृद्ध हैं, तथा यहां के लोगों का प्रकृति से गहरा संबंध है।

इसमें एक हृदय को थामे हुए हाथों की आकृति दर्शाई गई है, जो यह संदेश देती है कि समर्पित प्रयासों से वंचित लोगों के जीवन में बदलाव लाया जा सकता है और दुनिया को बेहतर बनाया जा सकता है।

स्वागत भाषण में डॉ. समंता ने कहा,'सफलता का अर्थ केवल अपने लिए उपलब्धियां हासिल करना नहीं है; सच्ची सफलता दूसरों के जीवन में रोशनी लाने में है।' उन्होंने Nita M. Ambani के उदाहरण का उल्लेख करते हुए कहा कि समर्पण के साथ किए गए महान प्रयास कभी व्यर्थ नहीं जाते। उन्होंने उनके बहुआयामी सामाजिक कार्यों की सराहना करते हुए कहा कि आज के भौतिकवादी युग में प्रेम और सम्मान अर्जित करना आसान नहीं है, लेकिन श्रीमती अंबानी ने अपने मानवीय कार्यों के माध्यम से लोगों का अपार प्रेम और सम्मान प्राप्त किया है। उन्होंने KISS ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड को स्वीकार करने के लिए श्रीमती अंबानी का आभार व्यक्त किया।

मानवाधिकारों की पूरी व्यवस्था की मूल भावना सहानुभूति और करुणा हैः एनएचआरसी के महासचिव भारत लाल

भुवनेश्वर, १४ मार्चः शिक्षा जीवन को बदलने और एक न्यायपूर्ण तथा समावेशी समाज के निर्माण का सबसे सशक्त माध्यम है। यह बात राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (NHRC) के महासचिव भरतलाल ने गत शनिवार को अपने कीट-कीस के दौरे के दौरान कही। कीस के छात्रों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा कि शिक्षा ने उनके अपने जीवन और करियर को आकार देने में निर्णायक भूमिका निभाई है। उन्होंने कहा, 'यदि मैं आज इस मुकाम तक पहुँचा हूँ तो इसका कारण शिक्षा है। शिक्षा के बिना व्यक्ति बहुत कुछ हासिल नहीं कर सकता।' उन्होंने छात्रों से अपने समय का सर्वोत्तम उपयोग कर ज्ञान और विवेक अर्जित करने का आग्रह किया।

उन्होंने कहा, 'मैं यहाँ कीट और कीस से कुछ सीखने आया हूँ। इन संस्थानों के संस्थापक महान् शिक्षाविद् प्रोफेसर अच्युत सामंत को मैं इस अद्भुत कार्य के लिए बधाई देता हूँ। शिक्षा मन, संस्कृति, व्यवहार और सोच को आकार देती है और कीस अपनी शिक्षा के माध्यम से जीवन बदलने का काम कर रहा है।'

भरत लालजी ने अपने संबोधन में छात्रों को मजबूत चरित्र और दूसरों की मदद करने की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित किया। उनके अनुसार, मानवाधिकारों का मूल उद्देश्य सामाजिक कलंक को समाप्त करना और हर व्यक्ति के लिए गरिमा और समानता सुनिश्चित करना है।

बाद में कीट नॉलेज ट्री श्रृंखला के अंतर्गत व्याख्यान देते हुए उन्होंने दोहराया कि शिक्षा व्यक्ति की संस्कृति, व्यवहार और सोच को आकार देती है। उन्होंने कहा, 'मानवाधिकारों की पूरी व्यवस्था की मूल भावना सहानुभूति और करुणा है। मानवाधिकारों की रक्षा हमारे डीएनए में है।' उन्होंने युवाओं से मानवाधिकारों के संरक्षक बनने और सभी के लिए समानता तथा गरिमा के मूल्यों को बनाए रखने का आह्वान किया।

समकालीन चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए उन्होंने कहा कि मानवाधिकार और श्रम स्थितियाँ अब वैश्विक आर्थिक विकास के केंद्र में आ रही हैं। 'यदि व्यवसाय भविष्य में संपत्ति का सृजन करना चाहते हैं, तो उन्हें श्रमिकों के कल्याण को बढ़ावा देना होगा और पर्यावरण की रक्षा करनी होगी।' उन्होंने कहा कि वैश्विक अर्थव्यवस्था में संभावित व्यापार बाधाओं से बचने के लिए जीवन और कार्य परिस्थितियों में सुधार आवश्यक है।

उन्होंने भारत में मानवाधिकारों की सुरक्षा के लिए संस्थागत व्यवस्थाओं के महत्व पर भी प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भारतीय संविधान का अनुच्छेद ३२ नागरिकों को न्याय तक पहुँच की गारंटी देता है, जिससे वे अपने अधिकारों के उल्लंघन की स्थिति में कानूनी उपाय प्राप्त कर सकते हैं। उन्होंने कहा, 'कोई भी व्यक्ति मानवाधिकार आयोग से संपर्क कर सकता है। वर्ष २०२३-२४ में ही आयोग को प्रतिदिन ३०० से अधिक शिकायतें प्राप्त हुईं।'

मानवाधिकारों की रक्षा में सुशासन की भूमिका पर जोर देते हुए उन्होंने कहा कि बेहतर सार्वजनिक सेवा वितरण और पारदर्शिता अत्यंत महत्वपूर्ण हैं। उन्होंने चेतावनी दी कि भ्रष्टाचार और भाई-भतीजावाद न्याय को कमजोर करते हैं और संस्थाओं को क्षति पहुँचाते हैं। इस कार्यक्रम में महान् शिक्षाविद् कीट-कीस के प्राणप्रतिष्ठाता प्रोफेसर अच्युत सामंत सहित कीट डीम्ड विश्वविद्यालय के अनेक वरिष्ठ अधिकारी, कुलपति प्रोफेसर सरनजीत सिंह, प्रो-वाइस चांसलर राजू केडी, छात्र, शिक्षक और अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

डॉ. अच्युत सामंत ने आज 'आर्ट ऑफ गिविंग २०२६' की थीम 'Share to Shine' की लॉन्च

भुवनेश्वर, २५ मार्च डॉ. अच्युत सामंत ने 'आर्ट ऑफ गिविंग २०२६' की थीम की घोषणा करते हुए कहा कि 'आर्ट ऑफ गिविंग' पहल, जिसकी शुरुआत उन्होंने २०१३ में की थी, अब १३ वर्षों का सफर तय कर चुकी है और दुनिया भर के लोगों को शांति, खुशी, मित्रता और सद्भाव के मूल्यों को अपनाने के लिए प्रेरित कर रही है। उन्होंने बताया कि यह आंदोलन अब एक वैश्विक रूप ले चुका है, जिसमें हर साल दुनियाभर के लोग सक्रिय रूप से भाग लेते हैं।

डॉ. सामंत ने कहा कि 'आर्ट ऑफ गिविंग डे' हर वर्ष १७ मई को मनाया जाता है, इसलिए इस थीम की घोषणा दो महीने पहले की गई है, ताकि दुनिया भर के लोग बेहतर तैयारी कर सकें और इसमें सार्थक भागीदारी निभा सकें।

उन्होंने किस्स (KISS) ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे KISS को वैश्विक पहचान मिली है और मानव सेवा के उसके मिशन को मजबूती मिली है।

इस वर्ष की थीम 'Share to Shine' के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि यह एक सरल लेकिन शक्तिशाली विचार को दर्शाती है–जब व्यक्ति दूसरों के साथ कुछ भी साझा करता है, चाहे वह ज्ञान हो, भोजन हो या दया, तो उससे न केवल सामने वाले को खुशी मिलती है बल्कि देने वाले को भी आंतरिक संतोष और खुशी मिलती है। 'यह खुशी देने वाले के चेहरे पर

झलकती है और उसे चमक प्रदान करती है,' उन्होंने कहा।

अपने जीवन के अनुभव साझा करते हुए डॉ. सामंत ने बताया कि उन्होंने बचपन से ही देने की भावना को अपनाया है। 'मैंने अपने शुरुआती दिनों से ही इस रास्ते पर चलना शुरू किया, और आज मैं जो भी हूं, वह इसी साझा करने की आदत के कारण हूं,' उन्होंने कहा। साथ ही, उन्होंने लोगों से अपील की कि वे 'देने' को अपने जीवन का हिस्सा बनाएं। इस कार्यक्रम में KIIT और KISS के कुलपति प्रो. सरनजीत सिंह सहित कई वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित रहे।

डॉ. सामंत ने कहा कि 'आर्ट ऑफ गिविंग डे' हर वर्ष १७ मई को मनाया जाता है, इसलिए इस थीम की घोषणा दो महीने पहले की गई है, ताकि दुनिया भर के लोग बेहतर तैयारी कर सकें और इसमें सार्थक भागीदारी निभा सकें। उन्होंने किस्स (KISS) ह्यूमैनिटेरियन अवॉर्ड के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि इससे KISS को वैश्विक पहचान मिली है और मानव सेवा के उसके मिशन को मजबूती मिली है। इस वर्ष की थीम 'Share to Shine' के बारे में बताते हुए उन्होंने कहा कि यह एक सरल लेकिन शक्तिशाली विचार को दर्शाती है–जब व्यक्ति दूसरों के साथ कुछ भी साझा करता है, चाहे वह ज्ञान हो, भोजन हो या दया, तो उससे न केवल सामने वाले को खुशी मिलती है बल्कि देने वाले को भी आंतरिक संतोष और खुशी मिलती है। 'यह खुशी देने वाले के चेहरे पर झलकती है और उसे चमक प्रदान करती है,

गर्मियों के दिन

वैद्यजी बोले, 'देखो भाई, सर्टीफिकेट पक्का करके देंगे, सरकार का रजिस्टर नंबर देंगे, रुपैया चार लगेंगे।' वैद्यजी ने जैसे खुद चार रुपए पर उसके भड़क जाने का अहसास करते हुए कहा, 'अगर पिछला न लो तो दो रुपये में काम चल जाएगा....' खलासी निराश हो गया। लेकिन उसकी निराशा से अधिक गहन हताशा वैद्यजी के पसीने से नम मुख पर व्याप गई। बड़े निरपेक्ष भाव से खलासी बोला, 'सोबरन सिंह ने आपके पास भेजा था।' उसके कहने से कुछ ऐसा लगा जैसे यह उसका काम न होकर सोबरन सिंह का काम हो। पर वैद्यजी के हाथ नब्ज़ आ गई, बोले, 'वो हम पहले ही समझ रहे थे। बगैर जान-पहचान के हम देते भी नहीं, इज़्ज़त का सवाल है। हमें क्या मालूम तुम कहाँ रहे, क्या करते रहे ? अब सोचने की बात है.... विश्वास पर जोखिम उठा लेंगे..... पंद्रह दिन पहले से तुम्हारा नाम रजिस्टर में चढ़ाएँगे, रोग लिखेंगे... हर तारीख पर नाम चढ़ाएँगे तब कहीं काम बनेगा। ....

चुंगी-दफ़्तर खूब रँगा-चुँगा है। उसके फाटक पर इंद्रधनुषी आकार के बोर्ड लगे हुए है। सैयदअली पेंटर ने बड़े सधे हाथ से उन बोर्डों को बनाया है । देखते-देखते शहर में बहुत-सी ऐसी दुकानें हो गई हैं, जिन पर साइनबोर्ड लटक गए है। साइनबोर्ड लगना यानी औकात का बढ़ना। बहुत दिन पहले जब दीनानाथ हलवाई की दूकान पर पहला साइनबोर्ड लगा था तो वहाँ दूध पीने वालों की संख्या एकाएक बढ़ गई थी । फिर बाढ़ आ गई, और नए-नए तरीके और बैलबूटे ईजाद किए गए । 'ऊँ' या 'जयहिन्द' से शुरु करके 'एक बार अवश्य परीक्षा कीजिए' या 'मिलावट साबित करने वाले को सौ रुपया नगद इनाम' की मनुहारों या ललकारों पर लिखावट समाप्त होने लगी ।

चुंगी-दफ़्तर का नाम तीन भाषाओं में लिखा है। चेयरमैन साहब बड़े अक्किल के आदमी है, उनकी सूझ-बूझ का डंका बजता है, इसलिए हर साइनबोर्ड हिंदी, उर्दू और अंगरेज़ी में लिखा जाता है । दूर-दूर के नेता लोग भाषण देने आते है, देश-विदेश के लोग आगरे का ताजमहल देखकर पूरब की ओर जाते हुए यहाँ से गुज़रते है... उन पर असर पड़ता है, भाई। और फिर मौसम की बात - मेले-तमाशे के दिनों में हलवाइयों, जुलाई-अगस्त में किताब-कागज़ वालों, सहालग में कपड़े वालों और खराब मौसम में वैद्य-हकीमों के साइनबोर्डों पर नया रोगन चढ़ता है । शुद्ध देसी घी वाले सबसे अच्छे, जो छप्परों के भीतर दीवार पर गेरू या हिरमिजी से लिखकर काम चला लेते है। इसके बगैर काम नहीं चलता। अहमियत बताते हुए वैद्यजी ने कहा- 'बगैर पोस्टर चिपकाए सिनेमा वालों का भी काम नहीं चलता। बड़े-बड़े शहरों में जाइए, मिट्टी का तेल बेचने वाले की दुकान पर साइनबोट मिल जाएगा। बड़ी ज़रूरी चीज़ है। बाल-बच्चों के नाम तक साइनबोट हैं, नहीं तो नाम रखने की जरूरत क्या है? साइनबोट लगाके सुखदेव बाबू कंपौंडर से डॉक्टर हो गए, बेग लेके चलने लगे।'

पास बैठे रामचरन ने एक और नए चमत्कार की खबर दी-- उन्होंने बुधईवाला इक्का-घोड़ा खरीद लिया -- हाँकेगा कौन ? -टीन की कुर्सी पर प्राणायाम की मुद्रा में बैठे पंडित ने पूछा।

-- ये सब जेब कतरने का तरीका है --वैद्यजी का ध्यान इक्के की तरफ अधिक था-- मरीज़ से किराया वसूल करेंगे। सईस को बख्शीश दिलाएंगे, बड़ शहरों के डॉक्टरों की तरह। इसी से पेशे की बदनामी होती है। पूछो, मरीज़ का इलाज करना है कि रोब-दाब दिखाना है। अंगरेज़ी आले लगातार मरीज़ की आधी जान पहले सुखा डालते है। आयुर्वेदी नब्ज़ देखना तो दूर, चेहरा देख के रोग बता दे! इक्का-घोड़ा इसमें क्या करेगा ? थोड़े दिन बाद देखना, उनका सईस कंपौंडर हो जाएगा --कहते-कहते वैद्यजी बड़ी घिसी हुई हँसी में हँस पड़े । फिर बोले-- कौन क्या कहे भाई ? डॉक्टरी तो तमाशा बन गई है। वकील मुख्तार के लड़के डॉक्टर होने लगे ! खून और संस्कार से बात बनती है हाथ में जस आता है, वैद्य का बेटा वैद्य होता है। आधी विद्या लड़कपन में जड़ी-बुटियाँ कूटते-पीसते आ जाती है । तोला, माशा, रत्ती का ऐसा अंदाज़ हो जाता है कि औषधि अशुद्ध हो ही नहीं सकती है। औषधि का चमत्कार उसके बनाने की विधि में है। धन्वंतरि' वैद्यजी आगे कहने जा ही रहे थे कि एक आदमी को दुकान की ओर आते देख चुप हो गए, और बैठे हुए लोगों की ओर कुछ इस तरह देखने-गुनने लगे कि यह गप्प लड़ाने वाले फालतू

आदमी न होकर उनके रोगी हों ।

आदमी के दुकान पर चढ़ते ही वैद्यजी ने भाँप लिया। कुंठित होकर उन्होंने उसे देखा और उदासीन हो गए। लेकिन दुनिया-दिखावा भी कुछ होता है। हो सकता है, कल यही आदमी बीमार पड़ जाए या इसके घर में किसी को रोग घेर ले। इसलिए अपना व्यवहार और पेशे की गरिमा चौकस रहना चाहिए। अपने को बटोरते हुए उन्होंने कहा, 'कहो भाई, राजी-खुशी।' उस आदमी ने जवाब देते हुए सीरे की एक कनस्टरिया सामने कर दी, 'यह ठाकुर साहब ने रखवाई है। मंडी से लौटते हुए लेते जाएँगे। एक-डेढ़ बजे के करीब ।'

उस वक्त दुकान बंद रहेगी, --वैद्यजी ने व्यर्थ के काम से ऊबते हुए कहा-- हकीम-वैद्यों की दुकानें दिनभर नहीं खुली रहतीं । व्यापारी थोड़े ही हैं, भाई! पर फिर किसी अन्य दिन और अवसर की आशा ने जैसे ज़बरदस्ती कहलावाया। खैर, उन्हें दिक्कत नहीं होगी, हम नहीं होंगे तो बगल वाली दुकान से उठा लें। मैं रखता जाऊँगा।

आदमी के जाते ही वैद्य जी बोले-- शराब-बंदी से क्या होता है? जब से हुई तब से कच्ची शराब की भट्ठियाँ घर-घर चालू हो गईं। सीरा घी के भाव बिकने लगा। और इन डॉक्टरों को क्या कहिए...इनकी दुकानें हौली बन गई हैं। लैसंस मिलता है दवा की तरह इस्तेमाल करने का, पर खुले आम जिंजर बिकता है। कहीं कुछ नहीं होता । हम भंग-अफीम की एक पुड़िया चाहें तो तफसील देनी पड़ती है।'

जिम्मेदारी की बात है --पंडित जी ने कहा।

अब जिम्मेदार वैद्य ही रह गए हैं। सबकी रजिस्टरी हो चुकी, भाई। ऐसे गैर-पंचकल्यानी जितने घुस आए थे, उनकी सफाई हो गई। अब जिसके पास रजिस्टरी होगी वही वैद्यक कर सकता है। चूरन वाले वैद्य बन बैठे थे...सब खतम हो गए । लखनऊ में सरकारी जाँच-पड़ताल के बाद सही मिली है....

वैद्य जी की बात में रस न लेते हुए पंडित उठ गए। वैद्यजी ने भीतर की तरफ कदम बढ़ाए, और औषधालय का बोर्ड लिखते हुए चंदर से बोले-- सफेदा गाढ़ा है बाबू, तारपीन मिला लो। वे एक बोतल उठा लाए जिस पर अशोकारिष्ट का लेबल लगा था।

इसी तरह न जाने किन-किन औषधियों की शरीर रूपी बोतलों में किस-किस पदार्थ की आत्मा भरी है। सामने की अकेली अलमारी में बड़ी-बड़ी बोतलें रखी है; जिन पर तरह-तरह के अरिष्टों और आसवों के नाम चिपके हैं। सिर्फ पहली कतार में ये शीशियाँ खड़ी हैं...उनके पीछे ज़रूरत का और सामान है। सामने की मेज़ पर सफेद शीशियों की एक पंक्ति है, जिसमें कुछ स्वादिष्ट चूरन... लवण-भास्कर आदि है, बाकी में जो कुछ भरा है उसे केवल वैद्यजी जानते हैं।

तारपीन का तेल मिलाकर चंदर आगे लिखने लगा- 'प्रो. कविराज नित्यानंद तिवारी' ऊपर की पंक्ति 'श्री धन्वंतरि औषधालय' स्वयं वैद्यजी लिख चुके थे। सफेदे के वे अच्छर ऐसे लग रहे थे जैसे रुई के फाहे चिपका दिए हों। ऊपर जगह खाली देखकर बैद्यजी बोले, 'बाबू, ऊपर जयहिंद लिख देना और यह जो जगह बच रही है, इसमें एक ओर द्राक्षासव की बोतल, दूसरी ओर खरल की तसवीर...आर्ट हमारे पास मिडिल तक था लेकिन यह तो हाथ सधने की बात है।'

चंदर कुछ ऊँघ रहा था। खामखा पकड़ गया। लिखावट अच्छी हो का यह पुरस्कार उसकी समझ नहीं आ रहा था। बोला, 'किसी पेंटर से बनवाते ..अच्छा-खासा लिख देता, वो बात नहीं आएगी...अपना पसीना पोंछते हुए उसने कूची नीचे रख दी।

पाँच रुपए माँगता था बाबू...दो लाइनों के पाँच रुपए। अब अपनी मेहनत के साथ यह साइनबोर्ड दस-बारह आने का पड़ा। ये रंग एक मरीज़ दे गया। बिजली कंपनी का पेंटर बदहज़मी से परेशान था। दो खुराकें बनाकर दे दीं, पैसे नहीं लिए। सो वह दो-तीन रंग और थोड़ी-सी बार्निश दे गया। दो बक्से रँग गए ..यह बोट बन गया और अकाध कुर्सी रँग जाएगी...तुम बस इतना लिख दो, लाल रंग का शेड हम देते रहेंगे...हाशिया तिरंगा खिलेगा ?' वैद्यजी ने पूछा और स्वयं स्वीकृति भी दे दी।

चंदर गर्मी से परेशान था। जैसे-जैसे दोपहरी नज़दीक आती जा रही थी, सड़क पर धूल और लू का ज़ोर बढ़ता जा रहा था, मुलाहिज़े में चंदर मना नहीं कर पाया। पंखे से अपनी पीठ खुजलाते हुए बैद्यजी ने उजरत के काम वाले , पटवारियों के बड़े-बड़े रजिस्टर निकालकर फैलाना शुरू किए ।

सूरज की तपिश से बचने के लिए दुकान का एक किवाड़ा भेड़कर बैद्यजी खाली रजिस्टरों पर खसरा-खतौनियों से नकल करने लगे। चंदर ने अपना पिंड छुड़ाने के लिए पूछा,'ये सब क्या है वैद्यजी ?'

वैद्य जी का चेहरा उतर गया, बोले,'खाली बैठने से अच्छा है कुछ काम किया जाए, नए लेखपालों को काम-धाम आता नहीं, रोज़ कानूनगो या नायब साहब से झाड़ें पड़ती हैं... झक मारके उन लोगों को यह काम उजरत पर कराना पड़ता है। उब पुराने घाघ पटवारी कहाँ रहे, जिनके पेट में गँवई कानून बसता था। रोटियाँ छिन गईं बेचारों की; लेकिन सही पूछो तो अब भी सारा काम पुराने पटवारी ही ढो रहे है। नए लेखपालों की तनख्वाह का सारा रूपया इसी उजरत में निकल जाता है। पेट उनका भी है...तिया-पाँचा करके किसानों से निकाल लाते हैं। लाएँ न तो खाएँ क्या। दो-तीन लेखपाल अपने हैं, उन्हीं से कभी-कभार हलका-भारी काम मिल जाता है । नकल का काम, रजिस्टर भरते हैं ।

बाहर सड़क वीरान होती जा रही थी । दफ्तर के बाबू लोग जा चुके थे। सामने चुंगी में खस की टट्टियों पर छिड़काव शुरु हो गया। दूर हरहराते पीपल का शोर लू के साथ आ रहा था। तभी एक आदमी ने किवाड़ से भीतर झाँका। वैद्यजी की बात, जो शायद क्षण-दो क्षण बाद दर्द से बोझिल हो जाती, रुक गई। उनकी निगाह ने आदमी को पहचाना और वे सतर्क हो गए । फौरन बोले, 'एक बोट आगरा से बनवाया है, जब तक नहीं आता, इसी से काम चलेगा; फुर्सत कहाँ मिलती है जो इस सब में सिर खपाएँ.....' और एकदम व्यस्त होते हुए उन्होंने उस आदमी से प्रश्न किया, 'कहो भाई, क्या बात है ?'

डाकदरी सरटीफिकेट चाहिए.... कोसमा टेशन पर खलासी हैंगे साब।' रेलवे की नीली वर्दी पहने वह खलासी बोला।

उसकी ज़रुरत का पूरा अंदाज़ करते हुए वैद्यजी बोले, 'हाँ, किस तारीख से कब तक का चाहिए।'

पंद्रह दिन पहले आए थे साब, सात दिन को और चाहिए।' कुछ हिसाब जोड़कर वैद्यजी बोले, 'देखो भाई, सर्टीफिकेट पक्का करके देंगे, सरकार का रजिस्टर नंबर देंगे, रुपैया चार लगेंगे ।' वैद्यजी ने जैसे खुद चार रुपए पर उसके भड़क जाने का अहसास करते हुए कहा, 'अगर पिछला न लो तो दो रुपये में काम चल जाएगा....'

खलासी निराश हो गया । लेकिन उसकी

निराशा से अधिक गहन हताशा वैद्यजी के पसीने से नम मुख पर व्याप गई । बड़े निरपेक्ष भाव से खलासी बोला, 'सोबरन सिंह ने आपके पास भेजा था।' उसके कहने से कुछ ऐसा लगा जैसे यह उसका काम न होकर सोबरन सिंह का काम हो। पर वैद्यजी के हाथ नब्ज़ आ गई, बोले, 'वो हम पहले ही समझ रहे थे। बगैर जान-पहचान के हम देते भी नहीं, इज़्ज़त का सवाल है । हमें क्या मालूम तुम कहाँ रहे, क्या करते रहे ? अब सोचने की बात है.... विश्वास पर जोखिम उठा लेंगे..... पंद्रह दिन पहले से तुम्हारा नाम रजिस्टर में चढ़ाएँगे, रोग लिखेंगे... हर तारीख पर नाम चढ़ाएँगे तब कहीं काम बनेगा। ऐसे घर की खेती नहीं है...' कहते-कहते उन्होंने चंदर की ओर मदद के लिए ताका। चंदर ने साथ दिया, 'अब उन्हें क्या पता कि तुम बीमार रहे कि डाका डालते रहे... सरकारी मामला है.....'

पाँच से कम में दुनिया-छोर का डॉक्टर नहीं दे सकता.....' कहते-कहते वैद्यजी ने सामने रखा लेखपाल वाला रजिस्टर खिसकाते हुए जोश से कहा, 'अरे, दम मारने को फुर्सत नहीं है। ये देखो, देखते हो नाम..... । एक-एक रोगी का नाम, मर्ज, आमदनी.... उन्हीं में तुम्हारा नाम चढ़ाना पड़ेगा । अब बताओ कि मरीजों को देखना ज़्यादा ज़रुरी है कि दो-चार रुपए के लिए सर्टीफिकेट देकर इस सरकारी पचड़े में फँसना।' कहते हुए उन्होंने तहसील वाला रजिस्टर एकदम बंद करके सामने से हटा दिया और केवल उपकार कर सकने के लिए तैयार होने जैसी मुद्रा बनाकर कलम से कान करोदने लगे ।

रेलवे का खलासी एक मिनट तक बैठा कुछ सोचता रहा। और वैद्यजी को सिर झुकाए अपने काम में मशगूल देख दुकान से नीचे उतर गया। एकदम वैद्यजी ने अपनी गलती महसूस की, लगा उन्होंने बात गलत जगह तोड़ दी और ऐसी तोड़ी कि टूट ही गई । एकाएक कुछ समझ में न आया, तो उसे पुकारकर बोले, 'अरे सुनो, ठाकुर सोबरन सिंह से हमारी जैरामजी की कह देना....उनके बाल-बच्चे तो राजी खुशी है ?'

हाँ सब ठीक-ठाक है।' रुककर खलासी ने कहा । उसे सुनाते हुए वैद्यजी चंदर से बोले, 'दस गाँव-शहर के ठाकुर सोबरन सिंह इलाज के लिए यहीं आते हैं । भई, उनके लिए हम भी हमेशा हाजिर रहे.....' चंदर ने बोर्ड पर आखिरी अक्षर समाप्त करते हुए पूछा, 'चला गया' लौट-फिर के आएगा... --वैद्य जी ने जैसे अपने को समझाया, पर उसके वापस आने की अनिवार्यता पर विश्वास करते हुए बोले-- गँवई गाँव के वैद्य और वकील एक ही होते हैं। सोबरन सिंह ने अगर हमारा नाम उसे बताया है तो ज़रुर वापस आएगा... गाँव वालों की मुर्री ज़रा मुश्किल से खुलती है। कहीं बैठके सोचे-समझेगा, तब आएगा...

और कहीं से ले लिया, तो? --चंदर ने कहा तो वैद्य जी ने बात काट दी-- नहीं, नहीं बाबू । --कहते हुए उन्होंने बोर्ड की ओर देखा और प्रशंसा से भरकर बोले-- वाह भाई चंदर बाबू! साइनबोट जँच गया....काम चलेगा। ये पाँच रुपए पेंटर को देकर मरीजों से वसूल करना पड़ता। इक्का-घोड़ा और ये खर्चा! बात एक है। चाहे नाक सामने से पकड़ लो, चाहे घुमाकर। सैयदअली के हाथ का लिखा बोट रोगियों को चंगा तो कर नहीं देता । अपनी-अपनी समझ की बात है । --कहते हुए वे धीरे से हँस पड़े। पता नहीं, वे अपनी बात समझकर अपने पर हँसे थे या दूसरों पर।

तभी एक आदमी ने प्रवेश किया। सहसा लगा कि खलासी आ गया। पर वह पांडु रोगी था। देखते ही वैद्यजी के मुख पर संतोष चमक आया। वे भीतर गए। एक तावीज़ लाते हुए बोले, 'अब इसका असर देखो । बीस-पच्चीस रोज़ में इसका चमत्कार दिखाई पड़ेगा ।' पांडु-रोगी की बाँह में तावीज़ बाँधकर और उसके कुछ आने पैसे जेब में डालकर वे गंभीर होकर बैठ गए । रोगी चला गया तो बोले, 'यह विद्या भी हमारे पिताजी के पास थी। उनकी लिखी पुस्तकें पड़ी हैं... बहुत सोचता हूँ, उन्हें फिर से नकल कर लूँ..... बड़े अनुभव की बातें हैं। विश्वास की बात है, बाबू! एक चुटकी धूल से आदमी चंगा हो सकता है। होम्योपैथिक और भला क्या है ? एक चुटकी शक्कर। जिस पर विश्वास जम जाए, बस ।'

चंदर ने चलते हुए कहा-- एब तो औषधालय बंद करने का समय हो गया, खाना खाने नहीं जाइएगा ? तुम चलो, हम दम-पाँच मिनट बाद आएँगे। --वैद्यजी ने तहसील वाला काम अपने आगे सरका लिया। दुकान का दरवाज़ा भटखुला करके बैठ गए । बाहर धूप की ओर देखकर दृष्टि चौंधिया जाती थी ।

बगल वाले दुकानदार बच्चनलाल ने दुकान बंद करके, घर जाते हुए वैद्यजी की दुकान खुली देखकर पूछा-- आप खाना खाने नहीं गए...

हाँ, ऐसे ही एक ज़रुरी काम है । अभी थोड़ी देर में चले जाएँगे। --वैद्य जी ने कहा और ज़मीन पर चटाई बिछाई; रजिस्टर मेज़ से उठाकर नीचे फैला लिए। लेकिन गर्मी तो गर्मी... पसीना थमता ही न था। रह-रहकर पंखा झलते, फिर नकल करने लगते। कुछ देर मन मारकर काम किया पर हिम्मत छूट गई। उठकर पुरानी धूल पड़ी शीशियाँ झाड़ने लगे। उन्हें लाइन से लगाया। लेकिन गर्मी की दोपहर.... समय स्थिर लगता था। एक बार उन्होंने किवाड़ों के बीच से मुँह निकालकर सड़क की ओर निहारा। एकाध लोग नज़र आए। उन आते-जाते लोगों की उपस्थिति से बड़ा सहारा मिल गया। भीतर आए, बोर्ड का तार सीधा किया और दुकान ने सामने लटका दिया। धन्वंतरि औषधालय का बोर्ड दुकान की गरदन में तावीज़ की तरह लटक गया।

कुछ समय और बीता। आखिर उन्होंने हिम्मत की। एक लोटा पानी पिया और जाँझों तक धोती सरका कर मुस्तैदी से काम में जूट गए। बाहर कुछ आहट हुई । चिंता से उन्होंने देखा।

आज आराम करने नहीं गए वैद्य जी। घर जाते हुए जान-पहचान के दुकानदार ने पूछा।

बस जाने की सोच रहा हूँ... कुछ काम पसर गया था, सोचा, करता चलूँ... कहकर वैद्य जी दीवार से पीठ टिका कर बैठ गए। कुरता उतारकर एक ओर रख दिया। इकहरी छत की दुकान आँवे-सी तप रही थी । वैद्यजी की आँखें बुरी तरह नींद से बोझिल हो रही थी। एक झपकी आ गई....कुछ समय ज़रुर बीत गया था। नहीं रहा गया तो रजिस्टरों का तकिया बनाकर उन्होंने पीठ सीधी की। पर नींद....आती और चली जाती, न जाने क्या हो गया था।

सहसा एक आहट ने उन्हें चौंका दिया। आँखें खोलते हुए वे उठकर बैठ गए। बच्चनलाल दोपहर बिताकर वापस आ गया था । अरे, आज आप अभी तक गए ही नहीं... उसने कहा । वैद्य जी ज़ोर-ज़ोर से पंखा झलने लगे। बच्चनलाल ने दुकान से उतरते हुए पूछा-- किसी का इंतज़ार है क्या ? हाँ, एक मरीज़ आने को कह गया था... अभी तक आया नहीं --वैद्य जी ने बच्चनलाल को जाते देखा तो बात बीच में ही तोड़कर चुप हो गए और अपना पसीना पोंछने लगे। ■

-कमलेश्वर

॥ श्रीमद् भागवत ॥
कथा
3 से 9
अप्रैल
2026
दोपहर 2 से सायं 6 बजे
गोप- भरवली
बक्सर, बिहार
आयोजक : श्री अशोक पाण्डेय (भोलानाथ)
कथा का सीधा प्रसारण देखिये
YouTube | LIVE
कथा व्यास
आचार्य श्री मारुति नन्दन जी महाराज
संपर्क सूत्र - 9793329021

अधूरी कहानी...

अप्रैल की दोपहर थी। धूप तेज थी, लेकिन हवा में एक अजीब सी बेचैनी भी थी–जैसे मौसम को खुद पता हो कि शाम को बारिश होने वाली है। पुराने शहर की तंग गलियों में लोगों की रोज़मर्रा की ज़िंदगी चल रही थी। चाय की दुकानों से उठती भाप, साइकिलों की घंटियाँ और कहीं-कहीं बच्चों की हँसी।

इन्हीं गलियों के बीच एक छोटा सा पुराना पुस्तकालय था। लकड़ी की अलमारियों में भरी किताबें, जिनकी खुशबू समय के साथ और गहरी हो गई थी। इस पुस्तकालय को चलाता था आदित्य। आदित्य उम्र में लगभग पैंतीस का था। शांत, कम बोलने वाला और किताबों की दुनिया में खोया रहने वाला इंसान।

लोग कहते थे कि वह पहले बहुत हँसमुख था, लेकिन पिछले कुछ सालों में वह बदल गया।

क्यों बदला?

यह कोई ठीक से नहीं जानता था।

उस दिन दोपहर में पुस्तकालय का दरवाज़ा धीरे से खुला।

अंदर आई एक लड़की–नैना।

उसकी आँखों में एक अजीब सी चमक थी, जैसे वह दुनिया को बहुत ध्यान से देखती हो।

'क्या यहाँ पुराने उपन्यास मिलेंगे?' उसने धीरे से पूछा।

आदित्य ने सिर उठाया।

किसी अजनबी को देखकर वह आमतौर पर ज्यादा बात नहीं करता था।

'मिलेंगे,' उसने छोटा सा जवाब दिया।

नैना अलमारियों के बीच घूमने लगी।

वह हर किताब को ऐसे देख रही थी जैसे कोई पुराने खज़ाने को ढूँढ रहा हो।

कुछ देर बाद उसने एक किताब उठाई।

'ये कितने की है?' उसने पूछा।

आदित्य मुस्कुराया।

'ये बिकाऊ नहीं है...पढ़ने के लिए है।'

नैना हल्का सा हँस पड़ी।

'अच्छा है... आजकल लोग किताबें पढ़ने से ज्यादा बेचने में विश्वास रखते हैं।'

आदित्य ने पहली बार उसे ध्यान से देखा।

उसकी बात में हल्की सी सच्चाई थी।

'आप नई हैं इस शहर में?' आदित्य ने पूछा।

'हाँ,' नैना ने कहा, 'मैं यहाँ स्कूल में पढ़ाने आई हूँ।'

नैना लगभग हर शाम पुस्तकालय आने लगी। कभी किसी उपन्यास के बहाने, कभी किसी कविता की किताब के लिए। लेकिन सच यह था कि अब उसका उद्देश्य केवल किताबें नहीं रह गया था। और शायद आदित्य भी यह समझने लगा था।

पुस्तकालय के बाहर अप्रैल की शामें धीरे-धीरे बदल रही थीं। गर्मी की शुरुआत हो चुकी थी, लेकिन शाम को हवा में अभी भी हल्की ठंडक बची हुई थी। नैना अलमारी से किताब निकालते हुए बोली– 'आपने कभी सोचा है कि कुछ लोग किताबों जैसे होते हैं?'

MONAD UNIVERSITY
Established by UP State Govt. Act 23 of 2010
& U/S 2 (f) of U.G.C. Act 1956
Recognized & Approved by : UGC | UP Govt. | PCI | BCI | NCTE | AIU
आज़ादी का अमृत महोत्सव
बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ

शिक्षित महिला - सशक्त भारत
ADMISSIONS OPEN 2024-25

काजल फुट वेयर
हमारे यहां सभी प्रकार के फुटवेयर उपलब्ध है
कर्जत स्टेशन के पास (वेस्ट)
स्पेशल ऑफर के साथ

बात यहीं खत्म हो सकती थी।

लेकिन अजीब बात यह थी कि दोनों के बीच एक अजीब सा सन्नाटा बन गया–ऐसा सन्नाटा जो असहज नहीं था।

जैसे दोनों के पास बहुत कुछ कहने को हो, लेकिन शब्द अभी तैयार न हों।

तभी बाहर तेज हवा चलने लगी।

कुछ ही मिनटों में आसमान पर काले बादल छा गए। और फिर...

अचानक बारिश शुरू हो गई।

नैना खिड़की के पास जाकर खड़ी हो गई।

'मुझे बारिश बहुत पसंद है,' उसने धीरे से कहा।

आदित्य चुप रहा।

बारिश की आवाज़ कमरे में भर गई।

कुछ पल बाद आदित्य बोला–

'कभी-कभी बारिश अधूरी कहानियों की तरह होती है।'

नैना ने मुड़कर उसकी तरफ देखा।

'मतलब?'

आदित्य कुछ पल चुप रहा, फिर बोला–

'कभी बारिश शुरू तो होती है...

लेकिन पूरी नहीं हो पाती।'

उसकी आवाज़ में एक अजीब सा दर्द था।

नैना ने महसूस किया कि इस आदमी की कहानी अभी खत्म नहीं हुई है–शायद शुरू ही नहीं हुई।

बारिश धीरे-धीरे तेज होती जा रही थी।

और उसी बारिश के बीच दो अजनबी लोगों की ज़िंदगी की कहानी भी धीरे-धीरे शुरू हो रही थी। लेकिन दोनों को यह नहीं पता था कि यह कहानी उन्हें कहाँ ले जाएगी।

क्योंकि हर प्रेम कहानी का अंत सुखद नहीं होता... कुछ कहानियाँ सिर्फ सिखाने के लिए होती हैं। और शायद यह भी ऐसी ही एक कहानी थी। अगले कुछ दिनों में एक अजीब सी बात होने लगी।

नैना लगभग हर शाम पुस्तकालय आने लगी।

कभी किसी उपन्यास के बहाने, कभी किसी कविता की किताब के लिए। लेकिन सच यह था कि अब उसका उद्देश्य केवल किताबें नहीं रह गया था। और शायद आदित्य भी यह समझने लगा था।

पुस्तकालय के बाहर अप्रैल की शामें धीरे-धीरे बदल रही थीं। गर्मी की शुरुआत हो चुकी थी, लेकिन शाम को हवा में अभी भी हल्की ठंडक बची हुई थी।

नैना अलमारी से किताब निकालते हुए बोली–

'आपने कभी सोचा है कि कुछ लोग किताबों जैसे होते हैं?'

आदित्य ने चश्मा ठीक करते हुए पूछा–

'किताबों जैसे?'

'हाँ,' नैना मुस्कुराई,

'पहली नज़र में साधारण लगते हैं, लेकिन जैसे-जैसे उन्हें पढ़ते जाओ, उनकी गहराई बढ़ती जाती है।'

आदित्य हल्का सा मुस्कुराया, लेकिन उसने जवाब नहीं दिया।

असल में, वह खुद भी महसूस कर रहा था कि नैना का आना अब उसे अच्छा लगने लगा है।

पहले वह शाम होते ही पुस्तकालय बंद कर देता था।

अब वह अनजाने में थोड़ा देर तक इंतज़ार करने लगा था।

एक दिन नैना ने अचानक पूछा–

'आपने शादी क्यों नहीं की?'

सवाल अचानक था।

आदित्य कुछ पल चुप रहा।

उसने खिड़की के बाहर देखा,

जैसे जवाब वहीं कहीं छिपा हो।

'हर कहानी का अंत शादी नहीं होता,

' उसने धीमे स्वर में कहा।

नैना ने महसूस किया कि यह सिर्फ एक सामान्य जवाब नहीं था।

उसके पीछे कुछ छिपा हुआ था।

'अगर आप बताना न चाहें तो मत बताइए,' नैना ने धीरे से कहा।

आदित्य कुछ देर चुप रहा।

फिर वह धीरे-धीरे बोलने लगा।

'आज से करीब दस साल पहले...

इस पुस्तकालय में कोई और भी आया करती थी।'

नैना चुपचाप सुन रही थी।

'उसका नाम रिया था,' आदित्य ने कहा।

उसकी आवाज़ में एक हल्की सी कंपन थी।

'वह भी किताबों की बहुत शौकीन थी। हर हफ्ते नई किताब ले जाती थी। धीरे-धीरे हमारी बातें बढ़ने लगीं।

किताबों से शुरू हुई बातें...

ज़िंदगी तक पहुँच गईं।'

पुस्तकालय में एक गहरा सन्नाटा फैल गया।

'हमने सोचा था कि शादी करेंगे,

' आदित्य ने कहा।

'फिर क्या हुआ?' नैना ने धीरे से पूछा।

आदित्य ने गहरी साँस ली।

'एक दिन रिया अपने घर जा रही थी... रास्ते में उसका एक्सीडेंट हो गया।'

नैना का दिल जैसे एक पल के लिए रुक गया।

'डॉक्टरों ने बहुत कोशिश की... लेकिन वह बच नहीं सकी।'

कमरे में कुछ देर तक सिर्फ घड़ी की टिक-

Ram Creations
Jewelry & Gifts
28974 Orchard Lake Rd, Farmington Hills | ramcreations.com | (248) 851-1400

WORLD PLAYER
WORLD PLAYER MENSWEAR
MEGABUY ₹149-499
SAVE ₹ 100
MENS 100% CORDUROY 16 WALE WASHED SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS 100% COTTON SEMI FORMAL SHIRTS
MRP ₹ 599
MEGABUY ₹ 499
SAVE ₹ 100
MENS FORMAL TROUSERS
MRP ₹ 699
MEGABUY ₹ 599

टिक सुनाई देती रही।

आदित्य की आँखों में नमी थी, लेकिन उसने आँसू गिरने नहीं दिए।

'उसके बाद... सब कुछ बदल गया,' उसने कहा।

'मैंने खुद को किताबों में छुपा लिया।

लोगों से मिलना कम कर दिया।'

नैना को अचानक समझ में आ गया कि आदित्य इतना चुप क्यों रहता है।

उसके जीवन में सिर्फ एक प्रेम कहानी थी– और वह अधूरी रह गई थी।

कुछ देर बाद नैना धीरे से बोली–

'लेकिन क्या ज़िंदगी सिर्फ एक ही कहानी लिखती है?'

आदित्य ने उसकी तरफ देखा।

उसके सवाल में एक सच्चाई थी।

नैना आगे बोली–

'कभी-कभी भगवान हमें दूसरी कहानी भी देता है... ताकि हम जीना फिर से सीख सकें।'

आदित्य ने कोई जवाब नहीं दिया।

लेकिन उसके मन में जैसे कोई बंद दरवाज़ा हल्का सा खुल गया था।

उस शाम जब नैना पुस्तकालय से बाहर निकली तो आसमान बिल्कुल साफ था।

बारिश नहीं थी।

लेकिन हवा में फिर भी वही एहसास था–

जैसे कोई नई कहानी धीरे-धीरे जन्म ले रही हो।

और शायद इस बार यह कहानी

अधूरी न रहे।

लेकिन ज़िंदगी इतनी आसान भी नहीं होती।

क्योंकि कभी-कभी

अतीत सिर्फ याद बनकर नहीं रहता...

वह वापस भी आ जाता है।

और जब अतीत लौटता है

तो वह वर्तमान को बदल देता है।

समय धीरे-धीरे आगे बढ़ रहा था।

अब नैना का पुस्तकालय आना केवल आदत नहीं, आदित्य के दिन का एक जरूरी हिस्सा बन गया था।

दोनों के बीच बातें भी अब पहले से अधिक खुलने लगी थीं।

कभी कविता, कभी ज़िंदगी, कभी सपनों पर चर्चा।

नैना की हँसी से पुस्तकालय का सन्नाटा जैसे थोड़ा हल्का हो जाता था।

और आदित्य...

जो कभी लोगों से दूर रहता था, अब खुद को थोड़ा बदलता हुआ महसूस कर रहा था।

एक शाम नैना ने कहा–

'आप जानते हैं, मैंने बचपन में एक सपना देखा था।'

आदित्य ने पूछा–

'कैसा सपना?'

'मैं एक दिन ऐसा घर बनाना चाहती हूँ जहाँ बहुत सारी किताबें हो... और लोग आकर उन्हें पढ़ सकें।'

आदित्य मुस्कुराया।

'तो आप वही सपना पूरा कर रही हैं। यह पुस्तकालय तो वैसे ही है।'

नैना ने उसकी तरफ देखा।

'लेकिन यह आपका सपना है... मेरा नहीं।'

उसकी आँखों में एक अनकही बात थी।

आदित्य उस नजर को समझने लगा था, लेकिन शायद अभी स्वीकार करने से डरता था।

उसी समय पुस्तकालय का दरवाज़ा खुला।

अंदर एक बुजुर्ग व्यक्ति आए।

'क्या आप आदित्य हैं?' उन्होंने पूछा।

'जी,' आदित्य ने जवाब दिया।

उन्होंने एक पुराना लिफाफा उसके हाथ में दिया।

'यह आपके लिए है।'

आदित्य ने लिफाफा खोला।

अंदर एक पत्र था।

पत्र पढ़ते ही उसका चेहरा अचानक बदल गया।

नैना ने महसूस किया कि कुछ ठीक नहीं है।

'क्या हुआ?' उसने पूछा।

आदित्य ने धीरे से कहा–

'यह... रिया के घर से आया है।'

नैना चौंक गई।

'लेकिन इतने साल बाद?'

आदित्य ने पत्र फिर से पढ़ा।

पत्र में लिखा था कि रिया की माँ बहुत बीमार हैं और वह आदित्य से मिलना चाहती हैं।

कई सालों से वह उससे मिलना चाहती थीं, लेकिन हिम्मत नहीं जुटा पाईं।

अब शायद समय कम था।

आदित्य का मन अचानक अतीत में चला गया।

रिया की हँसी...

उसकी बातें...

और वह आखिरी दिन।

इतने सालों बाद भी कुछ घाव वैसे ही थे।

नैना चुपचाप उसे देख रही थी।

कुछ देर बाद उसने धीरे से कहा–

'आपको जाना चाहिए।'

आदित्य ने उसकी तरफ देखा।

'क्यों?'

नैना ने शांत स्वर में कहा–

'क्योंकि कुछ रिश्ते अधूरे रह जाएँ तो मन

Good Vibes Onion Hairfall Control Oil I Strengthening I Hair Growth I No Parabens, No Sulphates, No Mineral Oil, No Animal Testing (100 ml)

Good Vibes Argan Oil Hairfall Control Vitalizing Serum I Frizz Control, Shine, Stregthening I No Parabens, No Sulphates, No Animal Testing (50 ml)

स्वर्णिम मुंबई

प्रतियोगिता नंबर-107

सभी के लिए सुनहरा अवसर!

दीजिए आसान से सवालों का जवाब और

जीतिये 2,000/- का नकद इनाम!

१. लक्षदीप की राजधानी है

२. महाराष्ट्र में सर्वाधिक मात्रा में पाई जाने वाली उपलब्ध मृदा का प्रकार है-

३. प्रसिद्ध शिलोत्कीर्ण (पत्थर काटकर बनाया गया) कैलाश मन्दिर कहाँ स्थित है?

४. हरित क्रांति का अर्थ है -

५. भू-रक्षण को नियंत्रित किया जा सकता है-

६. जम्मू और कश्मीर का रेलपथ किस रेलवे जॉन के अंतर्गत आता है?

७. भारत के किस राज्य में कन्नड़ भाषा बोली जाती है ।

८. संघ शासित प्रदेश अंडमान निकोबार द्वीप समूह की राजधानी कौन सी राज्य है।

९. विख्यात महाकाव्य 'महाभारत' के रचयिता कौन है?

१०. 'गीतांजलि' के कवि हैं -

११. किन दो स्थानों के बीच हिमसागर एक्सप्रेस चलती है?

१२. 'जनरल' किस सेना का एक अधिकारी पद है?

१३. भारत के किस राज्य में पवित्र तीर्थस्थल 'अमरनाथ' स्थित है?

१४. विख्यात पर्यटन-स्थल 'गुलमर्ग' भारत के किस क्षेत्र में स्थित है?

१५. रेल पथ के नैरो गेज की चौड़ाई होती है-

१६. किस देश को 'उगते हुए सूरज की भूमि' कहाँ जाता है?

१७. कौन सा शहर मध्य प्रदेश की राजधानी है?

१८. किस राज्य में मलयालम भाषा बोली जाती है

१९. चंडीगढ़ का रॉक गार्डन (शैल उद्यान) किसने बनाया था?

२०. जम्मू किस नदी के किनारे स्थित है -

आपके द्वारा सही जवाब की पहेली इस माह की २५ तारीख तक डाक द्वारा हमारे कार्यालय में पहुंच जानी चाहिए। भरी गयी पहेली का रिजल्ट लॉटरी सिस्टम द्वारा निकाला जाएगा। विजेता के नाम और सही हल अगले माह के अंक में प्रकाशित किये जाएंगे। परिजन विजेता बच्चे का फोटो व उसका पहचान पत्र लेकर हमारे कार्यालय में आएं और मुंबई के बाहर रहने वाले विजेता अपने पहचान पत्र की सत्यापित प्रति डाक या मेल से निम्न पते पर भेजें।

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station
Kalyan (W) , Dist: Thane,
PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website: swarnimumbai.com

नामः .....

पूरा पताः .....

.....

.....

फोन नं.: .....

ई-मेलः .....

हमेशा बोझ लेकर जीता है।'

आदित्य कुछ पल सोचता रहा।

फिर उसने तय किया कि वह जाएगा।

अगले दिन वह रिया के घर पहुँचा।

घर पहले जैसा ही था, लेकिन अब उसमें एक अजीब सी खामोशी थी।

रिया की माँ बिस्तर पर लेटी थीं।

आदित्य को देखते ही उनकी आँखों में आँसू आ गए।

'तुम इतने सालों बाद आए...' उन्होंने धीमी आवाज़ में कहा।

आदित्य के पास कोई जवाब नहीं था।

कुछ देर बाद उन्होंने एक छोटा सा डिब्बा उसे दिया।

'यह रिया ने तुम्हारे लिए रखा था,' उन्होंने कहा। आदित्य के हाथ काँपने लगे।

उसने डिब्बा खोला।

अंदर एक छोटी सी डायरी थी।

डायरी के पहले पन्ने पर लिखा था–

'अगर कभी आदित्य यह पढ़े... तो उसे कहना कि वह ज़िंदगी से भागे नहीं।'

आदित्य की आँखें नम हो गईं।

उसने आगे पढ़ा–

'अगर मैं कभी उसके साथ न रह सकूँ...

तो भी मैं चाहूँगी कि वह फिर से प्यार करे।

क्योंकि सच्चा प्यार किसी एक इंसान के जाने से खत्म नहीं होता।'

उस क्षण जैसे आदित्य के अंदर कुछ टूटकर फिर से जुड़ गया।

उसे पहली बार लगा कि शायद वह इतने सालों से गलत कर रहा था।

वह सिर्फ यादों को पकड़कर बैठा हुआ था।

जब वह शाम को वापस पुस्तकालय पहुँचा तो नैना वहाँ खड़ी थी।

जैसे उसे पहले से पता हो कि वह आएगा।

आदित्य ने उसकी तरफ देखा।

उसकी आँखों में पहली बार एक नई चमक थी।

'नैना,' उसने धीरे से कहा,

'शायद तुम सही कहती थीं... ज़िंदगी दूसरी कहानी भी लिखती है।'

नैना मुस्कुराई।

लेकिन उसी पल उसके फोन की घंटी बज उठी। उसने कॉल उठाया।

कुछ सेकंड बाद उसका चेहरा अचानक बदल गया।

'क्या हुआ?' आदित्य ने पूछा।

नैना ने धीमी आवाज़ में कहा–

'मेरा ट्रांसफर हो गया है... अगले हफ्ते मुझे यह शहर छोड़ना होगा।'

यह सुनकर जैसे समय एक पल के लिए रुक गया।

आदित्य कुछ बोल नहीं पाया।

जिस कहानी ने अभी शुरू होने की हिम्मत की थी... क्या वह फिर से अधूरी रह जाएगी?■

- माला झा

बुद्धिमानी कर देती है हर समस्या का हल

मध्य पूर्वी देश से एक ईरानी शेख व्यापारी महाराज कृष्णदेव राय का अतिथि बन कर आता है। महाराज अपने अतिथि का सत्कार बड़े भव्य तरीके से करते हैं और उसके अच्छे खाने व रहने का प्रबंध करते हैं तथा साथ ही कई अन्य सुविधाएं भी प्रदान करते हैं। एक दिन भोजन पर महाराज का रसोइया शेख व्यापारी के लिए रसगल्ले बना कर लाता है। व्यापारी कहता है कि उसे रसगल्ले हीं खाने हैं पर हो सके तो उन्हें रसगुल्ले की जड़ क्या है यह बताएं।

रसोइया सोच में पड़ जाता है और अवसर आने पर महाराज कृष्णदेव राय को व्यापारी की मांग बताता है। महाराज रसगुल्ले की जड़ पकडने के लिए अपने चतुर मंत्री तेनाली राम को बुलाते हैं। तेनाली राम झट से रसगुल्ले की जड़ खोजने की चुनौती का प्रस्ताव स्वीकार कर लेते हैं। वह एक खाली कटोरे और धारदार छुरी की मांग करते हैं तथा महाराज से एक दिन का समय मांगते हैं। अगले दिन वह रसगुल्ले की जड़ के टुकड़ों से भरे कटोरे को मलमल के कपड़े से ढंककर लाकर राज दरबार में बैठे ईरानी शेख व्यापारी को देते हैं और उसे कपड़ा हटा कर रसगुल्ले की जड़ देखने को कहते हैं।

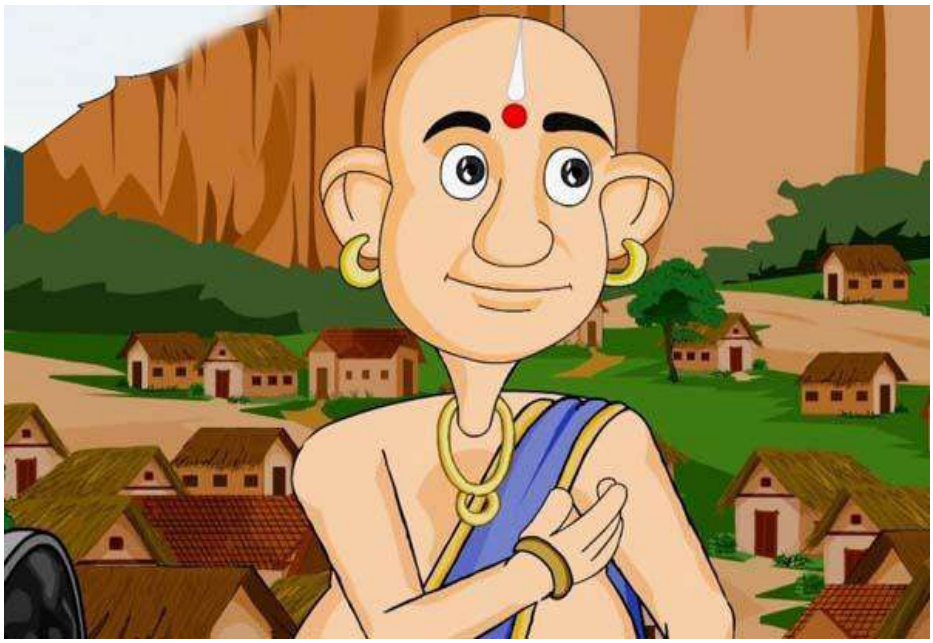

ईरानी व्यापारी कटोरे में गन्ने के टुकड़े देखकर हैरान हो जाता है और सारे दरबारी तथा महाराज कृष्णदेव राय तेनाली राम से पूछते हैं कि यह क्या है? चतुर तेनाली राम समझाते हैं कि हरेक मिठाई शक्कर से बनती है और शक्कर का स्रोत गन्ना है इसलिए रसगुल्ले की जड़ गन्ना है। तेनाली राम के इस गणित से सारे दरबारी, ईरानी व्यापारी और महाराज कृष्णदेव राय प्रफुल्लित होकर हंस पड़ते हैं और तेनाली राम के तर्क से सहमत भी होते हैं। ■

कुदरत का जादू

पी. श्रीवस्तव

पूरनमासी को चूहे ने,अपने पापा से पूछा।
आसमान में कौन लगाकर, गया बल्ब इतना ऊँचा।
अरे अरे रे पापा पापा, एक भेद हमसे बोलो।
रोज उजाला कमता जाता, क्यों ? रहस्य हमसे खोलो।
और अमावस को पापाजी,बल्ब फ्यूज क्यों हो जाता।
रात निकल जाती है सारी, बल्ब नहीं फिर जल पाता।
घटिया किसी कंपनी से,कंपनी से यह,बल्ब ख़रीदा पापाजी।
लगा रहा है रोज देश को,कौन पलीता पापाजी।
पापा बोले बल्ब नहीं यह,चन्दा प्यारा प्यारा है।
बच्चे बूढ़ों और युवाओं ,की आँखों का तारा है।
सूरज की जब पड़े रोशनी,हमें चमकता दिखता है।
अपनी चाल जगह के कारण, कमता बढ़ता रहता है।
पूर्ण रौशनी उस पर पड़ती,तो पूनम है कहलाती।
नहीं रौशनी पड़ती बिलकुल,तभी अमावस बन जाती।
प्रथमा से लेकर पूनम तक, जब वह बढ़ता जाता है।
भारत की ज्योतिष गणना में,सुदी पक्ष कहलाता है।
फिर से जब प्रथमा आती तो,चंदा घटता जाता है।
और अमावस आते आते,बदी पक्ष बन जाता है।
नहीं बल्ब यह बेटा कोई,यह कुदरत का जादू है।
इस कुदरत के जादू पर तो,नहीं किसी का काबू है।
ईश्वर की सब लीलाओं में,सत्य झलकता रहता है।
चन्दा सूरज तारे बनकर ,वही चमकता रहता है।

बूढ़ों को सन्देश

श्रीवास्तव

आज बने हैं भजिये घर में,
माँ ने तली कचौड़ी।
गंध मिली तो भोजन घर तक,
दादी आई दौड़ी ।
दादाजी भी खुश्बू पाकर,
जोरों से चिल्लाये।
गरम बने हैं भजिये तो फिर,
क्यों न मुझे भिजाये।
माँ बोली कैसे संभव है,
भजिये इन्हें खिलाना।
वैद्यराज ने दवा पत्र में,
लिखा परहेजी खाना।
दादी को भी मम्मीजी ने,
भजिये नहीं खिलाये।
बूढ़ों को क्या क्या खाना है,
नियम सभी समझाए।
है सन्देश बड़े बूढ़ों को,
सदा नियम से रहना।
तेल मसाले वाला भोजन,
सोच समझकर करना।

शासको, तुम हार रहे हो

-अर्पण कुमार

आखिर कब तक तुम हमें ठगते
और कोई कब तक चुप और निष्क्रिय
रह सकता है
किसी के ख़ौफ़नाक चेहरे से डरकर
या फिर किसी के देवत्व की महिमा तले दबकर
शासको,
बेशक तुम हमारे मालिक हो
और हम तुम्हारी प्रजा
सदियों से
तुम्हारी और हमारी पीढ़ियों के बीच
यही संबंध रहे है
मगर अब हमारी आवाज़ से
तुम्हारी अकड़ी हुई कुर्सी और
सत्ता के तुम्हारे गलियारे
दोनों कंपायमान है
तुम फटी बाँसुरी सी
हमारी बेसुरी आवाज़ को सुनना
पसंद तो ख़ैर कभी नहीं किए
मगर हम दरिद्र-नारायण
जन्म-जन्मांतर से भूखी
अपनी अंतड़ियों को पकड़कर
तुम्हारे आश्वासन की कौर
कब तक खा सकते है
और तुम्हारी प्रशंसा में नतमस्तक हो
विरुदावली कब तक गा सकते है
तुमने बड़ी चतुराई से
आज़ादी की लड़ाई में हमारी संख्या का
इस्तेमाल किया
हर मोर्चे पर हमें आगे रखा
मरवाया और कटवाया
मगर स्वतंत्रता के
सुख और अधिकार से
हमें दूर ही रखा
हाँ, मतदान का
झुनझुना पकड़ाकर
हमें सरकार के चुनाव में
भागीदार होने का
एक आत्म-भ्रम ज़रूर दिया
जिससे उबरते और निकलते
हमें साठ साल से अधिक लग गए
और आज भी हम
तुम्हारी इस मृगमरीचिका से
पूरी तरह बाहर निकल पाए हों....

Festive Collection
WELCOME THE FESTIVITIES WITH A BURST OF GLAMOUROUS COLOUR
SHOP NOW
www.festivacollection.com

अक्षय तृतीयाः भारत की असली परंपराओं का पर्व

'अक्षय' का अर्थ और आस्था का आधार
खेती-किसानी से जुड़ा असली अर्थ
दान और सेवा की परंपरा
व्यापार और नए आरंभ का दिन
सोना खरीदनाः परंपरा या ट्रेंड?

हर साल जब अक्षय तृतीया आती है, तो शहरों की चमकती दुकानों में भीड़ उमड़ पड़ती है। सोने-चांदी के विज्ञापन, ऑफर्स और खरीदारी का शोर इतना बढ़ जाता है कि इस पर्व का असली अर्थ कहीं पीछे छूट जाता है। सच यह है कि अक्षय तृतीया सिर्फ खरीदारी का दिन नहीं, बल्कि भारत की गहरी सांस्कृतिक, धार्मिक और सामाजिक परंपराओं का जीवंत प्रतीक है।

'अक्षय' का मतलब है–जो कभी समाप्त न हो। मान्यता है कि इस दिन किया गया पुण्य, दान या शुभ कार्य अनंत फल देता है। इसलिए इस दिन का संबंध सीधे भगवान विष्णु और माता लक्ष्मी की आराधना से जोड़ा जाता है। देशभर में लोग सुबह स्नान कर व्रत रखते हैं, पूजा-पाठ करते हैं और मंदिरों में दर्शन के लिए जाते हैं। कई जगहों पर हवन और सत्संग का आयोजन भी होता है।

अगर आप अक्षय तृतीया को सिर्फ सोना खरीदने का दिन समझते हैं, तो आप इसकी जड़ों को नजरअंदाज कर रहे हैं। भारत के ग्रामीण इलाकों में यह दिन नई फसल की शुरुआत का प्रतीक है। ओडिशा में इसे 'अखी मुठी अनुकुला' कहा जाता है, जहां किसान खेत में पहली बार बीज डालते हैं। इसी तरह छत्तीसगढ़ और झारखंड में भी यह दिन कृषि चक्र की शुरुआत का संकेत देता है। यह परंपरा बताती है कि भारत की असली आत्मा गांवों और खेती में बसती है, न कि शॉपिंग मॉल्स में।

अक्षय तृतीया का एक मजबूत स्तंभ है–दान।

इस दिन लोगः

भोजन (अन्नदान) करते हैं

पानी की व्यवस्था करते हैं (प्याऊ)

जरूरतमंदों को वस्त्र और धन देते हैं

देशभर में व्यापारी इस दिन को बेहद शुभ मानते हैं।

नए बिज़नेस की शुरुआत

प्रॉपर्टी खरीदना

नया काम शुरू करना

क्योंकि मान्यता है कि इस दिन शुरू किया गया काम निरंतर सफलता देता है।

आज के समय में अक्षय तृतीया का सबसे ज्यादा प्रचार 'गोल्ड शॉपिंग' के रूप में होता है। शहरों में लोग इस दिन सोना खरीदना शुभ मानते हैं। लेकिन सच्चाई यह है कि यह परंपरा उतनी पुरानी नहीं जितनी इसे बताया जाता है। यह अधिकतर आधुनिक बाजार और मार्केटिंग का प्रभाव है। अगर आप पूरे भारत की परंपराओं को देखें, तो पाएंगे किः

कहीं यह खेती की शुरुआत है

कहीं दान का पर्व

कहीं भगवान की भक्ति

और कहीं सामाजिक एकता का प्रतीक

सोना खरीदना इसका सिर्फ एक छोटा हिस्सा है, पूरा सच नहीं। अक्षय तृतीया हमें यह सिखाती है कि जीवन में स्थायी क्या है– न धन, न वस्तुएं, बल्कि कर्म, आस्था और सेवा। अगर इस दिन को सही मायनों में मनाना है, तो सिर्फ खरीदारी तक सीमित मत रहिए।

कुछ ऐसा कीजिए जो सच में 'अक्षय' हो–जो समाज, परिवार और आत्मा के लिए लंबे समय तक मूल्य पैदा करे।

-गीता सैनी

२०२६ की अक्षय तृतीया

अक्षयतृतीया के पवित्रतम दिवस से ही सत्युग और त्रेतायुग का आरंभ हुआ था। भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को स्वयं अक्षयतृतीया के महत्त्व को बताया था। अक्षयतृतीया के दिन ही द्वारकाधीश श्रीकृष्ण से मिलने के लिए उनके बाल सखा सुदामा द्वारकापुरी गये थे। भगवान जगन्नाथ के अन्यतम धाम श्रीजगन्नाथ पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ होता है। उसी दिन से जगन्नाथ भगवान की विजय प्रतिमा मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा पुरी धाम के चंदन तालाब में नौकाविहार के रुप में अनुष्ठि त होती है। अक्षयतृतीया के दिन से ही ओड़िशा के किसान अपने-अपने खेतों में जुताई-बोआई का कार्य आरंभ करते हैं।

वैशाख मास के शुक्लपक्ष की तृतीया को अक्षयतृतीया कहते हैं। २०२६ की अक्षय तृतीया १९ अप्रैल को है। अक्षयतृतीया को युगादितृतीया भी कहा जाता है। अक्षयतृतीया के पवित्रतम दिवस से ही सत्युग और त्रेतायुग का आरंभ हुआ था। भगवान श्रीकृष्ण ने धर्मराज युधिष्ठिर को स्वयं अक्षयतृतीया के महत्त्व को बताया था। अक्षयतृतीया के दिन ही द्वारकाधीश श्रीकृष्ण से मिलने के लिए उनके बाल सखा सुदामा द्वारकापुरी गये थे।

भगवान जगन्नाथ के अन्यतम धाम श्रीजगन्नाथ पुरी धाम में भगवान जगन्नाथ की विश्व प्रसिद्ध रथयात्रा के लिए नये रथों के निर्माण का कार्य आरंभ होता है। उसी दिन से जगन्नाथ भगवान की विजय प्रतिमा मदनमोहन आदि की २१ दिवसीय बाहरी चंदनयात्रा पुरी धाम के चंदन तालाब में नौकाविहार के रुप में अनुष्ठित होती है। अक्षयतृतीया के दिन से ही ओड़िशा के किसान अपने-अपने खेतों में जुताई-बोआई का कार्य आरंभ करते हैं। स्कन्द पुराण के वैष्णव खण्ड के वैशाख महात्म्य में यह स्पष्ट उल्लेख है कि जो वैष्णव भक्त अक्षयतृतीया के दिन सूर्योदयकाल में प्रातः पवित्र स्नान कर भगवान विष्णु की विधिवत पूजा करता है। उनकी कथा सुनता है वह मोक्ष को प्राप्त होता है।

ओड़िशा में प्रत्येक सनातनी भगवान जगन्नाथ को अपना इष्टदेव, गृहदेव, ग्राम्यदेव तथा राज्यदेव मानकर अक्षयतृतीया आस्था और विश्वास के साथ मनाता है। इसीलिए ओड़िशा में अक्षयतृतीया का पालन व्यक्तिगत, पारिवारिक, सामाजिक और धार्मिक रुप से स्पष्ट नजर आता है।

अक्षयतृतीया के दिन पुरी में श्रीजगन्नाथ भगवान को चने की दाल का भोग निवेदित किया जाता है। सनातनी लोग अपने पूर्वजों की आत्मा की चिर शांति हेतु अक्षयतृतीया के दिन फल-फूल आदि का दान करते हैं। जो भक्त अक्षय तृतीया के दिन सायंकाल भगवान जगन्नाथ को शर्बत निवेदित करता है वह अपने सभी पापों से शीघ्र मुक्त हो जाता है।अक्षय तृतीया के दिन भगवान श्री जगन्नाथ-कथा श्रवण एवं दान- पुण्य का अति विशिष्ट महत्त्व माना जाता है। कहते हैं कि अक्षय तृतीया के दिन जो भक्त भगवान जगन्नाथ की पूजा करता है वह अपने पूरे कुल का उद्धारकर बैकुण्ठ लोक को प्राप्त होता है।

प्रतिवर्ष अक्षयतृतीया समस्त सनातनियों को नकारात्मक सोच से बचने, क्रोध न करने, चोरी न करने, किसी का अपमान न करने, निंदारस से बचने तथा अनेकानेक लगत आचरण-व्यवहार से बचने का पावन संदेश देती है। कहा जाता है कि ऐसे दुष्कर्म करनेवाले पर उस दिन धन की देवी माता लक्ष्मी जी नाराज हो जाती हैं। इसप्रकार भगवान जगन्नाथ तथा माता लक्ष्मी को प्रसन्न करनेवाला पवित्रतम व्रत अक्षयतृतीया ही है।

-अशोक पाण्डेय

आखिर क्यों आते है सपने?

हम सपनों की परिभाषा देने की कोशिश करें तो यह कह सकते है की सपने वो तस्वीरें होती है जो हमारा दिमाग सोते समय बनाता है। सपने कैसे भी हो सकते है। डरावने, हसीन, मजाकिया, खूंखार, अजीब या और भी ऐसे प्रकार के जिसे हम परिभाषित नहीं कर सकते। सपने आने के पीछे की वजह का अभी कोई वैज्ञानिक कारण का पता नहीं लग पाया है, लेकिन सपने आने के पीछे की जो संभावित कारण वैज्ञानिकों के हिसाब से इस तरह है-

⏩ जब कोई इच्छा या आकांक्षा पूर्ण नहीं होती, तो वो सपने के रूप में आती है।

⏩ दिन भर की घटनाएं जो महत्वपूर्ण होती है, लेकिन हम जागते वक्त उस बारे में ज्यादा विचार नहीं करते लेकिन ये घटना दिमाग में होती है, वो भी सपने के रूप में आती है।

⏩ कई बार भविष्य में होने वाली घटनाओं का भी पूर्वाभास सपने में होता है।

सपनों के कुछ रोचक तथ्य-

♦ सपने में आप पढ़ नहीं सकते, वक्त नहीं बता सकते ज्यादातर लोग सपने में पढ़ नहीं पाते हैं। ऐसा घड़ी के साथ भी होता है। सपने में वक्त नहीं बता सकते। ल्यूसिड ड्रीमिंग में यह पाया गया कि सपने में दिखने वाली घड़ी की सुईयां भी गायब होती हैं।

♦ वो लोग जो जन्म से अंधे नहीं थे और किसी दुर्घटना या बिमारी के कारण अंधे हो गए, वो सपनों में चित्र देखते हैं। उनके सपने भी देख सकने वाले लोगों की तरह होते है। वो लोग जो जन्म से अंधे होते हैं, वो भी सपने देखते हैं। पर उनके सपने में कोई चित्र नहीं होता। उनके सपनों में शरीर की अन्य इन्द्रियाँ सक्रीय होती है। वो सपनों में सुगंध या दुर्गन्ध मसहूस कर सकते हैं या फिर सपने में आवाजे सुनते हैं।

♦ शोध में ये साबित हो चुका है कि इंसान सपनों में उन्ही चेहरों को देखता है, जिनको वो पहले कभी न कभी देख चुका हो। इसलिए सपने में कभी भी कोई अनजान चेहरा दिखे, तो आप ये मान लीजिये की आपने उसे पहले कभी न कभी जरूर देखा होगा। भले ही एक मिनट के लिए या एक सेकंड के लिए।

♦ शोध में पता चला है कि करीब बारह फीसदी लोगों के सपनों में कोई रंग नहीं होता। उनके सपने पचास के दशक के फिल्मों की तरह ब्लैक एण्ड व्हाइट होते है।

♦ ऐसा कई बार देखा गया है की सपने में जो देखा गया ठीक वैसा ही भविष्य में घटित

सपने कौन नहीं देखता? सपनों की दुनिया होती ही रोचक और अनोखी है। अब सवाल यह है कि ये सपने क्यों आते हैं? इन सपनों का मतहब क्या होता है? सपने की दुनिया मानव के लिए अपने आप में अजूबा है। सपनों को समझने के लिए अभी बहुत से शोध चल रहे हैं। वैज्ञानिकों, चिंतकों और विचारकों ने अपने मत भी दिए हैं। सपनों के शोध के लिए वैज्ञानिक ल्यूसिड ड्रीमिंग कराते हैं। Lucid Dreaming जिसे हिंदी में सबोधगम्य स्वप्नावस्था भी कहते है। यह अवस्था है जिसमें आदमी को पता रहता है कि वो सपना देख रहा होता है।

हुआ। सपने में कई बार लोगों ने भविष्य की झलकियां देखीं। बहुत सारे लोगों ने अपनी मृत्यु की तारीख अपने सपने के आधार पर तय कर दी और चौंका देने वाले बात यह थी उनकी मृत्यु तय तारीख को ही हुई। - अब्राहम लिंकन ने सपने में ही अपनी हत्या देख ली थी। उन्हें सपने में ही पता चला गया था की उनकी हत्या होने वाली है।

- ९/११ हमले में मारे जाने वाले बहुत से लोगों ने सपने में ही देख लिया था की ऐसा कुछ घटित होगा और उनकी मृत्यु हो जायेगी।

- मशहूर लेखक मार्क ट्वेन ने अपने सपने में अपनी भाई की मृत्यु देखी थी। और उनके भाई की मृत्यु ठीक वैसे ही हुई जैसा उन्होंने सपने में देखा था।

♦ आपको जानकर आश्चर्य होगा की कई ऐतिहासिक अविष्कार सपने की वजह से हुए हैं। आविष्कारकों को सपने से प्रेरणा मिली और उन्होंने अविष्कार कर डाले।

- गूगल सर्च इंजन- लैरी पेज
- आवर्त सारणी (पिरियोडिक टेबल) - दिमित्री मेंडेलेयेव
- अल्टरनेटिव करंट जनरेटर - टेस्ला
- सिलाई मशीन - एलिअस होव

♦ नरक का दूसरा नाम है स्लीप पैरालिसिस या निद्रा पक्षाघात। रात के दूसरे या तीसरे पहर में अचानक जागने पर हिल न पाने की स्थिति का अनुभव बहुत लोगों को हुआ है। ऐसी स्थिति में आदमी दिमाग से जागते हुए सब कुछ देखते हुए भी हिल नहीं पाते हैं ना ही कोई आवाज निकाल पाते हैं। यह बहुत हुई भयावह होता है। ऐसी स्थिति में आदमी को अपने कमरे में किसी पारलौकिक शक्ति का अनुभव होता है। ऐसा प्रतीत होता है जैसे कोई पैशाचिक शक्ति हम पर हमला करने वाली है और हम हिल-डुल भी नहीं पा रहे। स्लीप पैरालिसिस में ऐसा प्रतीत नहीं होता की ये सपना है। ये पूरी तरह से वास्तविक प्रतीत होता है। शोधकर्ताओं के अनुसार स्लीप पैरालिसिस नींद के अभाव से, जीवन में निराशा से या मन में व्याप्त किसी डर की वजह से होता है।

♦ नींद में चलने की बीमारी भी सोने से सम्बंधित होती है। किसी सपने के मध्य में उठकर असली जिंदगी में चलना विचार या कोई अन्य काम करना स्लीपवॉकिंग कहलाता

है।यह एक मनोवैज्ञानिक बीमारी है। यह बीमारी ज्यादातर बच्चों में दिखाई देती है। कम नींद की वजह से भी आदमी स्लीपवॉकिंग करता है। अगर नींद सही समय पर ठीक से ली जाए तो स्लीपवॉकिंग करने की संभावनाएं न के बराबर हो जाती हैं।

♦ पालतू जानवर भी सपने देखते हैं । किसी कुत्ते या बिल्ली को सोते देख आप पाएंगे की वो आवाजें निकालेंगे या अपने पंजे जमीन से खुरचेंगे। दरअसल वो ऐसा किसी सपने के बीच कर रहे होते हैं। ■

१. दिमाग का डेटा प्रोसेसिंग

दिन भर जो कुछ तुम देखते, सोचते, महसूस करते हो–दिमाग उसे रात में 'सॉर्ट' करता है।

सपने उसी प्रोसेस का साइड इफेक्ट हैं।

२. दबे हुए विचार और भावनाएं

जो बातें तुम दिन में दबा देते हो–टेंशन, डर, इच्छा–वो रात में सामने आती हैं।

इसलिए कई बार सपने अजीब या बेतुके लगते हैं।

३. मेमोरी मजबूत करना

रिसर्च बताती है कि नींद के दौरान दिमाग जरूरी चीज़ें सेव करता है।

सपने उसी काम का हिस्सा हो सकते हैं।

४. दिमाग की 'ट्रायल रन' सिस्टम

कभी-कभी दिमाग अलग-अलग सिचुएशन का प्रैक्टिस करता है–जैसे डरावने सपने (falling, chasing)।

यह survival mechanism से जुड़ा माना जाता है।

बथुआ की खेती

सर्दियों में बथुआ की मांग काफी बढ़ जाती है, और यह किसान के लिए एक अच्छा व्यापारिक अवसर बनता है। इसे विभिन्न स्थानीय बाजारों में बेचा जा सकता है, जिससे अच्छा लाभ प्राप्त होता है। बथुआ न केवल एक स्वादिष्ट और पौष्टिक सब्जी है, बल्कि यह स्वास्थ्य के लिए भी कई फायदे प्रदान करता है। इसके पत्तों का सेवन हमारे शरीर को आवश्यक पोषक तत्वों की आपूर्ति करता है और यह कई स्वास्थ्य समस्याओं को दूर करने में मदद करता है। हालांकि, इसके सेवन में संतुलन बनाए रखना जरूरी है, ताकि इसके किसी भी दुष्प्रभाव से बचा जा सके।

भारतीय रसोई का एक पारंपरिक साग है, जो खासकर सर्दियों में खूब खाया जाता है। साधारण दिखने वाला यह हरा पत्ता दरअसल पोषण से भरपूर होता है और गांव से लेकर शहर तक हर जगह आसानी से उपलब्ध रहता है। बथुआ न केवल स्वाद में अलग पहचान रखता है, बल्कि यह शरीर के लिए भी बेहद फायदेमंद माना जाता है। कम लागत और ज्यादा पोषण के कारण इसे देसी 'सुपरफूड' भी कहा जा सकता है। बथुआ एक पौधा है, जिसे अक्सर 'चेनोपोड' भी कहा जाता है। यह पौधा भारत में आमतौर पर पाया जाता है और खासकर सर्दियों में इसके पत्ते खाने के लिए उपयोग किए जाते हैं। बथुआ का पौधा दिखने में हरा और झाड़ीदार होता है, और इसके पत्ते चौड़े, हरे रंग के होते हैं। बथुआ का उपयोग न केवल भोजन में बल्कि औषधीय गुणों के लिए भी किया जाता है।

स्वास्थ्य के लिए लाभकारीः बथुआ के पत्ते आयरन, कैल्शियम, विटामिन ँ और ए जैसे पोषक तत्वों से भरपूर होते हैं। यह शरीर में खून की कमी को पूरा करने में मदद करता है। इसके पत्तों का सेवन हड्डियों को मजबूत बनाने में भी मदद करता है।

पाचन में सहायकः बथुआ का सेवन पाचन क्रिया को बेहतर बनाने में मदद करता है। यह कब्ज और पेट से संबंधित समस्याओं को दूर करने के लिए प्रभावी है।

बथुआ का उपयोग विभिन्न प्रकार से किया जा सकता हैः

बथुआ को साग के रूप में पकाकर खाया जाता है, जो सर्दियों में खासतौर पर लोकप्रिय होता है। इसे मसालेदार साग या सूप में डालकर सेवन किया जाता है। बथुआ को पीसकर पेस्ट बना लिया जाता है और उसे त्वचा पर लगाने से त्वचा के विकार दूर हो सकते हैं। बथुआ की पत्तियों से चटनी भी बनाई जाती है, जो खाने का स्वाद बढ़ाती है। बथुआ को अधिक सेवन से बचना चाहिए, क्योंकि इसमें ओक्सलेट्स की मात्रा अधिक हो सकती है, जो गुर्दे पर असर डाल सकते हैं। इसलिए इसे संतुलित मात्रा में ही सेवन करना चाहिए।

बथुआ एक महत्वपूर्ण और पोषक तत्वों से भरपूर पौधा है, जिसे खासतौर पर सर्दियों में उगाया जाता है। यह अत्यधिक लाभकारी साग के रूप में उपयोग होता है और इसकी खेती का खर्च भी अपेक्षाकृत कम है। बथुआ की खेती करने से किसान अच्छा लाभ प्राप्त कर सकते हैं, क्योंकि यह कम पानी और देखभाल में आसानी से उग जाता है।

बथुआ की खेती के लिए उपयुक्त जलवायु

बथुआ की खेती के लिए ठंडी जलवायु सबसे उपयुक्त मानी जाती है। यह मुख्य रूप से सर्दी के मौसम में उगता है, और इसका आदर्श तापमान १५-२०°C होता है। बथुआ को शरद

ऋतु (अक्टूबर से दिसंबर) में बोया जाता है, और यह मार्च तक तैयार हो जाता है।

बथुआ की खेती के लिए भूमि चयन

बथुआ की खेती के लिए हल्की, उर्वरक और जल निकासी वाली मिट्टी सर्वोत्तम होती है। इसकी वृद्धि के लिए मिट्टी का pH 6-7 के बीच होना चाहिए। यह पौधा विभिन्न प्रकार की मिट्टी में उग सकता है, लेकिन बलुई या चिकनी मिट्टी में इसकी पैदावार अधिक होती है।

बथुआ की बीज बोने की विधि

बीज की तैयारीः बथुआ के बीज छोटे और हल्के होते हैं, जिन्हें बोने से पहले अच्छे से छान लेना चाहिए ताकि खराब बीज अलग हो जाएं।सबसे पहले खेत को अच्छे से जुताई करके समतल करें। फिर मिट्टी को बारीक करके उसकी सतह को थोड़ा दबा लें। खेत में उचित अंतराल पर नालियाँ बनाकर सिंचाई की व्यवस्था करें।बीजों को खेत में बिखेरकर हल्की सी मिट्टी से ढक दें। इन बीजों को एक-दूसरे से १०-१२ सेंटीमीटर की दूरी पर बोना चाहिए। बोने के बाद खेत में हल्की सिंचाई करें। बथुआ को अधिक पानी की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन शुरुआत में पानी देने से बीज जल्दी अंकुरित होते हैं। फिर पानी की आवश्यकता को मौसम के हिसाब से पूरा किया जाता है।

बथुआ की देखभाल

खाद और उर्वरकः बथुआ की खेती में जैविक खाद जैसे गोबर की खाद का प्रयोग लाभकारी होता है। रासायनिक उर्वरक जैसे नाइट्रोजन,

फास्फोरस और पोटाश का सीमित मात्रा में प्रयोग किया जा सकता है। बथुआ के पौधों को अधिक देखभाल की आवश्यकता नहीं होती, लेकिन खरपतवार को नियंत्रित करना जरूरी है। विशेषकर जब पौधे छोटे होते हैं, तो खरपतवार के साथ प्रतिस्पर्धा करने के लिए निराई की आवश्यकता होती है। यह खरपतवारों को हटाकर बथुआ को पर्याप्त पोषक तत्व प्राप्त करने में मदद करता है। बथुआ के पौधों के बीच में खरपतवार को दूर करने के लिए निराई-गुड़ाई की आवश्यकता होती है। यह पौधा किसी भी प्रकार के खरपतवार के साथ आसानी से प्रतिस्पर्धा करता है, लेकिन कुछ मात्रा में निराई की आवश्यकता होती

बथुआ को साग के रूप में पकाकर खाया जाता है, जो सर्दियों में खासतौर पर लोकप्रिय होता है। इसे मसालेदार साग या सूप में डालकर सेवन किया जाता है। बथुआ को पीसकर पेस्ट बना लिया जाता है और उसे त्वचा पर लगाने से त्वचा के विकार दूर हो सकते हैं। बथुआ की पत्तियों से चटनी भी बनाई जाती है, जो खाने का स्वाद बढ़ाती है। बथुआ को अधिक सेवन से बचना चाहिए, क्योंकि इसमें ओक्सलेट्स की मात्रा अधिक हो सकती है, जो गुर्दे पर असर डाल सकते हैं। इसलिए इसे संतुलित मात्रा में ही सेवन करना चाहिए।

लेखकों से निवेदन

मौलिक तथा अप्रकाशित-अप्रसारित रचनाएँ ही भेजें। रचना फुलस्केप कागज पर साफ लिखी हुई अथवा शुद्ध टंकित की हुई मूल प्रति भेजें। ज्यादा लंबी रचना न भेजें। सामाजिक, राजनीतिक, शैक्षणिक, साहित्यक, स्वास्थ्य, बैंक व व्यवसायिक से संबंधित रचनाएँ आप भेज सकते हैं। प्रत्येक रचना पर शीर्षक, लेखक का नाम, पता एवं दूरभाष संख्या अवश्य लिखें, साथ ही लेखक परिचय एवं फोटो भी भेजें।

आप अपनी रचना ई-मेल द्वारा भेज सकते हैं। रचना यदि डाक द्वारा भेज रहे हैं तो डाक टिकट लगा लिफाफा साथ होने पर ही अस्वीकृत रचनाएँ वापस भेजी जा सकती हैं। अतः रचना की एक प्रति अपने पास अवश्य रखें। स्वीकृत व प्रकाशित रचना का ही उचित भुगतान किया जायेगा।

किसी विशेष अवसर पर आधारित आलेख को कृपया उस अवसर से कम-से-कम एक या दो माह पूर्व भेजें, ताकि समय रहते उसे प्रकाशन-योजना में शामिल किया जा सके। रचना भेजने के बाद कृपया दूरभाष द्वारा जानकारी न लें। रचनाओं का प्रकाशन योजना एवं व्यवस्था के अनुसार यथा समय होगा।

Add: A-102, A-1 Wing, Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra.
Phone: 9082391833 , 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

www.swarnimumbai.com

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका

स्वर्णिम मुंबई

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

ADVERTISEMENT TARRIF

No.	Page	Colour	Rate
1.	Last Cover full page	Colour	30,000/-
2.	Back inside full page	Colour	25,000/-
3.	Inside full page	Colour	20,000/-
4.	Inside Half page	Colour	15,000/-
5.	Inside Quater page	Colour	07,000/-
6.	Complimenty Adv.	Colour	03,000/-
7.	Bottam Patti	Colour	2500/-

6 Months Adv. 20% Discount
1 Year Adv. 50% Discount

Mechanical Data: **Size of page:** **290mm x 230mm**

PLEASE SEND YOUR RELEASE ORDER ALONG WITH ART WORK IN PDF & CDR FORMAT

Add: A-102, A-1 Wing ,Tirupati Ashish CHS. , Near Shahad Station Kalyan (W) , Dist: Thane, PIN: 421103, Maharashtra. Phone: 9082391833, 9820820147
E-mail: swarnim_mumbai@yahoo.in,
Website:WWW.swarnimumbai.com

RNI NO. : MAHHIN-2014/55532

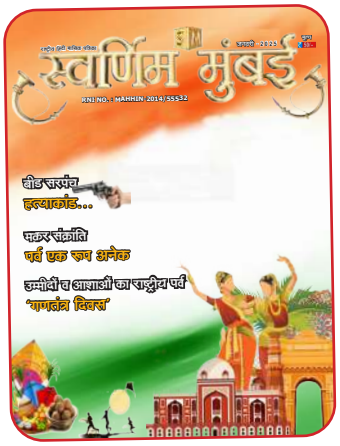

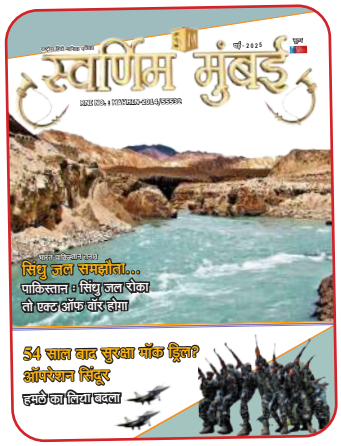

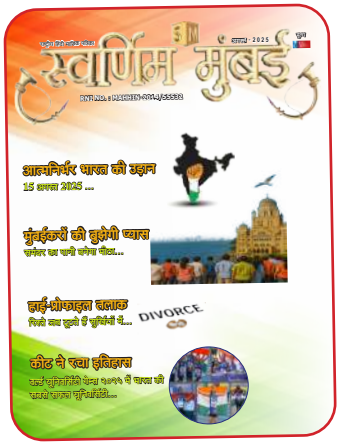

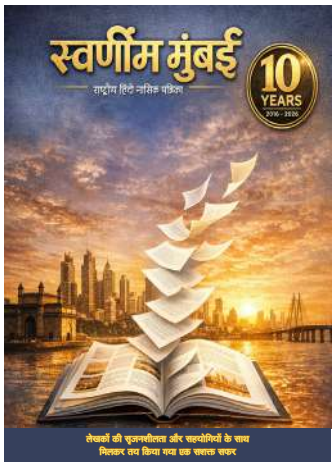

राष्ट्रीय हिंदी मासिक पत्रिका 'स्वर्णिम मुंबई' आज अपने दस वर्ष पूरे कर ११वें वर्ष में प्रवेश कर रही है। यह केवल समय का पड़ाव नहीं, बल्कि पाठकों के भरोसे, लेखकों की सृजनशीलता और सहयोगियों के साथ मिलकर तय किया गया एक सशक्त सफर है। इन दस वर्षों में स्वर्णिम मुंबई ने न सिर्फ खबरें और कहानियाँ दीं, बल्कि समाज के उन पहलुओं को भी सामने लाया, जिन्हें अक्सर नजरअंदाज कर दिया जाता है। इस यात्रा में हर पाठक, हर लेखक, हर विज्ञापनदाता और हर शुभचिंतक हमारे लिए सिर्फ सहयोगी नहीं, बल्कि इस परिवार का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। हम आप सभी के प्रति दिल से आभार व्यक्त करते हैं–क्योंकि आपकी वजह से ही यह सफर संभव हो पाया है। अब ११वें वर्ष में प्रवेश करते हुए हमारा संकल्प और मजबूत है– सच्ची, सार्थक और समाज से जुड़ी पत्रकारिता को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का।